टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन

पराग

बच्चों का मधुर मासिक

सितंबर १९६६

आभार : डा. देशदीपक

www.kissekahani.com

७५ पैसे

पैरीज़—उच्च कोटि की मिठाइयाँ बनाने वाले

क्या आपने चखा है ?

हेल्थ फ्रूट्स • जिंजर कैप्स • लेमन बार्ली

कोकोनट्स • मिल्क टॉफी

पैरीज़ कानफेक्शनरी लिमिटेड, मद्रास

पराग

सितंबर १९६६

१०३ वां अंक

फोटो : ओमप्रसाद

www.kissekahani.com

अनुक्रमणिका

मुखपृष्ठका चित्र—

बालिका कुमाऊंकी : यू. डी. खोसला १

मजेदार कहानियां :—

प्रश्न-पत्र : विद्वान के. नारायणन् १२
भगेलूकी वापसी : अवध अनुपम १६
लोहेसे सोना : रविंद्र प्रकाश १९
काला-कलूटा बादल : गिरिजा सुधा २८
लंबी नाक : अली लतीफ ३६
चालोंने छुट्टी मनाई : देवेश ठाकुर ४४

चटपटी कविताएं—

मिस्टर मच्छर : चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक' ५६
खड़े हो गए कान प्रेमचंद्र गोस्वामी ५६
ताजी खबरें
गुणी राजा : सरस्वतीकुमार 'दीपक' ५७
हाय रे दैया : विष्णुकांत पांडेय ५७

हास्य-एकांकी—

भूख हड़ताल : विनोदकुमार भारद्वाज ८

मनोहर कार्टून कथाएं—

छोटू और लंबू : शेहाव २४
नहलेपर दहला : पाण्डे ३२

धारावाही उपन्यास—

सरकस : माधवन नायर 'मालि' २०

अन्य रोचक सामग्री—

राम-झरोखा-२ : सुशीला रजनी पटेल ४
चीनीकी कहानी : ओमप्रकाश मित्तल १५
सोवियत भूमिसे पिताके पत्र-३ : जगदीशचंद्र जैन २६
रजवाड़ोंके डाक-टिकट : गजराज जैन ४०
संसारकी सबसे बड़ी घड़ी : मनोरमा दीवान ४२
जगमगाते वाली मछलियां : श्रीकृष्ण ४९

स्थायी स्तंभ—

कुछ अटपटे कुछ चटपटे : संपादक ६
लान टेनिसकी कहानी-४ : हरिमोहन ३५
बच्चोंकी नई पुस्तकें : लक्ष्मीचंद्र गुप्त ५१
खिलौनोंका डिब्बा : अरुणकुमार ५२
रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५३ : 'पराग' कला विभाग ५९

वार्षिक शुल्क : स्थानीय रु. ५·४०, डाकसे रु. ५·६०

दृश्य निर्माण :
सुशीला रजनी पटेल

छाया :
'पराग' कला विभाग

राम, लक्ष्मण और सीता केवटकी नावसे सरयू नदी पार करते हुए

राम-झरोखा

बच्चो, पिछले अंकमें तुम पढ़ चुके हो कि किस प्रकार मंथरा द्वारा उकसाए जानेपर कैकेयीने राजा दशरथसे दो वरदान प्राप्त कर रामको राजगद्दी नहीं मिलने दी। फलस्वरूप पिताकी आज्ञा शिरोधार्यकर रामको सीता और लक्ष्मणके साथ वन जाना पड़ा। अयोध्या निवासी इससे बड़े दुखी हुए और उन्होंने भी रामके साथ वन जानेका निश्चय किया। रामने बड़ी मुश्किलसे उन्हें समझा-बुझाकर लौटाया। सरयू नदीके तटपर पहुंचकर रामने केवटसे नाव द्वारा नदी पार करानेको कहा। उसने उनके चरणोंको धोए बिना उन्हें नावपर चढ़ानेसे इनकार कर दिया। रामने केवटकी भक्ति-भावनाको समझा और मुस्करा कर अनुमति दे दी। (पहले चित्रमें केवट राम, सीता और लक्ष्मणको अपनी नावमें बिठाकर सरयू पार करा रहा है।)

सरयू पार करके श्री राम सीता और लक्ष्मण सहित वनोंमें इधर-उधर विचरण करते हुए चित्रकूट पहुंचे। यहींपर कुछ दिनों बाद भरत उन्हें वापस अयोध्या लौटा ले जानेके लिए मनाने आए। किंतु रामने उन्हें केवल अपनी खड़ाऊं देकर वापस भेज दिया। इसके पश्चात् राम अनेक स्थानोंपर घूमते हुए पंचवटी पहुंचे और वहीं कुटी बनाकर रहने लगे। एक दिन लंकाके राजा रावणकी बहन शूर्पणखा वहां आई। रामने उसे लक्ष्मणके पास भेज दिया, जिन्होंने उसके नाक-कान काट लिए। रावणने इसका बदला लेनेके लिए सीताको हर लानेकी एक योजना बनाई, जिसके लिए उसने मारीचको सोनेके हिरनका रूप धारण करवाकर पंचवटी भेजा।

सीताने सोनेके हिरनको देखकर रामसे उसे मारकर लानेको कहा (चित्रमें सीता रामको सोनेका हिरन दिखा रही हैं)। इससे आगेकी सचित्र कथा तुम्हें अगले अंकमें पढ़नेको मिलेगी।

सोनेका हिरन पंचवटीके पाससे गुजरता हुआ

★ आशुतोष विरमानी, द्वारा श्री प्रेमदेव विरमानी, १०।९।१२, ताशकंद रोड, रतलाम (म. प्र.):

मम्मीकी नजरमें मैं 'गधा', पापाकी नजरमें 'सूअर', दोस्तोंकी नजरमें 'हाथी' और दुश्मनों की नजरमें 'मच्छर'—आपकी नजरमें मैं क्या हो सकता हूं?

हिप्नोटिस्ट!

रविन्द्रसिंह चतुर्वेदी, खण्डवा :

स्त्रीको अर्द्धांगिनी क्यों कहते हैं, जबकि उसके पूरे अंग होते हैं?

पतिके साथ एक-बटा-दोकी स्थितिके कारण!

कु. अरुणा गुप्ता, नवाबरामपुर :

खयाली पुलाव किसे कहते हैं और यह कहां पर पकता है?

यह दुनियाका सबसे स्वादिष्ट व्यंजन है और भारत सरकारके खाद्य-मंत्रालयमें पकता है!

सुरेन्द्रकुमार अग्रवाल, कटनी :

मेरे पिताजी मुझे हमेशा उल्लू कहते हैं, फिर भी लक्ष्मी मुझसे दूर क्यों भागती हैं?

अपने पिताजीसे कहो तुम्हें हवाई जहाज बनाएं, आज कल लक्ष्मीजी उल्लूपर सफर नहीं करतीं!

अजीबकुमार वर्मा, बम्बई–१२ :

चाट खाने और चांटा खानेमें क्या अंतर है भला?

चाट खानेके बाद जेबमें पैसे न निकलें, तो दूसरी चीज मुफ्त!

कृष्णकुमार सोनी, जबलपुर :

आकाश बिना खंभोंके सहारे कैसे खड़ा है?

हो सकता है उसके मास्टरजीने सबक याद न करने पर दोनों कान पकड़ कर उठा रखा हो!

प्रदीपकुमार गुप्ता, पिपलानी (भोपाल) :

धरतीको निरंतर जोतते रहनेपर अंतमें क्या निकलेगा?

भारतसे अमरीका पहुंचनेका 'शार्ट कट'!

नन्दकुमार राजे, भोपाल :

पिटाई होनेपर दिनमें तारे नजर आते हैं, तो फिर रातमें क्या नजर आएगा?

पिटनेका प्रबंध दिनमें ही करना चाहिए, रातको अंधेरेके सिवा कुछ नजर आने वाला नहीं!

सुभाषचंद्र सक्सेना, लश्कर :

मेरा खयाल है कि आप अटपटे प्रश्न भेजने वालोंके नामके साथ साथ यह भी दे दिया करें कि वह किस मुहल्लेमें रहता है, तो बहुत ही अच्छा होगा। आपका इस बारेमें क्या खयाल है?

अगर गलतफहमीकी वजहसे कुम्हार कुछ मुहल्लोंका चक्कर लगाने लगें, तो क्या होगा?

सुभाषचंद्र गुप्ता, अजमेर :

कहा जाता है कि सोते मनुष्यको नहीं जगाना चाहिए, किंतु महापुरुषोंने तो सदैव ऐसा ही किया है—क्यों?

महापुरुष उपकारके बदले मार खानेसे नहीं डरते, इसी लिए!

सतीशचंद्र जोशी, इलाहाबाद–२ :

अगर छात्र परीक्षाके दिनोंमें 'पराग' पढ़ें, तो उनका परीक्षा-फल क्या रहेगा?

जो दिमागका आपरेशन करने वाले चाकूसे नाकपर बैठी मक्खीको कत्ल करनेसे रहता है!

शम्भूप्रसाद कचेर, सतना :

कहते हैं पहले आदमियोंकी पूंछ होती थी, अब क्यों नहीं होती?

विलयकी प्रक्रियासे गुजरनेके कारण—आजकल मूंछें भी उसी प्रक्रियासे गुजर रही हैं!

तपनकुमार चक्रवर्ती, मुजफ्फरपुर :

'डींग' ऐसी कौनसी गाड़ी है कि लोग कहते हैं—'डींग मत हांको?'

इस गाड़ीमें मूक बैलोंके स्थानपर ख्याली मेंढक जोते जाते हैं—टर्र टर्र बोलने वाले!

सुषमारानी जैन, मेरठ सदर :

बिल्लीकी मूंछों और मनुष्यकी मूंछोंमें क्या अंतर है?

मनुष्य अपनी मूंछें पैनाता है, बिल्ली नहीं!

योगेशचन्द्र शर्मा, घुसुड़ी (हावड़ा) :

कहते हैं गरीबी झगड़ेकी जड़ है और यह भी कहते हैं कि गरीब ही सुखी है। कौनसी बात मानें?

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा न भेजो। इस स्तंभमें पहेलियोंके उत्तर नहीं दिए जाएंगे। पता याद कर लो : संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)' पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१

दोनों—झगड़ा करो और सुखी रहो!

कु. मधुला गुप्ता, अजमेर :

एक तरफ तो कहा गया है 'आप काज महाकाज' और दूसरी तरफ कहते हैं 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता'—आप ही बताइए किस बातको मानें?

दोनों—भाड़ फोड़नेकी कोई जरूर नहीं, भाड़में भुनो और अपना क्रिया-कर्म दूसरोंके ऊपर मत छोड़ो!

प्रभातचंद साव, कलकत्ता–२६ :

अगर हम भी सरकासे 'बालकिस्तान' की मांग करें, तो कैसा रहेगा?

ठहरो, पहले बड़े बच्चोंको निपट लेने दो!

प्रकाशचंद्र, नई दिल्ली–३ :

यदि दुनियाके सब लोग पागल हो जाएं, तो दुनियाकी क्या हालत होगी?

सावधान! पागलपन तो इसकी कल्पनासे ही चालू हो जाता है!

बसंतकुमार गुप्ता, बम्हनीबंजर, (मंडरला) :

अंडेका दरवाजा किस तरफ होता है?

बाहरसे पूछ रहे हो कि भीतरसे?!

नयनचंद जैन, आरा :

जो लोग चुगली खाते हैं वे पीते क्या हैं?

"चुगलियां खाते हैं वो, पीते हैं फिर खूने जिगर,
कभी हलक मुंहमें है, और कभी हलकमें मुंह!"

ऋषिकुमार भट्टाचार्य, बरेली :

सत्य खोजने वाले योगी तथा सत्य खोजने वाले वैज्ञानिकमें क्या अंतर है?

योगीकी प्रयोगशाला केवल उसका शरीर होता है, जबकि वैज्ञानिककी प्रयोगशाला सारी दुनिया होती है!

दीपककुमार, अजमेर :

जैसे रातके बाद दिन आता है, वैसे ही बुढ़ापेके बाद जवानी क्यों नहीं आती?

हमारे खयालमें तो दिन बुढ़ापेमें ही निकलता है—आंखें खुल जाती हैं!

राजेन्द्रकुमार गुप्ता, कलकत्ता–७ :

मुझे अपनी सामाजिक अध्ययन वाली कापीमें मनुष्यके एक पूर्वजका फोटो लगाना है। क्या किसी चीनीका लगा लूं?

मनुष्यताके विचारसे तो चीनी अभी पैदा भी नहीं हुए!

जे. के. राई, बिराटनगर (नेपाल) :

सारी जनता सिनेमा देखना छोड़ दे, तो ऐक्टरोंका क्या होगा?

इस वक्त तो प्रश्न यह खड़ा है कि सारे ऐक्टर ऐक्टिंग करना छोड़ दें, तो जनताका क्या होगा!

आर. सी. सिंघल, इंदौर :

अंग्रेज चले गए किंतु अंग्रेजी छोड़ गए—क्या वे उसे वापस लेने आएंगे?

नहीं—बल्कि जिसे छोड़ गए वह यहांके नौकरशाहोंको ही अंग्रेज बनाए रखेगी!

नवीनकुमार, पटना :

चरणोंकी उपमा भी कमलसे दी जाती है और नयनोंकी भी, तो चरण और नयनमें क्या अंतर है?

कीचड़ चरणोंके ऊपर लगती है और नयनोंके भीतर पैदा होती है—कमल बेचारे की खामखाह मुसीबत है!

मारोती हीराचंद पटेल, नागपुर–१ :

जीना तो सभी जानते हैं, लेकिन जीनेकी कलाको कौन जानता है?

जो आजकलकी महंगाईसे पार पा जाए!

विजयकुमार शर्मा, सिवान, (सारण) :

दर्जीपर कितना भी कड़ा पहरा रखा जाए, कपड़ा चुरा ही लेते हैं—क्यों?

'रेडीमेड' कपड़े खरीदनेकी आदत डालने के लिए!

सत्यनारायण जायसवाल, हरिनगर (चम्पारण) :

दोस्ती करना आसान है, पर दोस्ती निभाना उतना आसान नहीं— क्यों?

क्योंकि दोनों एक-दूसरेके स्वयं-मनोनीत परीक्षक बन जाते हैं!

★ संतोष बा. प्रधान, आसरा कालोनी, चाल नं. १, रूम नं. १, दत्तपाड़ा, बोरीवली, बम्बई–९२ :

आजकल झूठे और लुच्चे लोगों की विजय होती है, फिर भी हम 'सत्यमेव जयते' क्यों कहते हैं?

अगर झूठे और लुच्चे लोग ज्यादा पढ़े-लिखे, चतुर व कुशल होंगे, तो बड़ा और कटु सत्य उन्हींकी ओर होगा—चालाक चोरको पकड़नेके लिए जासूसको उससे भी ज्यादा चालाक होना पड़ता है!

●

बाल-एकांकी प्रतियोगिता में
तृतीय पुरस्कार प्राप्त नाटक

भूख हड़ताल

www.kissekahani.com

पहला दृश्य

(परदा उठनेपर एक कमरेमें संजय, राजू और मीना कुर्सियोंपर बैठे दिखाई देते हैं। तीनों चुप हैं, लेकिन संजय चिंतित दिखाई पड़ रहा है। एकाएक संजय कुर्सीसे उठ खड़ा होता है। राजू और मीना कुछ आश्चर्य-से उसकी ओर देखते हैं लेकिन संजय चुपचाप इधर-उधर चक्कर काटता रहता है।)

संजय (कुर्सीपर बैठते हुए) : आखिर किया भी क्या जा सकता है? सब कुछ तो पिताजीकी मर्जीसे होता है...

राजू : लेकिन उन्होंने तो साफ मना कर दिया है। मांको तो मैंने मना लिया था, पर रुपये तो पिताजीके राजी होनेपर ही मिल सकते हैं।

संजय : अगर पिताजी मान जाएं, तो बात ही क्या है! छज्जूके पिताजी तो फौरन मान गए, उसी समय पंद्रह रुपये भी निकालकर दे दिए।

राजू : हां, तभी तो वह हमारे सामने बड़ी शान मार रहा था। कैसा अकड़कर कह रहा था कि उसके बड़े भाई साहब साथमें ले जानेके लिए उसे अपना कैमरा भी दे देंगे...

मीना (बुजुर्गाना आवाजमें) : तो तुम दोनों उसे देख देख जलते क्यों हो? अगर तुम दोनोंने मेरी तरह एक गुल्लक खरीद ली होती, तो आज पिताजीके सामने हाथ न पसारना पड़ता।

राजू (चौंककर) : गुल्लक?

संजय : अरे, हां, मीना तो गुल्लकमें पैसे जमा करती है। (प्यारसे) क्यों री, मीना, तेरी गुल्लकमें तो काफी रुपये होंगे?

मीना (हंसकर) : रुपये? अजी, भाई साहब, एक रुपयेकी रेजगारी भी नहीं होगी उसमें। अभी मुश्किलसे दो दिन तो बीते हैं अपनी गुड़ियाका ब्याह रचाए...

संजय (मुंह लटकाकर) : गुड़ियाके ब्याहमें तो पानीकी तरह पैसा बहाया। यहां तक कि हरेक बराती-को डटकर मिठाई खिलाई। और दहेज...राम राम राम! इत्ता सारा दहेज उस निगोड़ी सरिताके गुड्डेके पास चला गया।

मीना (गुस्सेमें) : अपनी गुड़ियाके ब्याहका खर्चा चुकानेके लिए तुम्हारे आगे तो झोली पसारी नहीं थी। दो सालसे गुल्लकमें पैसे जमा कर रही थी। अगर गुड़िया-के ब्याहमें खर्च कर भी दिए, तो तुम्हें ताना कसनेकी क्या जरूरत है?

राजू (संजयसे) : इससे तुम बात ही न करो। पहले क्या कभी इसने सहायता की है हमारी, जो आज करेगी।

संजय : और क्या, सहायता तो बहुत दूरकी बात है, सदा मांके सामने हमारी चुगलियां करती रहती है। अब हम आगेसे इसे अपनी कोई बात नहीं बताएंगे।

मीना (कुर्सीसे उठकर) : न बताओ, न बताओ। मुझे क्या लेना है तुम दोनोंकी उल्टी-सीधी बातें सुनकर!

राजू : हां हां, अब तो बड़ी तीखी होकर बोल रही है। अभी कल ही तो हाथ-पांव जोड़ रही थी जामुन-के पेड़वाला किस्सा सुननेके लिए...

मीना : वाह वाह! उस समय तो आप ही बोले जा रहे थे, मुझे क्या लेना-देना था मरे जामुनके पेड़वाले किस्सेसे!

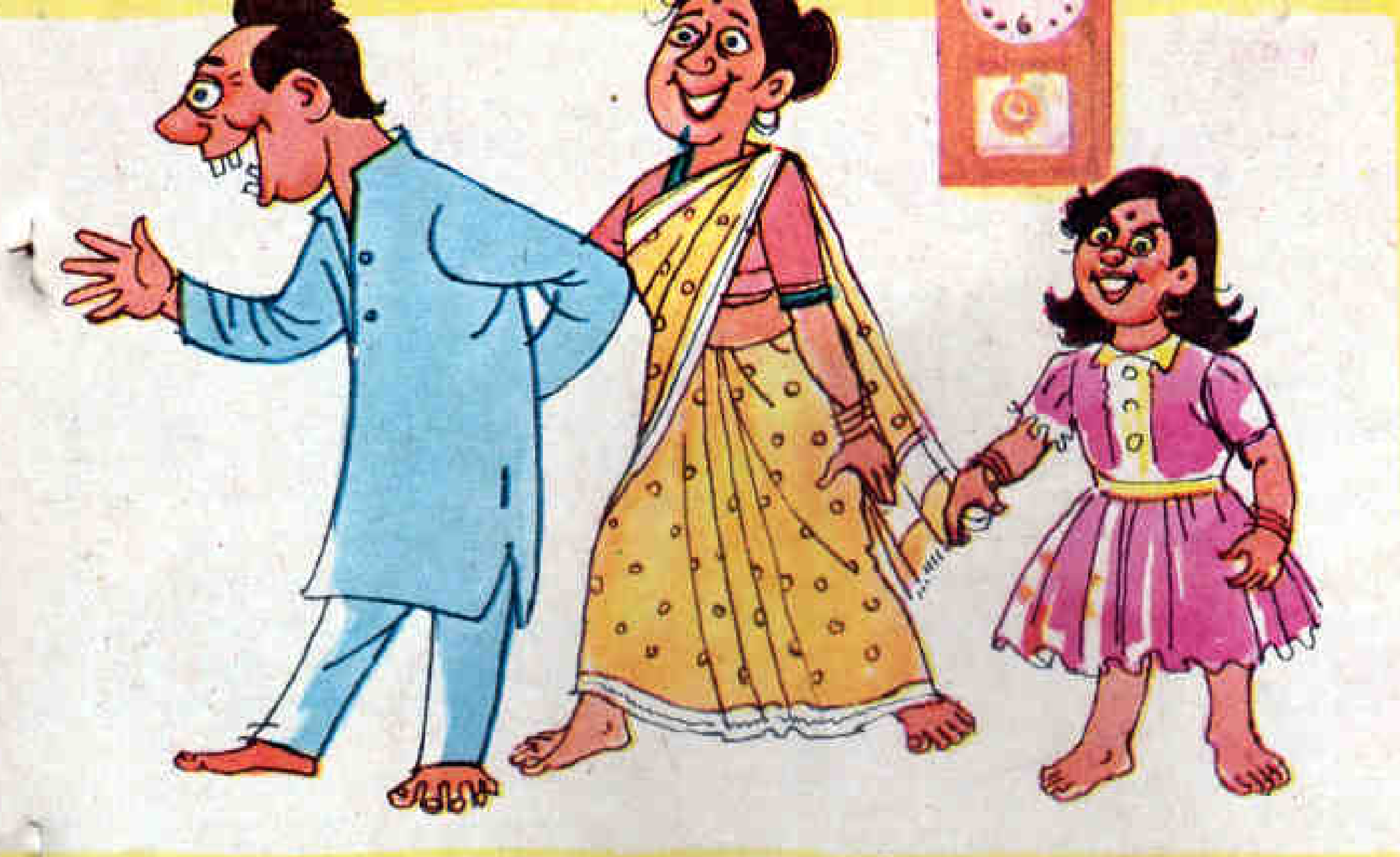

संजय : तो फिर अब क्यों यहां बैठी हमारी बातें सुन रही हो? जाओ, जाकर गुड्डे-गुड़ियाका ब्याह रचाओ ।

मीना : गुड्डे-गुड़ियाका ब्याह तो रचाऊंगी ही, लेकिन तुम दोनोंको पास भी न फटकने दूंगी. . .

राजू : अच्छा, बहनजी, **(हाथ जोड़कर नाटकीय ढंगसे)** मैं आपके आगे हाथ जोड़ता हूं, हमें बख्शिए भी ।

(मीना गुस्सेमें पांव पटकती हुई बाईं ओरके प्रवेश-द्वारसे घरके अंदर चली जाती है ।)

संजय (सोचते हुए) : कल तक मास्टर साहब-के पास रुपयोंको जमा कराना भी तो जरूरी है । बाद-में तो वह रुपये लेंगे भी नहीं ।

राजू : और क्या, दशहरेकी छुट्टियां भी तो होने वाली हैं । **(कुछ रुककर)** सभी लड़के जा रहे हैं । फिर पंद्रह रुपयेकी ही तो बात है । सोचो जरा, पंद्रह रुपयों-में आगराकी सैर!

संजय : मास्टर साहब कह रहे थे कि स्कूलकी ओर-से भी कुछ रुपया मिलेगा ।

(राजू और संजय दोनों ही कुछ देर तक चुप रहते हैं।)

राजू (एकाएक उछलकर) : मैंने सोच लिया! मैंने सोच लिया!

संजय (उत्सुक होकर) : क्या सोच लिया?

राजू : तरीका—रुपये पानेका तरीका!

संजय (झल्लाकर) : ओफ्फोह! कुछ बताओगे भी या यों ही चिल्लाते रहोगे?

राजू : बताने ही तो जा रहा हूं। **(इधर-उधर देखते हुए)** कहीं मीना हमारी बातें न सुन रही हो!

संजय (बाईं ओरके प्रवेश-द्वारकी ओर दृष्टि डालकर) : तुम बताओ तो, मीना मांके पास रसोईघरमें है ।

राजू (पास आकर भेदभरे स्वरमें) : तरीका बड़ा आसान है । बस, मेरी समझमें यही एक तरीका रह गया है पिताजीसे रुपये लेनेका ।

संजय (झुंझला उठता है) : मैं कहता हूं, तुम पहे-

—विनोदकुमार भारद्वाज

लियां क्यों बुझा रहे हो?

राजू : संजय भैया, तुम तो नाराज हो गए! **(धीमे-से)** क्यों न रुपये पानेके लिए हम लोग भूख हड़ताल करें?

संजय (आश्चर्य से) : भूख हड़ताल? लेकिन इससे फायदा क्या होगा?

राजू : भैया, तुम तो इत्ती छोटी-सी बात भी न समझ सके । लोगोंको सरकारसे जब कोई बात मनवानी होती है, तो वह भूख हड़ताल नहीं करते हैं क्या?

संजय : वह तो ठीक है, राजू, लेकिन पिताजी फिर भी न मानेंगे । बेकारमें ही हमें भूखे रहना पड़ेगा ।

राजू : देख लेना, भैया, आखिर पिताजीको हार माननी ही पड़ेगी । और फिर कौन-सा दस-बारह दिन हमें भूखा रहना पड़ेगा? तीन-चार घंटेकी भूख हड़ताल-से ही काम बन जाएगा, बस, तुम्हें अगर एतराज न न हो . . .

संजय : भला मुझे क्या एतराज है! भूख हड़ताल करके भी देखे लेते हैं।

राजू : ठीक है, हम भूख हड़ताल करेंगे। (**जरा जोरसे**) हां, हां, हम भूख हड़ताल करेंगे!

(**बाईं ओरके प्रवेश-द्वारसे बच्चोंकी मां कुसुमका प्रवेश।**)

कुसुम (**चकित स्वरमें**) : अरे अरे, यह क्या कह रहे हो?

राजू (**खड़ा हो जाता है**) : मां, हम दोनों भूख हड़ताल करने जा रहे हैं।

कुसुम : लेकिन, आखिर माजरा क्या है?

राजू : माजरा? वाह, मां, अपने ऊपर हो रहे अत्याचारको दूर करनेके लिए भूख हड़ताल करना जरूरी है। हमें स्कूलकी ओरसे 'टूर' में जानेके लिए पंद्रह पंद्रह रुपये मिलने ही चाहिएं।

संजय : हां, मां, नहीं तो हम अपनी भूख हड़ताल जारी रखेंगे। तब आपको हमारी मांगको पूरा करना ही पड़ेगा।

कुसुम : मुझसे क्या कह रहे हो, अपने पिताजीसे कहना। वही तुम दोनोंकी मांग पूरी करेंगे।

राजू : इसी लिए तो हम अपनी भूख हड़ताल शुरू करने जा रहे हैं। जब तक पिताजी हमारी मांग नहीं पूरी करेंगे, तब तक यह भूख हड़ताल बंद नहीं होगी।

कुसुम : तब तुम दोनों अपना अड्डा घरके बाहर जमा लो, ताकि मुहल्ला भर भूख हड़तालके बारेमें जान जाए . . .

राजू : नहीं, हमारा अड्डा यहीं जमेगा . . . (**जरा जोरसे**) इसी कमरेमें जमेगा।

संजय : ठीक है, ठीक है . . .

(**धीमेसे परदा गिरता है।**)

दूसरा दृश्य

(**परदा उठनेपर उसी कमरेका दृश्य दिखाई देता है। कमरेकी लाइट अब जल रही है। संजय और राजू कुर्सियोंपर चुपचाप बैठे हैं। पीछे दीवारपर एक दफ्ती लटकी हुई है, जिसपर स्याहीसे मोटे मोटे अक्षरोंमें लिखा है—'भूख हड़ताल'। दीवार घड़ी रातके आठ बजानेको है।**)

राजू (**अंगड़ाई लेकर**) : जाने क्या बात है, पिताजी आफिससे अभी तक नहीं लौटे। रोज तो सात ही बजे . . .

संजय : अब घबड़ाते क्यों हो, आते ही होंगे।

राजू (**बाईं ओरके प्रवेश-द्वारकी ओर देखकर**) : रसोईघरमेंसे खुशबू-सी आ रही है। शायद मां पकौड़े तल रही है।

संजय : पकौड़े? (**होंठोंपर जीभ फेरता है**) मेरे खयालसे आलूके पकौड़े हैं!

राजू (**हाथ मलते हुए**) : देख लेना, भैया, अकेली मीना ही सारेके सारे पकौड़े चट कर जाएगी। हम दोनोंके लिए एक भी न बचने पाएगा!

संजय : और क्या, आज तो मीनाकी पांचों उंगलियां घीमें हैं। (**कुछ रुककर**) मैंने तो तुम्हें पहले ही कह दिया था कि भूख हड़ताल करनेसे कोई फायदा न होगा।

राजू : लेकिन, भैया, मुझे क्या पता था कि मांको पकौड़े भी आज ही तलने हैं।

संजय (**कुछ सोचकर**) : अभी भी हड़ताल बंद की जा सकती है, राजू!

राजू : भैया, जब ओखलीमें सिर दे ही दिया है, तो फिर मूसलोंकी क्या परवाह! जब तक पिताजी हमारी मांग पूरी करनेको तैयार नहीं होंगे, तब तक हड़ताल बंद नहीं होगी। (**जोशमें आकर**) हरगिज नहीं! हमें 'टूर' में जानेके लिए रुपये मिलने ही चाहिएं!

(**बाईं ओरके प्रवेश-द्वारसे बच्चोंके पिता रामनाथ आते हैं, मिठाईके दो-तीन डिब्बे उनके हाथमें हैं।**)

रामनाथ (**'भूख हड़ताल' की दफ्ती पढ़कर**) : भूख हड़ताल! . . . (**संजय और राजूकी ओर देखकर**) भई, यह क्या बात है?

राजू : पिताजी, हम दोनोंने भूख हड़ताल की है।

रामनाथ : यह तो मैंने भी दफ्ती पढ़कर जान लिया है। लेकिन इस भूख हड़तालके माने?

संजय : माने बहुत साफ हैं, पिताजी, अपने ऊपर हो रहे अत्याचारको दूर करनेके लिए भूख हड़ताल करना ही एकमात्र उपाय रह गया है।

रामनाथ (**आश्चर्यसे**) : अत्याचार? कौनसा अत्याचार? कैसा अत्याचार?

राजू : पिताजी, स्कूलके 'टूर' में जानेके लिए हम दोनोंको रुपये न देना, अत्याचार नहीं तो और क्या है?

संजय (**हां में हां मिलाते हुए**) : हां, पिताजी, यह सरासर अन्याय और अत्याचार है!

रामनाथ (**हंसते हुए**) : तो यह बात है . . . ठीक है, भाई, भूख हड़ताल जारी रखो।

(**रामनाथ उसी तरह हंसते हुए बाईं ओरके प्रवेश-द्वारसे घरके अंदर चले जाते हैं।**)

संजय (**राजूकी ओर आश्चर्यसे देखते हुए**) : हैरतकी बात है, पिताजीपर तो हमारी भूख हड़तालका कोई प्रभाव न पड़ा!

राजू : हां, भैया, मैं तो सोच रहा था कि पिताजी घबड़ा जाएंगे बार बार भूख हड़ताल बंद करनेके लिए मिन्नतें करेंगे।

संजय : लेकिन हुआ ठीक उल्टा ही। उन्होंने हड़ताल जारी रखनेके लिए कह दिया है।

राजू : खैर, भैया, अब नहीं तो कुछ देर बाद खुशामद करेंगे। भला हम दोनोंको भूखा देखकर मां और पिताजीको नींद कैसे आ सकती है?

संजय (**धीमेसे**) : मान लो, पिताजीने हड़ताल बंद करनेके लिए कहा ही नहीं, तब क्या होगा? मेरेसे तो भूखा रहा नहीं जाएगा।

राजू : भूखा तो, भैया, मुझसे भी नहीं रहा जाएगा। पिताजीके हाथोंमें डिब्बे देखकर तो मेरा और बुरा हाल हो गया है!

संजय : यही हाल मेरा भी है। मेरा खयाल है,

लेखक-परिचय

नाम : विनोदकुमार भारद्वाज; **जन्म-तिथि :** ८ अक्तूबर १९४८।

सन् ६३ में कुछ रचनाएं आकाशवाणी लखनऊसे प्रसारित हुईं। उसी वर्ष कुछ फुटकर छपा भी। तबसे आज तक लगभग १५० फुटकर रचनाएं विभिन्न पत्रिकाओंमें छप चुकी हैं। तीन बाल-उपन्यास धारावाही रूपमें प्रकाशित हो चुके हैं। सम्प्रति बी.ए. में अध्ययनके साथ साथ हास्य-व्यंग्य की पत्रिका 'नोक-झोंक' (आगरा) का सह-संपादन एवं 'उन्मेष' (लखनऊ) का संपादन। स्थायी पता : १०।ए, सिंगार नगर, लखनऊ (उ. प्र.)।

मिठाईके डिब्बे 'बंगाल स्वीट-हाउस' से लाए हैं पिताजी!

राजू (दुखी स्वरमें) : हाय री किस्मत! मांको पकौड़े आज ही तलने थे, पिताजीको मिठाई भी आज ही लानी थी।

संजय : फिर क्यों न हड़ताल बंद कर दी जाए?

राजू (धीमेसे) : भैया, शायद मीना आ रही है . . . कहीं उसने सुन लिया, तो अच्छी भद्द उड़ेगी!

(दाईं ओरके प्रवेश-द्वारसे मीनाका प्रवेश। उसके हाथोंमें रसगुल्लोंकी एक तश्तरी है।)

मीना (तश्तरीमेंसे रसगुल्ला उठाकर मुंहमें डालते हुए) : अहा! कितना मीठा, कितना रसदार रसगुल्ला है! क्यों, राजू भैया, रसगुल्ला नहीं खाओगे?

राजू (दूसरी ओर मुंह करके) : देख, मीना, अगर मुझे गुस्सा आ गया, तो तश्तरीको छीनकर फर्शपर पटक दूंगा।

मीना (खिलखिलाकर) : वाह! एक तो रसगुल्ला खानेको दे रही हूं और ऊपरसे यह रोब!

संजय : हम सब जानते हैं, मीना, और कोई समय होता, तो बताते तुझे . . .

मीना (दबी मुस्कानसे) : अरे, भैया, पिताजी ढेर सारी बंगाली मिठाई लाए हैं बाजारसे। तुम दोनों तो खाओगे नहीं, बस, सारी मिठाई मेरे हिस्सेमें आ जाएगी।

राजू (खीझकर) : हां हां, एक तू ही तो पेटू रह गई है, जो इत्ती ढेर सारी मिठाई अकेली हड़प लेगी। देखूंगा कैसे तू . . .

मीना (रसगुल्ला निगलकर) : और नहीं तो क्या . . . तुम दोनोंने तो भूख हड़ताल की हुई है। मिठाई पड़े पड़े खराब नहीं होगी क्या?

रामनाथ (नेपथ्य से) : मीना! ओ मीना!

मीना (ऊंचे स्वरमें) : आ रही हूं, पिताजी!

(मीना रसगुल्लोंकी तश्तरी मेजपर रखकर दाईं ओरके प्रवेश-द्वारसे अंदर चली जाती है।)

संजय : भई, अब मुझसे तो रहा नहीं जाता! अगर यह भूख हड़ताल यों ही जारी रही, तो इस पेटू मीनाके पेटसे मिठाईका एक भी टुकड़ा न बचने पाएगा!

राजू : बात तो ठीक है तुम्हारी, भैया, भूख हड़ताल-से कोई नतीजा नहीं निकल पाएगा! **(रसगुल्लोंकी तश्तरीकी ओर नजर गड़ाकर)** मौका अच्छा है, क्यों न झटपट एक एक रसगुल्ला उड़ा लिया जाए?

संजय (इधर-उधर देखते हुए) : लेकिन मीना-को पता चल जाएगा . . .सोच लो. . .

राजू : तो क्या हुआ? उसीका हिस्सा तो है नहीं . . .

संजय (गहरी सांस लेकर) : फिर हमारी भूख हड़तालका क्या होगा?

राजू : मारो गोली भूख हड़ताल को, भैया! **(व्यग्र होकर)** यहां पेटमें चूहोंने ऊधम मचा रखा है। अब मुझसे तो रहा नहीं जाता! . . .

(राजू तश्तरीमेंसे एक रसगुल्ला उठाकर मुखमें डाल लेता है। संजय भी कुछ झिझकते हुए एक रसगुल्ला उठा लेता है। तभी बाएं प्रवेश-द्वारसे रामनाथ प्रवेश करते हैं। उनके पीछे पीछे कुसुम और मीना भी हैं।)

रामनाथ (ठहाका मारकर) : क्यों, यह भूख हड़-ताल हो रही है!

राजू (खिसियाने स्वरमें) : पिताजी, वह तो हम मजाक कर रहे थे . . . भला हमें क्या पड़ी है, जो भूख हड़ताल करें?

संजय : और क्या, पिताजी, हम तो वैसे ही. . .

कुसुम (मुस्कराकर) : लेकिन तुम दोनोंकी मांगों-का क्या बना? उसे पूरी नहीं कराओगे?

(संजय और राजू चुप रहते हैं।)

रामनाथ : बहुत देर भूखे रह लिये बेचारे! अब इनकी मांग भी पूरी हो ही जानी चाहिए। **(संजय और राजूसे)** क्यों, अब तो खुश हो?

संजय और राजू (एक साथ) : सच, पिताजी? हमें रुपये मिल जाएंगे?

रामनाथ : हां, भई, सोलहों आने सच . . .!

राजू (प्रसन्न स्वरमें) : आपने पहले क्यों नहीं मान लिया, पिताजी?

रामनाथ (हंसकर) : तब भला तुम दोनोंकी भूख हड़ताल देखनेको कैसे मिलती? क्यों?

(संजय और राजू एक दूसरेकी ओर देखकर मुस्कराते हैं, धीमे धीमे परदा गिरता है।) ●

कहानी

प्रश्न-पत्र

www.kissekahani.com

"श्याम, सुनो, तुम्हारे पिताजी क्या कह रहे हैं। हम लोग मंदिरमें उत्सव देखने जा रहे हैं; तुम भी चलो न!"

"नहीं, मां, आप लोग जाइए। मुझे बहुत पढ़ना है। सांस लेनेकी भी फुरसत नहीं।"

"अरे, आखिर लगातार कब तक पढ़ते रहोगे? तुम तो ढाई बजे पढ़ने बैठे थे और अब छह बज चुके हैं। कुछ आराम तो कर लो। जरा बाहर हवामें घूमकर आओ, तो दिमाग तरोताजा हो जाएगा," पिता कमलापति अय्यरने स्नेहपूर्वक श्यामसे कहा।

"नहीं नहीं, कल कक्षामें 'टेस्ट' है और मुझे अव्वल आना है। अभी बहुत पढ़ना बाकी है," श्याम अपनी बातपर अड़ा रहा।

कमलापति अय्यरके चेहरेपर अभिमानकी झलक दिखाई दी। "जैसी तुम्हारी इच्छा," कहते हुए वह पत्नीके साथ मंदिरकी ओर चल पड़े।

श्याम दसवीं कक्षामें पढ़ रहा था। उसपर मां बापको ही नहीं, बल्कि सारे स्कूलको गर्व था। लड़का क्या था, हीरा था। क्लासमें हमेशा अव्वल आता था। यही नहीं, पिछले वर्षकी सालाना परीक्षामें वह शहर भरके स्कूलोंमें सर्व-

प्रथम आया था। निबंध-प्रतियोगिताओं, वाक्-प्रतियोगिताओं और अंत्याक्षरियोंमें उसे कई पुरस्कार प्राप्त हुए थे। वह हमेशा पढ़नेमें लगा रहता था। एक मिनिट भी व्यर्थ नहीं खोता था। गणितमें तो उसकी विशेष रुचि थी। जो भी सवाल दिए जाते, तुरंत हल कर लेता था। गणितमें उसे सदा शत-प्रतिशत अंक प्राप्त होते थे। जबकि अन्य लड़कोंको पढ़नेके लिए बार बार टोकना पड़ता था, श्यामको अधिक पढ़नेसे मना करना पड़ता था। कमलापति अय्यर उसकी प्रगति देखकर फूले न समाते। उन्हें पूरी आशा थी कि इस साल श्याम पूरे राज्यमें प्रथम आएगा।

अर्ध-वार्षिक परीक्षा खत्म हो चुकी थी। जब श्यामने प्रगति कार्ड लाकर दिया, तो कमलापतिने बड़े उत्साहसे कार्डपर नजर डाली। लेकिन यह क्या? गणितमें केवल अस्सी प्रतिशत! कमलापतिका उत्साह ठंडा पड़ गया। अन्य विषयोंमें भी अंक घट गए थे।

उन्होंने पूछा, "यह क्या, श्याम? हमेशा तो तुम अधिकतम अंक पाया करते थे, इस बार

विद्वान् के. नारायणन्

केवल इतने?"

श्यामने जवाब दिया, "न जाने क्यों इस बार इतने कम अंक मिले हैं; मैंने तो पढ़नेमें कोई कसर नहीं रखी।"

पर उसकी वाणीमें पहले जैसी गंभीरता नहीं थी। कमलापतिका माथा ठनका।

दो-तीन दिन बीत गए। एक दिन रातके ग्यारह बजे थे। कमलापति एक संगीत-समारोहसे घर लौटे। श्याम अपने कमरेमें कुर्सीपर बैठा हुआ कुछ पढ़ रहा था। कमलापतिको बेटेके प्रति बड़ी सहानुभूति हुई। बेचारा कितना परिश्रम उठाकर रतजगा करके पढ़ता है! दुर्भाग्यवश इस बार अंक घट गए। कोई परवाह नहीं, अगली परीक्षामें ज्यादा अंक पा जाएगा।

ऐसा सोचते हुए वह श्यामके कमरेकी खिड़कीके पास आए। श्याम खिड़कीकी ओर पीठ किए हुए कुर्सीपर बैठा पढ़ रहा था। कमलापतिके मनमें यह जाननेकी इच्छा हुई कि वह अब कौन-सा विषय पढ़ रहा होगा। उन्होंने दबे पांव खिड़कीके पास आकर श्याम जो पुस्तक पढ़ रहा था उस पर नजर डाली। वह ठिठक कर रह गए। उस पुस्तकका नाम था—'भूतोंका अड्डा'! श्याम उसे पढ़नेमें इतना मगन था कि उसे पिताजीके खिड़कीके पास आने और उसे देखनेका बिल्कुल पता न लगा।

कमलापति चिंतामग्न अपने कमरेमें चले गए। तो क्या श्याम आजकल ऐसी किताबें पढ़ा करता है? कितने दिनोंसे चल रहा है यह? क्या इसी कारण इसे इस बार परीक्षामें इतने कम अंक मिले?

दूसरे दिन जब श्याम स्कूल चला गया, तब कमलापतिने उसके कमरेमें जाकर उसकी वस्तुओंपर नजर दौड़ाई। शेल्फपर उसकी पाठ्य-पुस्तकें करीनेसे रखी हुई थीं, मगर जब उन्होंने मेजपर रखे एक संदूकको खोलकर देखा, तो वह चौंक पड़े! उसमें बीस-पच्चीस किताबें रखी थीं जिनमेंसे कुछके शीर्षक इस प्रकार थे—'बारह भूत और एक जादूगर', 'श्मशानकी रातें', 'भूतोंकी करामात', 'प्रेतोंकी आवाज', 'खोपड़ीमें जान' इत्यादि। पिछली रात कमलापतिके मनमें जो संदेह पैदा हुआ था, वह अब पक्का हो गया। उन्हें स्पष्ट रूपसे मालूम हो गया कि श्याम आजकल स्कूलकी किताबोंको पढ़नेके बहाने ऐसी किताबें पढ़ा करता है और इसी कारण उसे हालकी परीक्षामें कम अंक प्राप्त हुए थे।

यह बात नहीं थी कि कमलापति अय्यर चाहते थे कि श्याम कोर्सकी पुस्तकोंमें ही सदा लगा रहे और कोई अन्य साहित्य न पढ़े। उनकी दृष्टिमें पढ़ाईका उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना नहीं था, बल्कि ज्ञानकी प्राप्ति था। इस उद्देश्यसे वह अक्सर श्यामके लिए पुस्तकालयसे सामान्य ज्ञानकी कई पुस्तकें और बढ़िया पत्र-पत्रिकाएं लाते थे। मगर भूत-प्रेतोंकी कहानियोंमें अत्यधिक रुचि लेनेके कारण श्यामकी प्रगति घट रही थी, यह उनको बहुत नागवार लगा। श्यामके लिए यह बहुत जरूरी था कि वह कम-से-कम परीक्षाओंके खत्म होने तक उनकी तैयारीमें लगा रहे। अब तक स्कूलमें प्रथम रहने वाला विद्यार्थी पास भी न हो सके, तो कैसा लगेगा? उसे व्यर्थ ही एक साल खो देना पड़ेगा। कमलापति अय्यर गहरे सोचमें पड़ गए।

वह थोड़ी देर उन पुस्तकोंके पन्ने उलट-पलटकर देखते रहे। फिर उन्होंने अपने पैडमें कुछ बातें नोट कर लीं और पुस्तकोंको फिर पहले-की ही भांति उन्होंने संदूकके अंदर रख दिया।

उस रातको भोजनके वक्त उन्होंने श्यामसे कहा, "श्याम, अगले इतवारको मैं तुम्हें हिन्दीमें एक टेस्ट पेपर देना चाहता हूं। तैयारी कर लो।"

चूंकि उसके पिता अक्सर ही छुट्टीके दिनों-में ऐसे टेस्ट पेपर दिया करते थे और स्कूली परी-क्षाओंकी ही तरह अंक भी देते थे, श्यामको इसमें कोई विशेषता नजर नहीं आई। उसने कहा, "ठीक है।" मगर कमलापतिको उसकी आवाज-में हमेशा जैसा उत्साह दिखाई नहीं दिया।

अगला इतवार आया। सवेरे नाश्ता करके श्याम टेस्ट पेपरके लिए तैयार होकर बैठ गया। नौ बजते ही पिताजीने आकर उसके हाथमें अपना तैयार किया हुआ प्रश्न-पत्र रख दिया। श्यामने उसपर नजर डाली, तो हक्का-बक्का रह गया। टेस्ट पेपर इस प्रकार था :

प्रश्न-पत्र (भूत-साहित्य)

समय तीन घंटे) (पूर्णांक १००

१. किन्हीं पांच प्रश्नोंका उत्तर दो : २५

(अ) जादूगर केदारसिंहने किलेके भूतोंको कैसे भगाया?

(आ) बारह भूतोंकी प्रमुख हरकतें क्या थीं?

(इ) खोपड़ियोंमें जान डालनेके लिए दाढ़ीवाले बाबाने क्या किया? उसका परिणाम क्या हुआ?

(ई) सुनसान बंगलेसे किस प्रेतकी आवाज आ रही थी?

(उ) श्मशानपर काली मंदिरके पुजारीको क्या क्या अनुभव हुए?

(ऊ) एक उंगलीवाले भूतने क्यों और किस तरह जादूगरको मारा?

२. प्रसंग बताकर व्याख्या करो : १५

(अ) "... अरे, तूने मुझे क्या समझ रखा है? यदि चाहूं, तो तेरी खोपड़ी चूर चूर कर दूंगा...।"

(आ) "... मेरे पास ऐसे ऐसे मंत्र हैं कि इन सारे भूतोंको एक क्षणमें भगा दूंगा...।"

(इ) "...तेरी यह मजाल कि तू मेरे सामने आए! ले शाप, अभी भस्म हो जा...!

३. भूत-प्रेतोंकी कहानियां पढ़नेकी आवश्यकता समझाते हुए अपने मित्रको एक पत्र लिखो। १०

४. किसी एक कहानीका सारांश बीस पंक्तियोंमें लिखो। १५

(अ) खंडहरकी आवाजें

(आ) दस सींगोंवाला भूत

(इ) मुर्देकी शरारत

५. "पाठ्य-पुस्तकें पढ़नेके बहाने भूत-प्रेतोंकी कहानियां कैसे पढ़ी जा सकती हैं?"—इस विषयपर एक लेख लिखो। १५

५. भूत कितने प्रकारके होते हैं? उनके कितने उपभेद होते हैं? सविस्तार समझाओ। १०

७. क्या तुमने ऐसी भी कोई पुस्तक पढ़ी है, जिसमें भूत-प्रेतोंकी निरर्थकता अथवा अस्तित्वहीनतापर प्रकाश डाला गया हो? क्या तुम सिद्ध कर सकते हो कि भूत होते हैं? १०

प्रश्न-पत्र पढ़ते ही श्याम पिताजीका कटाक्ष समझ गया और प्रश्न-पत्र लेकर फौरन उनके कमरेकी ओर भागा।

कमलापतिने पूछा, "क्या है, श्याम? कोई कठिनाई है क्या?"

"पिताजी, यह प्रश्न-पत्र . . ." कहते कहते उसका गला रुंध गया।

कमलापति मुस्कराते हुए बोले, "क्यों, इस प्रश्न-पत्रमें क्या कमी है? आजकी हालतमें तुम ऐसे प्रश्न-पत्रका आसानीसे उत्तर दे सकते हो! है न?"

श्याम कोई जवाब न दे सका।

कमलापतिने एक दूसरा कागज उसे देते हुए कहा, "अगर तुम्हें वह प्रश्न-पत्र पसंद नहीं है, तो इस प्रश्न-पत्रका उत्तर लिख सकते हो।"

श्याम चुपचाप उसे लेकर अपने कमरेमें वापस आया। उस पत्रमें स्कूलके पाठ संबंधी प्रश्न ही थे। यद्यपि श्यामने कोई विशेष तैयारी नहीं की थी, फिर भी अपनी तीव्र स्मरण-शक्ति-की सहायतासे उसने सारे प्रश्नोंका ठीक ठीक जवाब लिख डाला।

उसके जवाबोंको देखते हुए कमलापतिने बड़े प्रेमसे कहा, "जरा सोचो, श्याम, जब तुम बिना किसी तैयारीके ही एक प्रश्न-पत्रका सामान्य रूपसे संतोषजनक उत्तर दे सकते हो, तो पाठ्य-पुस्तकोंपर पूरा ध्यान केंद्रित करके राज्यभरमें प्रथम क्यों नहीं आ सकते।"

पिताजीकी ये बातें श्यामके दिलमें घर कर गईं। उस दिनसे वह पूर्ववत अपने पाठोंपर ही पूरा ध्यान केंद्रित करने लगा और परीक्षामें उसने पेपर बहुत अच्छे किए। परीक्षाके खत्म होनेके दिन जब वह घर लौटा और उसने अपनी मेजपर नजर डाली, तो उसके आश्चर्यकी सीमा न रही। अत्यंत रंगीन चित्रोंसे सुसज्जित कई नई बढ़िया पुस्तक व पत्रिकाएं वहां रखी हुई थीं। ●

चीनी (शक्कर) की कहानी

www.kissekahani.com

यदि तुम किसी दूकानपर देखो, तो तुम्हें मालूम होगा कि कई प्रकारकी खानेकी चीजें पैकेटों, टिनके डिब्बों और लकड़ी व दफ्तीके बक्सोंमें भरी हुई होती हैं। ये सब खानेकी चीजें हमको खेती करनेसे प्राप्त होती हैं। जिस स्वरूपमें हमें ये वस्तुएं इन डिब्बोंमें मिलती हैं ठीक उसी शक्लमें वे हमें खेतोंसे नहीं प्राप्त होतीं। यह शक्ल तो मनुष्य बादमें अपनी बुद्धिके बलसे देता है।

तुम रोजाना चीनी चायमें मिलाकर या दूधमें घोलकर या हलुवेमें डालकर अथवा मिठाइयोंमें अवश्य खाते होगे। हो सकता है चीनी खानेके तुम शौकीन भी हो, क्योंकि चीनी बहुत स्वादिष्ट होती है।

तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि बहुत पहले मनुष्य, जब उसको चीनी बनानी नहीं आती थी, वह अपने भोजनको स्वादिष्ट करनेके लिए उसमें शहद डाला करता था।

पूरे संसारमें सबसे पहले भारतीयोंने ही चीनीको बनाया था। विदेशके लोगोंने भी चीनी बनाना भारतसे ही सीखा था। यूरोपके लोगोंको तो कई सौ वर्षों बाद चीनीके स्वादका पता चला था।

गन्ने तो तुमने जरूर खाए होंगे। इन्हीं गन्नोंसे चीनी बनती है। गन्ना उगनेके लिए तेज धूप और काफी बारिशकी आवश्यकता होती है। इसी लिए यह यूरोपके देशोंमें नहीं उग सकता, क्योंकि वहां ठंड बहुत अधिक पड़ती है।

गन्ना बोनेके लिए गन्नेकी वे ही पोरियां इस्तेमालकी जाती हैं, जिनके सिरोंपर फुनगी निकल आई हों। यह फुनगी ही गन्नेके बीजका काम देती है। आमतौरपर गन्ना बोनेके लिए उसकी पूरी पोरीको ही काममें लाया जाता है। यदि गन्नेकी फुनगीवाली पोरीको बीजके रूपमें काममें लाया जाए, तो अधिक अच्छा रहता है। क्योंकि इन पोरियोंमें उभरती हुई आंखें होती हैं इसी लिए वे अधिक संख्यामें कल्ले देती हैं। इनके इस्तेमाल करनेसे गन्नेके नीचेका भाग, जिसमें फुनगीकी अपेक्षा अधिक मिठास होती है, चीनी निकालनेके काममें आ जाता है।

लगभग २४ मनुष्य दो बैलोंकी जोड़ीसे आठ घंटेमें ढाई एकड़ जमीनमें गन्ना बो पाते हैं। गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ने गन्ना बोनेके यंत्रमें सुधार किया है। इस यंत्रकी सहायतासे ३ आदमी ८ घंटेमें दो एकड़ भूमिपर गन्ना बो सकते हैं। इस यंत्र द्वारा गन्ना बोनेसे खर्चेमें काफी बचत हो जाती है।

गन्ना दीवालीपर पककर तैयार हो जाता है और कुछ ही दिन बाद इसकी कटाई आरंभ हो जाती है। गन्ना गंडासा नामक औजारसे काटा जाता है।

पके हुए गन्नेकी लंबाई आदमीसे भी ऊंची लगभग १२ फुट होती है। गन्ना बिल्कुल जमीनके करीबसे काटा जाता है और फिर उसके ऊपरके पत्ते छील दिए जाते हैं। गन्नेका रंग लाल, पीला, बैंगनी अथवा हरे रंगमेंसे कोई भी हो सकता है। गन्नोंको काटकर बंडलोंमें बांध दिया जाता है और गाड़ियों तथा ट्रकों द्वारा चीनीकी मिलोंमें पहुंचाया जाता है।

मिलोंमें रोलरोंकी सहायतासे गन्नोंको पीसकर रस निकाल लिया जाता है। रसको टीनके बने बड़े बड़े टैंकोंमें भर दिया जाता है। इसके बाद रसको उबाला जाता है। इसका कुछ भाग गुड़की तरहसे बन जाता है तथा बाकी कत्थई रंगका चिपचिपा दानेदार पदार्थ बन जाता है। इसी पदार्थको साफ करके चीनी बनाई जाती है। इसको तब तक कई मशीनोंमें साफ किया जाता है, जब तक कि यह बिल्कुल सफेद न हो जाए। गन्नेका रस साफ करनेके लिए चूना, सल्फर डाइआक्साइड और कार्बन डाइआक्साइडकी आवश्यकता होती है। सल्फर डाइआक्साइड गंधकको जलाकर बनाई जाती है। गंधक भारतमें नहीं पैदा होती। इसलिए अमरीका और जापान आदि देशोंसे मंगानी पड़ती है। इसी लिए अब कई जगह मुलतानी मिट्टीसे भी गन्नेका रस साफ किया जाता है। इतना ही नहीं इससे चीनी अधिक सफेद हो जाती है और अधिक समय तक सुरक्षित रखी जा सकती है।

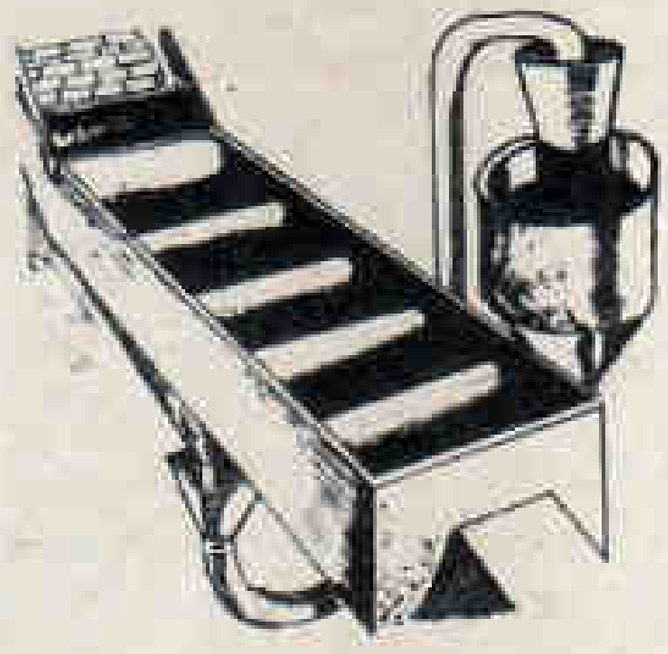

मशीनसे गन्नेका रस निकालनेकी क्रिया

भारतमें लगभग ४० लाख एकड़ भूमिपर गन्नेकी बुआई की जाती है और गन्नेकी कुल उपजका ५० प्रतिशत गुड़ बनाने, ३० प्रतिशत चीनी बनाने और बाकी २० प्रतिशत खांडसारी बनाने, चूसने और बोनेके काममें लाया जाता है।

तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि ठंडे देशोंमें सफेद चुकंदरसे चीनी बनाई जाती है। लेकिन यह चीनी केवल २०० वर्ष पूर्व ही बनाई गई थी। सफेद चुंकदरसे बनी चीनी गुणमें गन्नेकी चीनीके समान होती है।

—ओमप्रकाश मित्तल

"भगेलू वापस आ रहा है!"

खबर सारे कस्बेमें बिजलीकी तरह फैल गई। बच्चोंमें खुशीकी लहर दौड़ गई। वे सब अपने दो वर्ष-से बिछुड़े दोस्तके स्वागतकी तैयारीमें लग गए।

एक तरफ कुछ लोगोंमें घबराहट भी फैल गई। शैतानके कान कुतरने वाला भगेलू वापस आ रहा है। भगेलूकी शैतानियोंके सबसे बड़े शिकार सेठ पोंगामलने अपने यहां कुछ लोगोंकी पंचायत बुलाई। भगेलूके सताए संगीतकार सरफराजखां, लाला मटकूचंद और मुखिया लोटाराम भी पंचायतमें शामिल हुए।

बात पोंगामलने शुरू की : "सुना आप लोगोंने, वह शैतान छोकरा भगेलू वापस आ रहा है।"

मटकूचंद बोले, "क्या बताऊं, सेठजी, जबसे उसके आनेकी बात सुनी है, पेटमें मारे घबराहटके लेटूं तो चैन नहीं, बैठूं तो चैन नहीं। ऐसा लगे है जैसे वह मेरे सामने भूतकी तरह खड़ा है। भला मैं भूल सकूं हूं उसकी शैतानी, मेरी चारों भैंसें खोलकर झगड़ूके खेतमें हांक दी थीं। अब आप ही बताइए इसमें मेरा क्या कुसूर था। वे भैंसें झगड़ूका आधा खेत अपने पेटमें उतार गईं। उधर झगड़ूको चढ़ा दिया। जैसा उसका नाम है वैसा ही वह झगड़ालू भी है। लाठी लेकर मेरे सिरपर आ चढ़ा था। मरता क्या न करता, डरके मारे टेंट ढीली करनी पड़ी। वह एक मुश्त सौ रुपये ले गया था मुझसे। बात इतनी ही होती, तो चलो तसल्ली कर लेता। उस आफत के परकाले छोकरे भगेलू और उसके साथियोंने मुझे दिखाकर मिठाई खाई और सुनाकर कहा—'वाह, झगड़ूकी मिठाई कितनी मीठी है'। और भगेलूने एक बार तो. . ."

सफरराजखांने बात काटकर कहा, "नहीं, भई पोंगा-मलजी, उस शैतानके ताऊका गांवमें आना बहुत बुरा होगा। समझ लो, गांवसे कला विदा हो जाएगी। भला यह भी कोई हिमाकत है, मैं जब जब अपने संगीतकी तान छेड़ता था, वह अपने दोस्तोंके साथ आकर मकानके बाहर-से मेरी नकल उतारता था। मैंने हारकर नदी किनारे जाकर अपनी ताना-री-री छेड़ी, तो वहां वे लोग कुछ गधे पकड़ लाए। न जाने उन्होंने क्या किया कि जब जब मैं अलाप लूं, गधे भी ढींचू-ढींचूका राग अलापें। बोलो, आप लोग ही बोलो, मैं क्या करता। मुझे बताते शर्म आती है, लेकिन कहे बिना भी नहीं रहा जाता, एक बार तो उन्होंने मेरे पीछे गधोंको लगा दिया। मैं भागूं तो वे लोग हल्ला करें. . ." बेचारे बोलते बोलते हांफ गए, इसलिए चुप हो गए।

पोंगामलने गरम आवाजमें कहा, "मुझे भी उसने कम परेशान नहीं किया है। आप लोगोंको तो पता है पड़ोसके गांवमें बरात गई थी। उन्होंने वहां कैसी खिल्ली उड़वाई थी। ओफ, मैं भूल नहीं सकता। भगेलूने न जाने कैसे मेरी कुर्सीपर ढेर सारे टमाटर रख दिए। जैसे ही मैं बैठा, सारे कपड़े टमाटरके रससे सराबोर हो गए। मुझे मुंह छिपाकर भागना पड़ा था वहांसे। इसलिए भगेलू-को गांवमें हरगिज नहीं घुसने देना है।"

लोटारामने भी अपना दुखड़ा रोया, "और आप लोग मेरी बात भी भूले नहीं होंगे। कैसे उन्होंने एक अंधेरी रातमें 'चोर चोर'का शोर मचाकर मुझे पकड़ लिया था। आप सबने उस समय उस छोकरे और उसके साथियों-की बातमें आकर मेरी वह धुनाई की थी, जो मैं आज भी नहीं भूला हूं। आपने मेरी बात भी नहीं सुनी थी।"

मटकूचंद बोले, "अरे, तो हमें उस समय क्या पता था कि आप लोटाराम मुंशी हैं, हम तो यही समझ रहे थे चोर पकड़ा गया है।"

पोंगामलने कहा, "पिछली बातें जाने दो, यह सोचो अब किया क्या जाए। मेरा खयाल है उसके बापको बुलाकर साफ कह दिया जाए. . ."

सरफराजखां बोले, "नहीं, उसके बापसे कहनेमें

कहानी

भगेलू की वापसी

- अवध अनुपम

www.kissekahani.com

कोई फायदा नहीं। दरअसल बात यह है कि हम लोग ही उसकी शैतानियोंके शिकार होते हैं, इसलिए हमें ही कुछ करना चाहिए। मैं कैसे बताऊं उसने एक बार तो मुझे . . ."

बात काटकर मटकूचंदने कहा, "अरे एक है जो कहोगे। इस समय मेरी बात मानी जाए, तो उसके नामपर थानेमें रपट लिखा दी जाए।"

बात कुछ तय नहीं हुई। सब लोग यूं ही लौट गए।

●

भगेलू तो आया नहीं, आए उसके बदलेमें एक सिद्ध महात्मा और उन्होंने नदी किनारे एक खाली पड़ी झोंपड़ीमें धूनी रमाई।

लोगोंका उनके पास तांता लग गया। यूं तो गांवमें बहुत-सी मुसीबतें लोगोंको घेरे रहती हैं। लेकिन इस समय सबसे ज्यादा परेशानी भगेलूके वापस आनेकी थी। भगेलूके बापने पहुंचकर महात्माको दंडवत की और निवेदन किया, "महात्माजी, मेरा लड़का बहुत नटखट है; गांवके लोग उसे गांवमें नहीं आने देना चाहते। आप कुछ ऐसा कीजिए कि वह सीधा हो जाए।"

महात्माने कहा, "उसे यहां लाओ, हम उसे ज्ञान देंगे।"

"महाराज, वह अपने मामाके घर गया है। मैंने दो साल पहले भेजा था। सोचा था शहरमें रहकर सीधा हो जाएगा, लेकिन उसके मामाने उसकी शैतानियोंसे तंग आकर वापस भेजनेका खत लिखा है।"

"ठीक है, जब वह आ जाए, तो हमारे पास लाना।"

बाप चला गया, तो गुट बनाकर बच्चे सामने आए। बच्चोंकी मंडलीने महात्माजीसे अनुरोध किया, "महात्माजी, हम अपने साथी भगेलूका इंतजार बड़ी बेचैनीसे कर रहे हैं। उसके बिना हमारा दिल नहीं लगता। उसे गए दो साल हो गए। वह हमारी मंडलीकी जान था।"

"तुम लोग क्या चाहते हो?"

"हम चाहते हैं वह जल्दीसे आ जाए। हमने उसकी दावतका इंतजाम किया है। अब आप ऐसा कर दीजिए कि उसके मामाके मनमें उसके लिए फिरसे प्यार न आ जाए, वह उसे वहांसे भगा दें और इस तरहसे हमारा भगेलू हमारे पास आ जाए।"

"ठीक है, बच्चो, वह आ तो जाएगा, लेकिन इसके लिए तुम्हें भुतहा बागमें जाकर अमावसकी रातको तपस्या करनी होगी। बोलो कर सकते हो?"

"बाप रे! भुतहा बागमें! वहां तो, बाबाजी, बड़े बड़े भूत रहते हैं; रातको तो क्या, दिनमें भी जाना मुश्किल है।"

"समझ लो, आज अमावस है शायद, हां, आज ही है, अगर आज तपस्या नहीं की, तो अगले महीने तक रुकना पड़ेगा तुम लोगोंको। अगर दोस्तको चाहते हो, तो यह भी करना पड़ेगा।"

सब बच्चोंके चहरेपर हवाइयां उड़ने लगीं। उनमेंसे एक बोला, "महात्माजी, कोई और तरकीब बताइए। आप कहें, तो उसकी दावतके लिए जमा किया गया चंदा आपको दे दें।"

"इसका मतलब है कि तुम अपने दोस्तसे प्रेम नहीं

स्कूली लड़कों के लिये विशेष ढंग से परिकल्पित—बिन्नी का डी.३८०

दाम में कम पर देखने में शानदार। चाहे जैसे भी बरतिये, जैसे का तैसा ही बना रहेगा। यह मरसिराइज्ड होता है। बार बार धोने पर भी चमक और रंग में कोई फर्क नहीं आता। विभिन्न रंगों में से अपनी मन-पसन्द कोई भी चुन लीजिये।

परदे तथा गद्दे के ढक्कन के लिये भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

बिन्नी—कपड़ों में एक मशहूर नाम

AUTHORISED STOCKIST OF BINNY'S FABRICS

अपनी अंचल के बिन्नी के कपड़े अधिकारप्राप्त बिन्नी के स्टाकिस्ट से खरीदिये जिनके यहाँ यह साइन बोर्ड लगा है।

दि बंगलोर वूलेन, कॉटन ऐन्ड सिल्क मिल्स कं० लि०, अग्रहारम रोड, बंगलोर-२३ : बिन्नी ऐन्ड कं० लि०, मद्रास की सहायता प्राप्त

IWT/BY 3613A

(लघु बचत में धन लगाइये)

कहानी

लोहे से सोना

● रविंद्र प्रकाश

एक था राजा। उसने यह नियम बना रखा था कि जो भी व्यक्ति चोरी करेगा उसे फांसीका दंड दिया जाएगा। एक बार चार चोर महलमें चोरी करते हुए पकड़े गए। उन्हें राजाने फांसीकी आज्ञा दी। फांसीका दिन आया। तीन चोरोंको तो फांसी दे दी गई, लेकिन चौथे चोरको एक तरकीब सूझी। उसने सिपाहियोंसे कहा—"मैं एक ऐसी बूटी जानता हूं, जिसे पीसकर यदि लोहेपर डाल दिया जाए तो लोहा सोना बन जाएगा। यह कला मैं तुम्हें मरनेसे पहले सिखा देना चाहता हूं।"

यह बात सिपाहियोंसे अफसरोंको मालूम हुई। उन्होंने मंत्रीको बताया। मंत्रीने राजासे कहा। राजाकी आज्ञासे चोरको दरबारमें लाया गया। चोरने राजाके सामने भी दावा किया कि वह लोहेसे सोना बना सकता है।

चोरकी बताई हुई बूटी जंगलसे मंगाई गई। दरबारमें नगर भरका लोहा एकत्र किया गया। प्रतिष्ठित व्यक्तियोंको बुलाया गया। चोरने बूटीको पीसा, फिर बोला—"महाराज, बूटीका चूर्ण तैयार है, इसे डालते ही लोहेसे सोना बन जाएगा। परंतु शर्त यह है कि वही व्यक्ति चूर्णको लोहेपर डाले, जिसने कभी चोरी न की हो।"

राजाने दरबारमें एकत्र कृषकोंसे कहा—"तुम यह चूर्ण लोहेपर डालकर सोना बना दो।"

उन्होंने उत्तर दिया, "महाराज, यह काम हम न कर सकेंगे, क्योंकि हम प्रायः एक-दूसरेके खेतोंमेंसे अनाज चुरा लेते हैं।"

राजाने वहांके ठेकेदारोंसे कहा। उन्होंने उत्तर दिया—"सरकार, हम घूस देकर बड़े बड़े काम करा लेते हैं और चूनेके स्थानपर मिट्टी भर देते हैं। पक्की ईंटोंकी जगह कच्ची ईंटें लगा देते हैं। इसलिए हम यह काम करनेके अधिकारी नहीं हैं।" अब राजाने उपस्थित व्यापारियोंसे कहा। वे बोले—"यदि कम माल न तौलें तथा मिलावट न करें, तो हमारा काम कैसे चले। यह भी एक प्रकारकी चोरी ही है।"

यह सुनकर राजाने अपने मंत्रियोंसे कहा। एक मंत्री बोला—"मैंने बचपनमें एक किताब चुराई थी।" दूसरा बोला—"मैंने दावात चुराई थी।" तीसरा बोला—"मैंने अपनी मांके पैसे चुराए थे।" राजाने राज-परिवारवालोंकी ओर देखा। रानी बोली—"मैंने बचपनमें अपनी सहेलीका हार चुराया था!"

तब चोरने राजासे कहा—"महाराज, आप तो राजा हैं और आपने कभी चोरी भी न की होगी। आप ही इस चूर्णको लोहेपर डालिए।" राजाके काटो तो खून नहीं। उसने सोचते हुए कहा—"जब मैं छोटा था तब घरमें पूजाके लिए लड्डू आए थे। मैंने मांसे लड्डू मांगा। उन्होंने पूजाके बाद देनेको कहा। मुझे लड्डू अच्छे लगते थे। जब मां बाहर गई, तो मैंने एक लड्डू चुरा कर खा लिया।"

चोरने हाथ जोड़कर राजासे कहा,—"महाराज, यदि जनतासे लेकर आप तक सभी चोर हैं, तो फिर मुझ अकेलेको क्यों फांसी दी जा रही है, सभीको दीजिए।" ●

करते। याद रखो, हम ऐसा कर देंगे कि वह गांवमें आएगा ही नहीं...." बाबा बोले।

बच्चोंका मुंह लटक गया। महात्मा दाढ़ीपर हाथ फेर रहे थे और धीमी धीमी मुस्कानके साथ बच्चोंको देख रहे थे। बच्चोंने मामला बिगड़ते देखा, तो बोले, "नहीं, महाराज, ऐसा मत करना। हम लोग वैसे ही उसके बिना परेशान हैं। ऐसा कीजिए पहले आप अपनी शक्तिसे उसे बुला दीजिए, तपस्या बादमें कर लेंगे।"

"क्यों, बादमें क्यों?" महात्माजी बोले।

"बात यह है, बाबाजी, वह हमारा साथी भगेलू बहुत हिम्मती है। उसके साथ हमें कहीं भी जानेमें डर नहीं लगता।"

"कुछ भी हो, तपस्या तो पहले ही करनी होगी तुम लोगोंको।"

और कोई चारा न देख बच्चे तैयार हो गए। उन्हें अपना दोस्त भगेलू बहुत प्यारा था; पूछा, "आ तो जाएगा न हमारा दोस्त?"

"आएगा क्यों नहीं?"

इधर बच्चे गए उधर पोंगामल, लोटाराम, मटकूचंद और सरफराजखां भी पहुंचे। महात्माजीने सबका नाम ले लेकर उन्हें बिठाया। सब हैरान रह गए। महात्मा तो पहुंचे हुए हैं। पहली ही बार गांवमें आए और चेहरे देखकर ही सबका नाम बता दिया।

पोंगामलने पांच किलो मिठाई और ११ रुपये महात्माजीके आगे रख दिए।

महात्माजी मुस्कराए और बोले, "हुं, तो तुम लोग किसी भगेलू छोकरेके बारेमें आए हो?"

"हां, महाराज," पोंगामल बोले, "वह छोकरा गांवमें वापस आ रहा है।"

मटकूचंदने कहा, "हां, बाबा, दो साल पहले जब वह यहां था, तभी उसने हमारी नाकमें दम कर दिया था, अब तो वह और बड़ा हो गया होगा। और सुननेमें आया है वह पहलेसे ज्यादा शैतान हो गया है।"

अब लोटारामने कहा, "यह समझ लीजिए, महात्माजी, वह क्या आ रहा है हमारी मौत आ रही है!"

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

मलयालम उपन्यास

ആൾക്കൂട്ടം

मूल लेखक: माधवन नायर

www.kissekahani.com

(१)

कोमन सरकसमें एक हाथी, एक शेर, एक लोमड़, दो बंदर, दो भालू, दो चीते, सात ऊंट और सात घोड़े थे।

गजन हाथीको अपने लंबे-चौड़े शरीरपर बड़ा अभिमान था। वह सोचता था कि वह दुनियामें सबसे बड़ा हाथी है। "तुम्हारा क्या खयाल है?"—वह अपने दोस्तोंसे पूछता। "बेशक तुम दुनियामें सबसे बड़े हाथी हो,"—वे उसे खुश करनेके लिए कह देते, लेकिन उसकी पीठ पीछे वे एक दूसरेकी तरफ आंख दबाकर मुस्करा देते।

सिहन शेर बहुत बड़ा, मजबूत और बहादुर था। उसके रूखे बाल, दाढ़ी और लंबी पूंछ जिसके सिरेपर बालोंका गुच्छा था, देखने वालोंको डरा देते थे

जंबू नामके लोमड़का चेहरा लंबा और आंखें चमकदार थीं। वह शायद ही कभी मुस्कराता था, लेकिन जब कभी मुस्कराता, तो सचमुच बदमाश लगता था।

दोनों बंदर भाई भाई थे। चिम्पन बड़ा था और कोचिम्पन छोटा। वे बनमानुष थे और आदमियों जैसे लगते थे। भालू हट्टे-कट्टे और मोटे-ताजे थे। एक काला था, इसलिए उसे कालू कहते थे। दूसरा लाल था, इसलिए उसे लालू कहते थे।

चीतोंको उनकी चिढ़से पुकारा जाता था। एकका नाम दंतुला था, क्योंकि उसके दांत बड़े लंबे थे। दूसरेका नाम नजलू था, क्योंकि उसकी नाक हमेशा बहती रहती थी, चेहरा लाल और सूजा हुआ रहता था, जैसे उसे हमेशा जुकाम रहता हो।

ऊंट और घोड़े नाम या उपनामसे नहीं बल्कि नंबरोंसे जाने जाते थे। कोचिम्पन हर घोड़ेको 'गधा' नंबर एक, दो आदि कहकर पुकारता था। भई, घोड़ेको गधा कहना बहुत बड़ा अपमान है। वह और किसी तरहका अपमान सह भी सकता है, पर यह अपमान नहीं। लेकिन कोचिम्पन आफतका परकाला था और उसे कोई कुछ भी कहनेसे नहीं रोक सकता था।

कोमन सरकसमें बहुतसे आदमी भी थे— कसरती झूलेके कलाकार, साइकिल चलाने वाले, चाकू फेंकने वाले, जादूगर, मदारी, नट और मसखरे। लेकिन कोमन आदमियोंसे ज्यादा जानवरोंको प्यार करता था। वह उन्हें अपने बच्चोंकी तरह चाहता था, इसी लिए वह उन्हें बेटा कहकर पुकारता था। उसने उन्हें अपने हाथोंसे पाल-पोसकर बड़ा किया था और उन्हें सरकसके करतब सिखाए थे। करतब सिखाने वाले सरकसके जानवरोंको मारते-पीटते हैं, लेकिन कोमन ऐसा नहीं करता था। वह कहता था कि जानवरोंको प्यार और सहानुभूतिसे सिखाना चाहिए। बहुत पहले एक बार उसने गुस्सेमें आकर सिहन शेरको कोड़ेसे मारा था। मार इतनी सख्त थी कि सिहनके खून निकल आया और वह दर्दसे कराह उठा, तड़प उठा। बादमें कोमनको बड़ा पछतावा हुआ। उसके बाद उसने कभी जानवरोंको दंड नहीं दिया।

शुरू शुरूमें सरकसमें काम करने वाले अन्य आदमियोंके हृदयमें भी यही प्यारकी भावना थी, लेकिन धीरे धीरे उनका रवैया बदल गया। इस सबके पीछे कंपनीके मैनेजर केलनका हाथ था।

केलन कोमनका दूरका संबंधी था। बचपनमें वह अनाथ हो गया था। कोमनने ही उसे पाला-पोसा था और अपनी सरकस-कंपनीमें नौकरी दी थी। केलन होशियार लड़का था। कामके बूतेपर वह एक एक सीढ़ी चढ़कर कंपनीका मैनेजर हो गया।

सरकसमें काम करने वाले लोग जानते थे कि अगर उनपर मैनेजरकी कृपा-दृष्टि हो, तो आसानीसे वे अपना उल्लू सीधा कर सकते हैं। एक दिन लोहेकी छड़पर तमाशा दिखाने वाले कलाकार अनंतनने

साइकिल सवार गोविन्दसे कहा, "कितना अच्छा हो अगर केलन साहब इस कंपनीके मालिक बन जाएं!"

गोविन्दने यह बात बाजीगर सुगतनसे कही और सुगतनने मसखरे कोन्तुसे और फिर उन सबने यह बात केलनसे कह डाली।

"मैं मालिक नहीं बनना चाहता, मैं तो मैनेजर रह कर ही संतुष्ट हूं," केलनने कहा।

लेकिन यह केवल दिखावा था। उनकी इस बातसे वह सचमुच खुश हुआ था और उसने उनके वेतन बढ़ा दिए थे। दूसरोंने भी लाभ उठानेके लिए यही ढंग अपनाया। आखिर सरकसमें काम करने वाले हर आदमीने केलनकी तारीफोंके पुल बांधने और कोमनकी बुराई करनी शुरू कर दी।

जब जानवरोंका इस परिवर्तनपर ध्यान गया, तो वे उदास हो गए। कोमन बहुत ही नेक और दयालु था। उसे बुरा-भला कहना क्या पाप नहीं? वे जानवर ऐसा कभी न करेंगे। वे हमेशा अपने मालिकके वफादार रहेंगे।

कोमन यह सब जानता था, लेकिन वह जानकर भी अनजान बना रहा।

"खर्च बढ़ रहे हैं। मुझे डर है, इस हालतमें सरकस-कंपनी टूट जाएगी," एक दिन केलनने कोमनसे कहा।

इस बातसे मालिकको बड़ा आश्चर्य हुआ—"ऐसा कैसे हो सकता है, केलन? रोज टिकट बिकते हैं। रोज भीड़ बढ़ रही है। पैसा बरस रहा है। मेरी समझमें तो नहीं आता।"

केलनने ऐसा दिखावा किया जैसे उसे कोमनकी इस बातसे बड़ी चोट पहुंची हो—"तो आप मुझपर भरोसा नहीं करते, मालिक? आपका मतलब है, मैं आपको धोखा दे रहा हूं। आप...आप यह सब कह रहे हैं जिसने मुझे पाल-पोसकर बड़ा किया!" और यह कहकर केलन रोने लगा।

कोमन उसकी बातोंमें आ गया। उसने जल्दीसे कहा, "मुझे दुःख है, केलन, मेरा यह मतलब नहीं था। मैं जानता हूं, तुम मुझे कभी धोखा नहीं दोगे। तुम्हारे हाथोंमें कंपनी सुरक्षित है, मुझे तुमपर पूरा पूरा भरोसा है।"

केलन चालबाज था। वह जाली हिसाब रखता, जिसमें घाटा दिखाया होता। उसने कोमनका पैसा अपना बना लिया और उस पैसेसे उसने अपने कस्बे कण्णूरमें नहीं, बल्कि लाल शेरीसे आठ मील दूर नारियल और धान

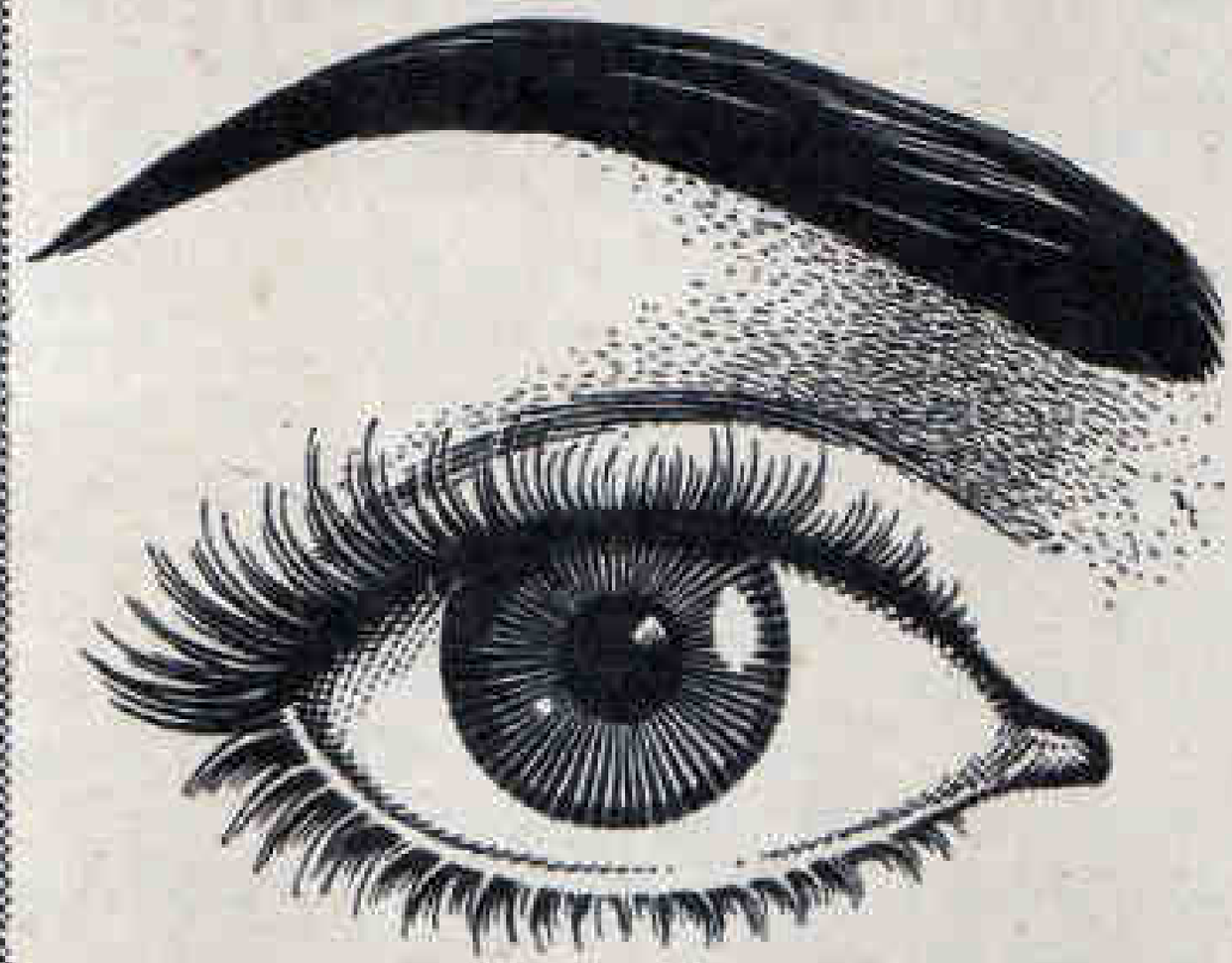

आंखों की सुरक्षा केलिये

भीमसेनी काजल

★ आंखों को नीरोग और सुन्दर बनाता है।

हर जगह मिलता है।

मुरारी ब्रदर्स, कमला नगर, देहली-7

GAYWAYS

वितरक : मेसर्स मनोचा ट्रेडिंग कं., अमृत मार्केट, सदर बाजार, दिल्ली-६

के खेत खरीद लिये, ताकि किसीको कोई संदेह न हो। इस तरह धीरे धीरे सरकस कर्जमें डूब गया। कोमनको कर्ज उतारनेका कोई तरीका नहीं सूझा। जिस सरकसके लिए उसने जीवन भर एड़ी-चोटीका जोर लगाया था, जिसने लाखों लोगोंका मनोरंजन किया था, वह विनाशके मार्गपर खड़ा था।

"कोमन साहब, कंपनीको बचानेका सिर्फ एक रास्ता है। वह यह कि मुझे इसका मालिक बना दीजिए, मैं इसका सारा कर्ज उतार दूंगा," केलनने कहा।

कोमन सोचमें डूब गया। केलनको मालिक बना दूं? वह कंपनीको बचा लेगा? हां, लेकिन मेरे प्यारे जानवरोंका क्या होगा? जानवर भी केलनको सौंप दूं? उनसे हमेशाके लिए बिछुड़ जाऊं? नहीं। यह विचार ही बड़ी पीड़ा देने वाला था। इसलिए उसने कहा, "केलन, मैं तुम्हें एक शर्तपर मालिक बना सकता हूं। जानवर मेरे पास ही रहेंगे। मंजूर?"

केलन जानता था कि जानवरोंके बिना सरकस कभी नहीं चल सकता। लेकिन वह उनको पानेके लिए किसी अच्छेसे मौकेकी तलाशमें रहेगा। उसे कंपनीको अभी और यहीं हथिया लेना चाहिए। इसलिए उसने शर्त मान ली...और 'कोमन सरकस' अब 'केलन सरकस' बन गया। कोमन अपने जानवरोंके साथ चला गया।

अपने घर आनेपर कोमनने जानवरोंको अपनी नई योजना बताई। उसने कहा, "मैं तुम्हें कुछ ऐसे करतब सिखाऊंगा, जिन्हें देखकर सारी दुनिया दांतों तले उंगली दबा लेगी। मैं एक नयी कंपनी शुरू करूंगा और देश भरका दौरा करूंगा। हम सब नाम कमाएंगे—मैं सरकसके इतिहासमें सबसे बड़े करतब सिखाने वालेके रूपमें और तुम सबसे होशियार करतब दिखाने वालेके रूपमें।"

लेकिन प्राणीके मन कुछ और है, साईके कुछ और। कोमनको निमोनियाने आ दबोचा। बुखार तेजीसे बढ़ता चला गया और उसका जीवन खतरेमें पड़ गया।

जानवर डर गए। वही उनका एक सहारा था। अगर वह मर गया, तो उनकी देखभाल कौन करेगा? उन्होंने उसके अच्छा होनेकी हृदयसे प्राथना की।

कोमन जीवन और मृत्युके बीच झूल रहा था। जानवर उसकी तीमारदारी कर रहे थे। इस तरह दो दिन बीत गए। उसकी हालत चिंताजनक हो गई। बहुत रातको उसने जानवरोंसे कहा, "मेरे और पास आ जाओ, मेरे बच्चो, मेरा अंतिम समय आ गया है..." और फिर जैसे उसे दौरा पड़ गया हो। उसने बातें कीं। वह पागल आदमीकी तरह रोया-हंसा और बड़बड़ाया—"मेरे बेटे... राजा हंसमुख बेटे... तुम्हारी दाईं हथेली पर गोदनेका निशान... मुझे देख लेने दो, बेटे... मेरे पास आओ, मेरे लाडले... आह, हनुमानकी छाप... बेटे, यह कभी नहीं मिटेगी.. भगवान तुम्हारी रक्षा करेगा...वह तुम्हारी हथेलीमें रहेगा... मेरे बेटे..."

जानवरोंको हंसमुख लड़का याद आया और साथ ही वह अंधेरी भयानक रात भी याद हो आई।

हंसमुख कोमनका इकलौता लड़का था। वह हमेशा मुसकराता, खिलखिलाता रहता था, इसी लिए उसका यह नाम पड़ गया था।

छह बरस पहले एक बहुत बड़ी विपदा टूट पड़ी थी। तब हंसमुख केवल ढाई वर्षका था।

कोमनकी पत्नी बेटेको जन्म देनेके फौरन बाद चल बसी थी। सोतेमें बच्चेकी देखरेख करनेके लिए वह रोज रातको एक जानवर तैनात कर जाता। उस अंधेरी और भयंकर रातको सिंहन पहरेपर था। अचानक कोई दबे पांव पीछेसे आया और उसने सिंहनको कोई चीज सुंघा दी और वह उसी समय बेहोश हो गया।

जब वह होशमें आया तब लोग किसी चीजकी तलाशमें हड़बड़ाते हुए और एक-दूसरेपर चिल्लाते हुए इधर-उधर दौड़ रहे थे। कोमन अपने बाल नोच रहा था, दुःखसे जमीनपर लोट रहा था, और रोते रोते पुकार रहा था—"हाय, मेरे राजा बेटे!"

किसीने सिंहनको बेहोशीवाली कोई दवा सुंघा दी थी और बच्चेको उड़ा ले गया था। वह कौन था? उसने ऐसा क्यों किया? कुछ पता न चला। छह वर्ष बीत गए।

आज मृत्यु शैय्यापर कोमन बेहोशीमें अपने बेटेसे बात कर रहा था। बेहोशी दूर हुई, और उसने आखिरी बार जानवरोंसे कहा, "मेरे बच्चो, मैं तुम्हें नये करतब सिखाना चाहता था,....आश्चर्यजनक करतब...एक नया सरकस बनानेके लए... लेकिन हाय, किस्मत को कुछ और ही मंजूर है... मेरे बच्चो... मेरे विदा होनेका समय हो गया...आह, विदा...विदा..."

कोमनका सिर लुढ़क गया। चिम्पनने उसकी नाड़ी देखी। हां, नाड़ी बंद हो चुकी थी।

जानवर खूब रोए-पीटे। लगता था उनका कलेजा ही बाहर निकल आएगा। उनका विलाप रातकी खामोशीको चीर रहा था, लेकिन कोई और शोक मनाने नहीं आया, क्योंकि आसपास कोई रहता ही नहीं था।

जानवरोंको अपनी चिंता हुई। वह जो उनके पिताके समान था, अब नहीं रहा था। वे बेसहारा थे। उनका भविष्य अंधकारमय और अनिश्चित था।

तीन दिन... हार्दिक दुःखके तीन दिन बीत गए। चौथे दिन केलन आया। उसके साथ एक अजनबी भी था।

"मैं तुम्हारी मदद करनेके लिए आया हूं। अगर तुम मेरे सरकसमें आ जाओ, तो मैं तुम्हें खाना और सिर छुपानेके लिए छप्पर दूंगा," केलनने मित्र भावसे सब जानवरोंसे कहा।

केलनका उद्देश्य उनकी सहायता करना नहीं, बल्कि अपनी सहायता करना था। उसके सरकसमें कोई जानवर नहीं था। ये जानवर देशभरमें सबसे बढ़िया थे। कोमनने उसे जानवर देनेसे इंकार कर दिया था। कोमनके मर जानेके बाद केलनने सोचा कि अब वह उन जानवरोंको अपने सरकसमें ले जा सकता है। इसी लिए

(कृपया पृष्ठ ३८ देखिए)

www.kissekahani.com

पड़ोसी को बात पसंद आई। उसने ढिंढोरा पीट कर गांव वालों को जमा किया!
गांव वालों ने पूरी बात सुनी तो वे भी बहुत खुश हुए
हम सब छोटू-लंबू के साथ हैं!
ठीक है, ठीक है!
भाइयो, आप लोग ज्यादा से ज्यादा चंदा दीजिए, जल्दी कीजिए!

गांव वालों ने फौरन सोच कर कहा...
हां, भई! हम लोग ज्यादा से ज्यादा दस-दस रुपये दे सकते हैं। पहले आप लोग हल-बैल ही लाइए!
नहीं! हमें ऐसा काम करना चाहिए कि ट्रैक्टर ही आए। हमें पहले एक बड़ी पूजा करनी चाहिए ताकि भगवान राजी हों और काम में बरकत हो!

गांव में खूब धूमधाम से पूजा हुई। बाद में पता चला कि काफी पैसा तो पूजा में खर्च हो गया, बाकी छोटू-लंबू की खुद की जरूरतों की पूर्ति में। अब ट्रैक्टर किस्तों पर भी नहीं आ सकता था!
कहां भाग रहे हो तुम लोग?
गांव वालों का हमसे कुछ फायदा नहीं हुआ इस लिए हम मुंह काला कर के जा रहे हैं!
गांव वालों का फायदा तुम्हें करना ही होगा। यह रहा हल, तुम दोनों बनो बैल! भगवान ने चाहा तो ट्रैक्टर बाद में जरूर आ जाएगा!
शोहब

ताशकंद होटल,
ताशकंद, २ नवंबर १९६५

प्रिय कल्पना,

कल रातको हम रेल द्वारा लेनिनग्राडसे मास्कोके लिए रवाना हो गए। रेल मास्कोकी ओर तेजीसे दौड़ रही थी और मेरे मस्तिष्कमें लेनिनग्राडकी स्मृतियोंके चित्र बन-बिगड़ रहे थे।

सुबहके ठीक सात बजे मास्को पहुंच गए। हम लोग अपना सामान उठाकर कुछ दूर चले ही थे कि इतनेमें मिस्टर बी. दिखाई दे गए। वह हमें स्टेशनपर लेने आए थे। मिस्टर बी. बड़े दिलचस्प नौजवान व्यक्ति हैं। तीन महीने भारतमें रहकर उन्होंने हिन्दीका अभ्यास किया है। बीच बीचमें हिन्दीमें बातचीत करते हैं। भारतके १८५७ के प्रथम स्वातंत्र्य युद्धपर भी आपने काम किया है। आपका कहना है कि अंग्रेज इतिहासकारोंने इस युद्धको गदरका नाम दिया है, लेकिन यह ठीक नहीं है।

मिस्टर बी. की पत्नी कहीं काम करती हैं, इसलिए उनके बच्चे किंडर गार्टन स्कूलमें पढ़ते हैं। यहां दो प्रकारके स्कूल होते हैं—नर्सरी और किंडरगार्टन। नर्सरी स्कूलोंमें ३ साल तकके और किंडर गार्टनमें ३ से ७ साल तकके बच्चोंको भर्ती किया जाता है। इन स्कूलोंमें शिशुको रखनेके लिए १६ रूबल माहवार देने पड़ते हैं, जिसमें खाना-पीना और बोर्डिंग भी शामिल है।

मकान यहां बहुत बड़ी संख्यामें बनाए जा रहे हैं। मकानोंके अलग अलग ब्लाक बनाकर तैयार रखे जाते हैं और आवश्यकता पड़नेपर उन्हें एक साथ खड़ा कर झटपट मकान बना दिया जाता है। गगनचुंबी अट्टालिकाएं यहां एक-दो महीनेमें ही बनकर खड़ी हो जाती हैं। सामान उठाने वाले छोटे-बड़े क्रेन मकानोंपर काम करते हुए नजर आ रहे हैं। तुम यह जानकर आश्चर्य करोगी कि सन् १९६० से १९८० तक लगभग साढ़े आठ करोड़ मकानोंके निर्माणकी सरकारी योजना है।

मकानोंका किराया यहां आमदनीके अनुसार लिया जाता है। मिस्टर बी. ने बताया कि मकानका किराया और यातायात ये दोनों ही चीजें उनके देशमें बहुत सस्ती हैं। लगभग ७ रूबल माहवारमें दो कमरोंका घर मिल जाता है (सरकारी घरोंका किराया लगभग १६ कोपेक प्रति वर्ग मीटर होता है) जिसमें पानी, बिजली और सर्दीके दिनोंमें कमरेको गरम रखना भी शामिल है।

सामान्यतया यहां कम-से-कम ६० रूबल माहवार ऐसे लोगोंको वेतन मिलता है, जो किन्हीं दिमागी आदि कारणोंसे पढ़ने-लिखनेमें असमर्थ रहे हों। वृद्धावस्थामें प्रति मास ३० रूबलसे लेकर १२० रूबल तक पेंशन मिलती है। स्वास्थ्य ठीक होनेपर भी पुरुष ६० और स्त्री ५५ वर्षकी अवस्थामें पेंशनके हकदार हो जाते हैं।

हम लोग मिस्टर बी. की गाड़ीमें स्टेशनसे सीधे व्नूकोवो नामक मास्कोके हवाई जहाजके पूर्वी अड्डेकी ओर जा रहे हैं। दूर तक लंबी चली जाने वाली सड़ककी दोनों ओर चिनारके वृक्षोंकी पंक्ति दिखाई दे रही है। मीलों लंबे-चौड़े

सोवियत भूमि से . . .

खेतोंके मैदान पड़े हुए हैं, जिनमें सामूहिक खेती की जाती है। दो दिनसे यहां बर्फ पड़नी शुरू हो गई है, इसलिए वृक्षोंकी शाखाओं और झुकी हुई पत्तियोंपर जहां-तहां हिमके कण नजर आ रहे हैं।

हवाई अड्डेका दृश्य बड़ा मनमोहक है। इसका विस्तृत हाल बहुत दूर तक चला गया है। पहली मंजिलपर एक बहुत बड़ा प्रतीक्षालय है, जहां भोजन करनेके लिए सुंदर रेस्तरां है। उपहारकी वस्तुएं खरीदनेके लिए दूकान है। समाचारपत्र बिक रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय टेलीफोन सेवाका भी प्रबंध है। हवाई-जहाजोंके आवागमनकी घरघराहट सुनाई दे रही है।

हम लोगोंने जल्दी जल्दी हाथ-मुंह धोकर नाश्ता किया। शेरेमेत्येवो हवाई अड्डेकी भांति यहां भी कंक्रीटके चौरस मैदान हैं, जिनपर ट्रेलर गाड़ियां यात्रियोंको जहाज तक ले जाती हैं; पैदल नहीं चलना पड़ता।

ताशकंद जाने वाले यात्रियोंका डीलडौल

और वेशभूषासे वे मास्को निवासियोंकी अपेक्षा बहुत भिन्न मालूम होते हैं। पुरुष लबादा और रोएंदार टोपी पहने हुए हैं, स्त्रियां मूल्यवान टोपियां लगाए हुए हैं, दाएं-बाएं उनकी दो वेणियां लटक रही हैं और अलंकारोंसे वे विभूषित हैं। कुछ स्त्रियां बच्चोंको गोदमें लिये हुए हैं। अपनी गठरी-मुठरी लिये यात्री हवाई जहाजमें बैठनेके लिए उत्सुक हैं। हम लोग भी अंदर जाकर अपनी जगहपर बैठ गए।

दोपहरके साढ़े ग्यारह बजे रवाना होकर लगभग ४ बजे हम लोग उजबेकिस्तान गणतंत्र-की राजधानी ताशकंदमें दाखिल हो गए। एक वृद्ध सज्जन एक महिलाके साथ हमें लेने आए थे। वृद्ध सज्जन बड़ी अच्छी उर्दू बोल रहे थे।

हम लोगोंके ठहरनेका इंतजाम छह मंजिल-

मास्को का क्रिमस्की पुल

पिता के पत्र -३

—जगदीशचंद्र जैन

के ताशकंद होटलमें किया गया था। रातको 'बैले' देखनेका कार्यक्रम पहलेसे ही निश्चित कर दिया गया था। जल्दी जल्दी हाथ-मुंह धोकर भोजन करके थिएटर पहुंचे। फिर भी थोड़ी देर हो ही गई।

होटलके सामने सड़क पार करके एक रमणीय फव्वारा है। जिसमेंसे रातके ११ बजे तक पानी गिरता रहता है, गर्मीके दिनोंमें यहां काफी भीड़ रहती है। इसके पास ही अलीशेर नवाई नामका सुप्रसिद्ध ऑपेरा थियेटर है। अलीशेर नवाई १५ वीं शताब्दीका एक प्रतिभाशाली कवि हो गया है जिसे उजबेक साहित्यका जन्म-दाता माना जाता है।

इस थियेटरको १९४७ में सोवियत रूसके प्रसिद्ध वास्तुशास्त्री श्चुशेफने बनाया था। यह चार मंजिलकी विशाल इमारत है। प्रेक्षागृहमें लगभग दो हजार दर्शक बैठ सकते हैं। तीसरी मंजिलपर सात बड़े बड़े हाल हैं, जिनमें सफेद, काले, पीले और नीले आदि रंग-बिरंगे संगमर्मर-के पत्थरोंपर प्राचीन शिल्प कला की हुई है। प्रत्येक हालमें समरकंद, बुखारा, फरगना, खोरेज्म तेरमेज और ताशकंदका कला-कौशल चित्रित है। पत्थर और लकड़ीपर सुंदर नक्काशीका काम किया गया है, दीवारें भित्ति-चित्रोंसे शोभित हैं। रंगमंचके लिए सुंदर मखमलपर स्वर्ण-सूत्रोंसे बेल-बूटे काढ़कर परदा तैयार किया गया है।

आज यहां पुश्किनके बाकची सराय फौण्टेन नामक उपन्यासपर आधारित एक 'बैले' दिखाया जा रहा है। इस नाटिकामें ताशकंदका प्रसिद्ध कलाकार इस्माइल एक उजबेककी बीवीका पार्ट करता है। इस्माइल उमारोफ और काबुलवा-के साथ ताशकंदके सुप्रसिद्ध कलाकारोंमें गिना जाता है। नृत्य-नाटिकाकी संचालिका हैं गलियान इस्माइलवा, जो सोवियत संघमें 'जन-कलाकार' की पदवीसे सम्मानित हैं। नाटिकाका संचालन

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

वह काला-कलूटा, बैंगन लूटा एक अकेला बादल था। रह रह कर उसे अपना अकेलापन अखरता था। पर क्या करता, मजबूर था। सब उससे नफरत करते और चिढ़ाते रहते—'काला-कलूटा . . . बैंगन लूटा. . .'

यह सुनते ही वह बड़ा मायूस हो उठता। वह किसीको भी अपना मित्र बनानेके लिए बहुत आतुर था। परंतु कोई मित्र ही नहीं मिलता था उस बेचारेको! वह दिन-रात नीले आसमानपर डोलता रहता, साथ खेलने वाला दोस्त खोजता फिरता, पर सफलता थी कि अब भी उससे कोसों दूर थी। पर वह निराश नहीं हुआ। दोस्तकी खोज वह तेजीसे करता ही रहा।

एक दिन वह आसमान पर दोस्तकी तलाशमें घूम रहा था। तभी उसकी निगाह जमीनपर खेलते बच्चोंपर पड़ी। उसने जरा नीचे उतरकर मैदानमें खेलते बच्चोंसे बड़े प्यारसे कहा, "बच्चो, क्या तुम मुझे भी अपने साथ खिलाओगे? मैं तुम्हारा दोस्त बननेको तरस रहा हूं; आओ, हम-तुम मिलकर खेलें।"

बच्चोंने चौंककर ऊपरकी तरफ देखा। और सबके सब एकदम चिल्ला उठे: "भागो. . . भागो! यह देखो काला-कलूटा बादल बरसने वाला है। पलभरमें ही सबको भिगोकर रख देगा।"

"अरे, भैया, रुको . . . रुको! मैं बरसूंगा थोड़े ही, मैं तो तुम्हारे साथ खेलूंगा," नन्हे काले-कलूटे बादलने कहा। पर वहां सुनने वाला कौन था? बच्चे तो अपने अपने घरोंकी ओर सरपट भागे जा रहे थे। यह देखकर नन्हे बादलको बहुत निराशा हुई। वह सोचने लगा—'आखिर ये बच्चे मुझसे डरते क्यों हैं?' पर उसकी समझमें कुछ भी नहीं आया।

इसी बातपर सोचता-विचारता वह आगे बढ़ गया। एक सुंदरसे मकानके आंगनमें एक स्त्री अनाज साफ कर रही थी। उसके पास ही आठ-दस लड़कियां गुड्डे-गुड़ियाका विवाह रचा रही थीं। उसको यह ब्याहका खेल खूब पसंद आया। वह जरा नीचे उतरा और ठंडी हवाका एक प्यारा-सा झोंका फेंककर बोल उठा, "बहनो, मैं तुम्हारा भाई हूं। क्या तुम मुझे भी अपने साथ खेलने दोगी?"

तभी बादलकी गरज सुनकर आंगनमें काम करती स्त्री चौंक पड़ी। उसने चटपट अपना सामान समेटा और बच्चोंको आवाज लगाई: "वीणा. . .दीपा. . .चलो, अंदर आ जाओ सबकी सब। देखती नहीं, काला बादल मंडरा रहा है सिर-पर! बस बरसने ही वाला है यह!"

देखते ही देखते गुड़ियाके विवाहके रंगमें

भंग पड़ गया। सब लड़कियां एक ही सपाटेमें जो हाथ आया वह सामान उठाए कमरेमें चली गईं। बादलको यह देखकर खूब गुस्सा आया। वह फिर अपने आपको ही कोसता हुआ और आगे बढ़ा।

कहानी

काला-कलूटा बादल

www.kissekahani.com

उसने सोचा—'जब बच्चे मुझे देखकर डरते हैं, तो अब मुझे बड़ी उम्रवालोंसे दोस्ती करनी चाहिए।'

इसी तरहके कई विचार उसके मनमें आए और गए। वह उनपर सोचता हुआ आगे बढ़ता रहा। कुछ दूर जानेपर एक घने नीमकी छायाके तले कुछ किसान रस्सी बटते नजर आए। इनको देखते ही वह काला-कलूटा बादल इतना प्रसन्न हुआ कि उसका कालापन और गहरा हो गया।

पर अगले ही क्षण जो हुआ, उसे देखकर वह मन ही मन रो उठा। उसे आसमानमें मंडराते देख सारे किसानोंने अपने अपने सनके गटठर उठाए और घरोंकी ओर तेजीसे चल दिए। सबके मुंहसे एक ही स्वर सुनाई दे रहा था — "दौड़ो दौड़ो! बादल चढ़ आया है! अभी बरसेगा, सबको भिगोकर ही रहेगा यह!"

वह काला-कलूटा बादल यह देखकर दांतों तले उंगली दबाने लगा कि उसकी तरफ देखते

गिरिजा 'सुधा'

ही किसान दौड़कर अपनी अपनी झोंपड़ियोंमें घुसते जा रहे हैं। वह बड़ा परेशान था, रह रहकर वह यही सोच रहा था कि आखिर ये सब लोग उससे नफरत क्यों करते हैं। वह बड़ी देर तक सोचता रहा, पर उसके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा।

आखिर वह निराश होकर वापस लौटने लगा। वह कुछ दूर ही गया था कि अचानक ही उसकी भेंट नटखट पुरवैयासे हो गई। पुरवैयाने उसे देखते ही पूछा, "काले-कलूटे. . .बैंगन लूटे, किधर घूम रहे हो तुम?"

वह दुखी हो उठा पुरवैयाके इस प्रश्नसे। भरी भरी आंखोंसे उसने उसकी तरफ देखा : "बहन पुरवैया, मैं अकेला हूं, मेरा कोई दोस्त नहीं, साथी नहीं। मेरा मन तरसता है किसी-के साथ खेलनेको, किसीके साथ दो बातें करने

अब तक .....
नाश्ते के लिये ऐसा आहार उपलब्ध नहीं था

मोहन्ज़
न्यू
लाइफ
कार्न फ़्लेक्स

मोहन्ज़
व्हाइट ओट्स

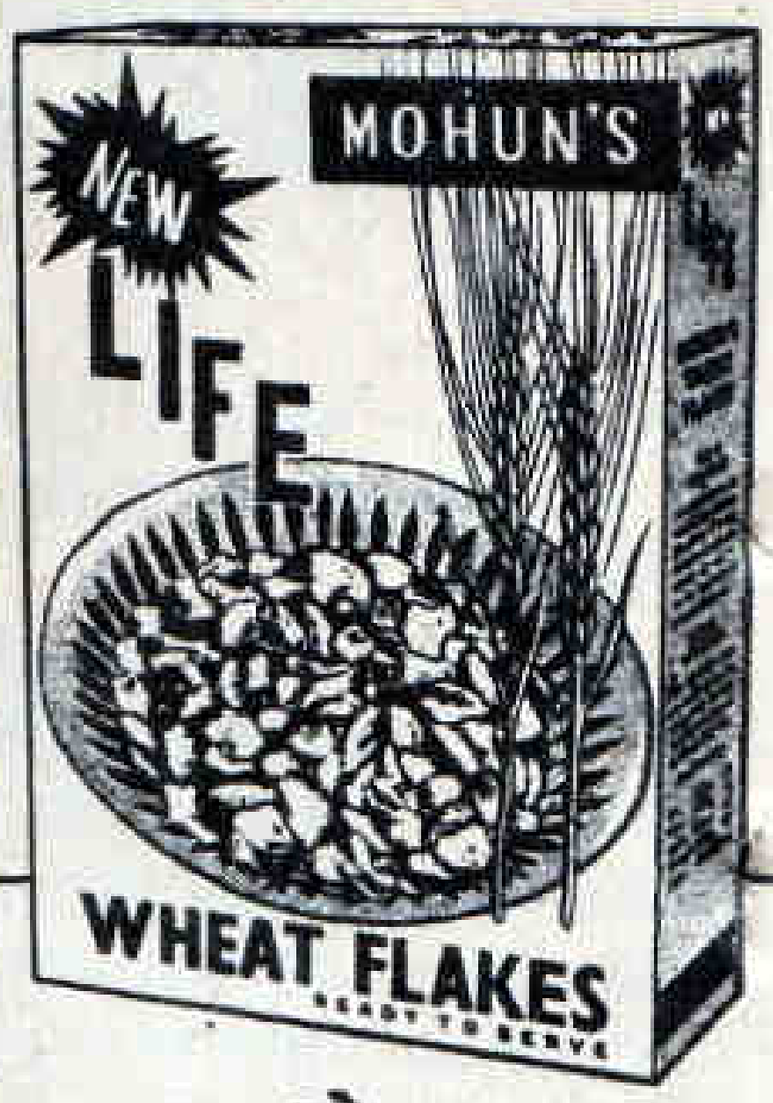

मोहन्ज़
न्यू
लाइफ
व्हीट फ़्लेक्स

मोहन्ज़
प र्ल बा र्ले

११० वर्ष से अधिक का अनुभव विश्वास की गारन्टी है

डायर मीकिन ब्रुअरीज़ लि० स्थापित १८५५

मोहन नगर, (गाज़ियाबाद) यू० पी०

सोलन ब्रुअरी — लखनऊ डिस्टिलरी — कसौली डिस्टिलरी

DMB-NP-759

को। पर, कोई मुझ काले-कलूटेसे दोस्ती नहीं करता, मुझे संग नहीं रखता। मुझे बार बार यही खयाल आता है कि आखिर ऐसा क्यों होता है?"

यह सुनते ही पुरवैया मुस्करा उठी। उसने उसके आंसू पोंछते हुए कहा—"मैं ऐसे कई लोगों-को जानती हूं, जो तुम्हें बहुत प्यार करेंगे और तुम्हारी दोस्ती पाकर खुश होंगे।"

यह सुनते ही वह नन्हा-सा काला-कलूटा बादल उछल पड़ा। वह पूछने लगा, "क्या तुम सचमुच ऐसे लोगोंको जानती हो?"

"तो क्या तुम इसे मजाक ही समझ रहे हो। आओ, मैं तुम्हें उन लोगोंके पास ले चलती हूं। तुम उनसे मिलकर बहुत खुश होगे।"

अगले ही पल वे दोनों नीले आसमानमें साथ साथ चलने लगे। वे चलते रहे, चलते रहे, हरी-भरी चरागाहों और सुंदर सुंदर घाटियोंको लांघते हुए आगे बढ़ते रहे। काला-कलूटा बादल देख रहा था—अब खेतोंकी हरियाली धीरे धीरे कम होती जा रही थी। नदियोंके नामपर सूखे सूखे नाले ही नजर आ रहे थे।

तभी पुरवैया बोल उठी, "उधर देखो, तुमको यहां देखते ही लोग अपने अपने घरोंसे निकलकर बाहर आ रहे हैं और आसमानकी तरफ देखकर मुस्करा रहे हैं, प्रसन्न होकर खिल-खिला रहे हैं।"

बादलने उधर देखा, तो उसका मन खुशीसे झूम उठा। सचमुच ही लोग अपने अपने घरोंसे निकलकर उसकी तरफ इशारा करके खुशी जाहिर कर रहे थे। उसने एक बार फिर गर्वसे सीना तानकर उनकी तरफ देखा और देर तक देखता ही रहा। तभी पुरवैयाने उसको प्रसन्न देखकर कहा—"बैंगन लूटे महाराज, अब तो तुम ही तुम नजर आ रहे हो! ये लोग तुम्हें देखकर खुश हैं। तुम इनकी सूखी धरतीपर बरसो। धीरे धीरे तुम्हारी और इनकी दोस्तीका बंधन मजबूत होता चला जाएगा।"

"पर, मैं तो छोटा-सा बादल हूं। इनकी जरूरत जितना पानी कहांसे लाऊंगा?" नन्हे काले बादलने चिंता प्रकट करते हुए कहा।

"पर तुम अब छोटे बादल कहां रह गए हो। जरा मुड़कर तो देखो पीछेकी तरफ। अब तुम कितने बड़े हो गए हो!" पुरवैयाने अपनी पुरानी आदतके अनुसार मुस्कराते हुए कहा।

तभी काले-कलूटे, बैंगन लूटे नन्हे बादलने अपने आपको पहचाननेके लिए पीछेकी तरफ घूमकर देखा। सचमुच ही वह इतना बड़ा हो गया था कि उसने लगभग सारेका सारा आस-मान ही ढंक लिया था! तभी पुरवैया बोल उठी, "लो, मैं तो चली। अब तुम अपने दोस्तोंमें खेलो-कूदो और मस्त रहो।"

और पुरवैया यह कहकर वापस चली गई। बादलने एक बार फिरसे इधर-उधर दूर तक अपने चहेतोंपर नजर फेंकी और प्रसन्नतामें भर-कर बरसने लगा।

बादलने बरसकर देखते ही देखते सारे वाता-वरणमें खुशीकी एक नई लहर फैला दी। आस-पासके घरोंसे छोटे छोटे बच्चोंकी एक टोली निकल आई। वे सब नाचने और गाने लगे :

पानी बरसे,
बूंदें टपकें—
टप टप टप टप,
भई,
टप टप टप!

उन्हें नाचते देख बादल और भी नीचे उतर आया। वह देखने लगा कि कौन कौन उसे देखकर खुश हो रहे हैं। वह देख रहा था कि एक प्यारी बत्तख अपने चूजोंके साथ किलकती-फुद-कती नाच रही है। मोर अपने बहुरंगी पंख फैलाकर 'मे-आओ, मे-आओ' की रट लगाकर नाच रहे हैं। बादलने भी इन सबको खुश देखकर अपनी दोस्तीका हाथ आगे बढ़ाया।

तभी एक जोरदार शोर गूंज उठा, "ओ काले-कलूटे, बैंगन लूटे अलमस्त बादल! आओ हमारे साथ खेलो-कूदो, नाचो-गाओ।"

नन्हा बादल यह सुनते ही प्रसन्नतासे खिल उठा। वह किलककर बोल उठा, "धन्यवाद, मेरे प्यारे दोस्तो।"

कहा जाता है कि तभीसे नन्हा-सा बादल आसमानमें खेलने आता है, पानी बरसाता है और उसको देखते ही नन्हे नन्हे बच्चे गा उठते हैं :

बरसो राम धड़ाके से,
बुढ़िया मर गई फाके से!

...और यह सुनते ही काला-कलूटा बादल आसमानपर छा जाता है और खुशियां जाहिर करता बरसने लगता है। ●

गहले पर दहला

अरे, भाई, टीपू, तुम तो कहते थे कि तुम्हारी किस्मत का सितारा चमकने ही वाला है, लेकिन यह सब....
बस, देखते जाओ, कोई अच्छा शिकार हाथ लगाने पर ही देर है।

तो यह बात है! लगता है नया धंधा शुरू किया है टीपू ने!
जासूस-शिरोमणि
टीपू

हां, यह कोई नया ज़माना है, लेकिन यह धंधा खानदानी है।

हा-हा-हा, खानदानी धंधा! मान गए, उस्ताद!
हंसने की बात नहीं है, मोती, तुमने.....

कल्लो बदमाश का नाम तो सुना होगा! आज वह मेरी बदौलत ही हवालात की हवा खा रहा है!

क्या कहा? तुम्हारी बदौलत! अच्छा, तो तुम ही तो जिसने मेरे भाई को पकड़वाया था?
मैं... मैं... नहीं... नहीं...
हें....

लो बेटा, थोड़ा मेरे मुक्के का मज़ा भी चखते जाओ
चांद

और खबरदार, जो कभी मुझसे भिड़ने की जुर्रत की.... हड्डी-पसली एक करके रख दूंगा!

टीपू, अब क्या होगा? मैं तो भागता हूं
मैं तुम्हारी तरह कायर नहीं हूं, मैं इसके मुक्के का बदला लेकर रहूंगा।

सुनते हो, कालू, मैं तुम्हारी धमकियों की परवाह नहीं करता।
खैर चाहते हो, तो यहां से दफा हो जाओ ...
वर्ना..... वह लात जमाऊंगा कि....
बड़ा आया लात जमाने वाला....!
अच्छा, तो लो....
धड़ाम
अच्छा, तुम तो अपनी कर चुके, अब जरा मेरे हाथ की सफाई भी देखो....
ओ काली कलूटे बाली, तेरा बचन न जाए खाली—एक... दो... तीन... छू... ऊ... ऊ...
बाप रे, मर गया, मर गया..... हाय राम!
बस इतने में ही चीं बोल गए, जब कि मैंने तुम्हें हाथ भी नहीं लगाया। बेभाव की तो तब पड़ेगी, जब हवाखोरी की हवा खाओगे।

सब्ज़ी की खेती करने में बड़ा मज़ा आता है। स्कूल में हम सब्ज़ी की खेती करना सीख भी रहे हैं।
मेरे पास साग का बीज है। हम अभी उसे बो सकते हैं!
खूब सोचा प्यारे! अभी गर्मी भी बिलकुल नहीं है। तुरत हम बुद्धा है।
तो हम खाली जगह को खोदना हम शुरू कर दें।
मैं पानी लाऊंगा और बीज भी।
दिलीप और उसके साथियों ने सब्ज़ी उगाने की कोशिश की
हाय राम, सारे बीज गिर गये।
तुम गये और सब कुछ बरबाद कर डाला।
नहीं। बरबाद नहीं हुआ है। मेरे 'एवरेडी' टॉर्च से हम लोग अंधेरे में भी सारे बीज बुन सकते हैं।
यह रहा! अब हम इन्हें बो डालें।
४ दिनों के बाद!
देखो, साग निकल आया!
अब हम लोग अपना ही बोया साग खा सकेंगे।
लेकिन सब्ज़ी की खेती में बड़ा मज़ा आया। याद है न, तुम्हारी 'एवरेडी' टॉर्च कितनी काम आई थी।

('पराग' के पिछले अंकोंमें तुम लान टेनिसके बारेमें काफ़ी जानकारी हासिल कर चुके हो। लो, अब इसकी कहानीकी अंतिम किस्त पढ़ो।)

(४)

भारतीय लान टेनिसके शायद सबसे पुराने भारतीय खिलाड़ी हैं मुहम्मद सलीम, जो अपने समय के—१९१५ से १९३० तक—सर्वश्रेष्ठ भारतीय खिलाड़ी तो थे ही, दुनियाके चुने हुए खिलाड़ियोंमेंसे भी एक थे। उनके ही समकालीन थे पारसी खिलाड़ी जे. नौरोजी, इंग्लैण्डमें जिनके प्रदर्शनको देखकर लंदनके 'टाइम्स' ने लिखा था : 'मीलों दूरसे आकर देखने योग्य है इस श्रेष्ठ खिलाड़ीका खेल।' इन दोनोंके बाद आक्सफोर्डके भारतीय छात्र सी. रामास्वामीने भी काफी ख्याति पाई। अकेले, और कृष्णास्वामी नामके दूसरे खिलाड़ीके साथ, उन्होंने कई महत्वपूर्ण टेनिस प्रतियोगिताओंमें शानदार सफलता प्राप्त की थी।

विम्बलडन प्रतियोगिताओंके जन्मके एक साल बादसे ही, कलकत्ता क्रिकेट क्लबने बंगाल लान टेनिस प्रतियोगिताएं आरंभ कर दी थीं, जो भारतकी सबसे पुरानी टेनिस प्रतियोगिताएं हैं।

भारतीय लान टेनिसकी आधार-शिलाको दृढ़ बनानेमें जिन खिलाड़ियोंका हाथ रहा है, उनमेंसे कुछ हैं कृष्णप्रसाद, पी. एल. मेहता, हादी, चिरंजीव, जिम राब्सन, मल्ला राव, फैयजी बन्धु, भंडारी, प्रेम, इरशाद, रणवीर, शमशीर, रामाराव, नारायणराव आदि।

१९२० के आसपास, कलकत्तामें रहने वाले तथा टेनिसमें कुशल जापानियोंकी मददसे जे. एम. सेन गुप्ता, अनादि मुकर्जी आदि क्रिकेट प्रेमियोंने मिलकर भारतीय लान टेनिसका स्तर ऊंचा उठानेके उद्देश्यसे कलकत्ता साउथ क्लबकी स्थापना की। इस क्लबने भारतीय लान टेनिसके लिए जो कुछ किया, वह भारतीय लान टेनिससे संबंधित किसी भी संस्थाने अभी तक नहीं किया है। अप्रत्यक्ष रूपसे यह क्लब ही १९२१ में अखिल भारतीय लान टेनिस एसोसियेशनकी स्थापना और एशियाई लान टेनिस प्रतियोगिताकी शुरूआतके लिए जिम्मेवार है।

भारतीय महिलाओंमें लान टेनिसको लोकप्रिय बनानेका श्रेय भारतीय टेनिसके शुरूके दिनोंकी इन महिला खिलाड़ियोंको है—जेनी सेडीसन, लीना मैकीना, आर. आडानी, प्रमिला, खातूम हाजी, उर्मिला थापर, रीटा डावर, श्रीमती सिंह, श्रीमती मोदी, लीलाराव आदि।

दूसरे महायुद्धके बाद, अंग्रेज और एंग्लोइंडियन खिलाड़ियोंके भारत छोड़ जानेके कारण भारतीय लान टेनिसको काफी हानि पहुंची। पर, जल्दी ही कुछ योग्य तथा तरुण खिलाड़ियोंने भारतीय लान टेनिसको एक अपूर्व उच्चता प्रदान कर दिखाई। इन खिलाड़ियोंमेंसे कुछ थे—दिलीप बोस (प्रथम एशियाई विजेता), नरेशकुमार, प्रेमजीत लाल, जयदीप मुकर्जी, रामनाथन् कृष्णन्, अख्तर अली और एस. मिश्रा।

विम्बलडनकी विजय किसी भी खिलाड़ीके लिए उसकी श्रेष्ठतम विजय मानी जाती है। विम्बलडनकी पुरुषोंकी सिंगिल्स प्रतियोगितामें ज्यादासे ज्यादा ऊंचाई—सेमी फाइनल तक पहुंचनेका श्रेय कृष्णन्को दो बार—१९६० और १९६१ में—मिल चुका है।

इस दृष्टिसे कृष्णन् ही आज तकके हमारे सर्वश्रेष्ठ लान टेनिस खिलाड़ी हैं। सच तो यह है कि पिछले १२–१३ सालोंका भारतीय लान टेनिसका इतिहास कृष्णन्के चारों ओर ही चक्कर लगाता आ रहा है। (समाप्त)

—हरिमोहन

लान टेनिस संबंधी सामान्य ज्ञान

सवाल : भारतके वर्तमान सर्वश्रेष्ठ पुरुष खिलाड़ियोंके नाम बताइए।

जवाब : १९६५–६६ की 'सीडिंग' के अनुसार भारतके पुरुष खिलाड़ियोंका योग्यताक्रम इस प्रकार है : (१) रामनाथन् कृष्णन् (२) जयदीप मुकर्जी (३) प्रेमजीतलाल (४) शिवप्रसाद मिश्र (५) रवि वेंकटेशन (६) श्याम मितोतरा (७) विनय घवन।

सवाल : भारतकी वर्तमान सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ियोंके नाम बताइए।

जवाब : (१) कुमारी निरुपमा वसंत (२) कुमारी लक्ष्मी महादेवन् (३) बेगम खान (४) कुमारी एस. मूर्ति (५) कुमारी लीला पंजाबी।

सवाल : क्या कृष्णन्से पहले भी किसी भारतीय खिलाड़ीको विम्बलडनकी किसी प्रतियोगितामें कोई स्थिति पानेका मौका मिला था?

जवाब : हां, कृष्णन्से पहले गौस मुहम्मद नामके भारतीय खिलाड़ी विम्बलडनके क्वार्टर फाइनल तक पहुंचे थे।

सवाल : डेविस कप प्रतियोगितामें भारतकी हारके क्या कारण रहे हैं?

जवाब : डेविस कप प्रतियोगितामें भारत अपने खिलाड़ियोंके सुरक्षात्मक और निर्बल खेलके कारण ही हार जाता है। हमारे खिलाड़ी हमलेके स्थानपर बचावका खेल खेलना पसंद करते हैं।

जेठ-बैसाखके दिन थे। फसल कट चुकी थी। सारा खेत चटियल मैदान नजर आ रहा था। मियां चने कहीं गए हुए थे। पसीनेमें सराबोर हांफते हांफते चले आ रहे थे। गर्मीके कारण उनका बुरा हाल था। चारों तरफ नजरें दौड़ानेके बाद मियां चनेको एक बड़ा-सा मिट्टीका ढेला दिखाई दिया। वह बहुत खुश हुए, दिल ही दिलमें सोचा, चलो वहां जाकर कुछ देर धूपसे बचकर आराम कर लें; फिर घर जाएंगे।

मियां चने मिट्टीके छोटे छोटे टुकड़ोंसे उलझते-बचते जब मिटटीके उस बड़ेसे ढेलेके करीब पहुंचे, तो एक लंबी-सी ठंडी सांस ली और फिर उनके होंठोंपर मुस्कराहट फैल गई। पसीना सुखाया और अंदर प्रविष्ट हुए। अंदर पहुंचते ही मारे खुशीके उछल पड़े। अपने दोस्त मिस्टर गेहूंसे तपाकसे मिले। कुछ देर दोनोंमें बातचीत होती रही। फिर मियां चनेने कहा, "भई, आपका मकान भी क्या खूब है; न बारिशका नाम, न हवाका डर और न गरमीका भय। हमारा तो देखिए धूपसे बुरा हाल है। हवा चली, तो समझ लो मौत आ गई, चारों तरफ मारे मारे फिरना। हमारी यह जिंदगी भी कोई जिंदगी है!"

मिस्टर गेहूंने मियां चनेका खूब मान-सम्मान किया और कहा, "अब आप कुछ देर हमारे यहां आराम कीजिए। जब धूप कम हो जाए, तो चले जाइएगा।"

मियां चने तो यही चाहते थे। मिट्टीके एक ढेलेसे टेक लगाकर लेट गए। तभी उनकी बगलमें मिस्टर गेहूं भी आकर लेट गए। मियां चनेने कहा, "भई, बुरा न मानो, तो एक बात कहूं; आपका जो यह पेट फट गया है, उसे क्यों नहीं सिलवा लेते।"

मियां चनेकी यह बात गेहूंको बहुत बुरी लगी। परंतु वह उनके अतिथि थे, इसलिए मिस्टर गेहूंने मौन रहना ही ठीक समझा। शाम हुई, मियां चने चल दिए और चलते चलते मिस्टर गेहूंसे कहते गए, "भाई साहब, कोई अच्छा-सा डाक्टर देखकर अपना फटा पेट सिलवा लेना न भूलना; बड़ा बेढंगा मालूम होता है।"

अब मियां चने जब भी उस ओरसे गुजरते, तो मिस्टर गेहूंको शर्मिंदा करनेके लिए बुलंद आवाजमें कहते, "अरे, भाई साहब...मिस्टर गेहूं साहब...आपने अपना फटा हुआ पेट सिलवाया कि नहीं।" मिस्टर गेहूंका सिर नीचा हो जाता। उनके मस्तिष्कमें कोई ऐसा उत्तर नहीं आता था जिससे वह मियां चनेको शर्मिंदा कर सकते। मिस्टर गेहूं रात-दिन इसी सोचमें रहने लगे कि मियां चनेको कैसे पराजित करें।

एक दिनकी बात है। हवा जोरोंसे चल रही थी। मटर खान गोल-मटोल ढोल-से तो थे ही, लुढ़कते हुए मिस्टर गेहूंके घरपर आ धमके। मिस्टर गेहूं अपने बिछुड़े साथीसे जी भरकर मिले और अच्छी तरहसे उनकी आवभगत की। परंतु मिस्टर गेहूं दुखी थे, इसलिए उनका चेहरा फीका-

सा लग रहा था। चेहरेकी रंगत देखकर मटर खानने कहा, "दोस्त, आपका चेहरा उतरा हुआ क्यों है? कुशल तो है?"

मिस्टर गेहूंने सोचा, 'यह हमारे बचपनका

साथी हूं। इससे क्या छिपाना। क्यों न इससे ही हालेदिल कह सुनाऊं। शायद यह कोई मुंहतोड़ जवाब बता दे जिससे मैं मियां चनेको नीचा दिखा सकूं।'

मिस्टर गेहूं अपने इस राजको दूसरोंसे कहना अपने ऊपर कीचड़ उछालनेके बराबर समझते थे। परंतु उन्होंने हृदय कड़ा करके मटर खानसे कह ही दिया: "जब मियां चने हमारे मकान-की ओरसे निकलते हैं, तो हमपर आवाजें कसते हैं और कहते हैं कि अपना यह फटा हुआ पेट किसी डाक्टरसे सिलवा लो। भला यह कितने शर्मकी बात है। डर है, मैं मुहल्लेके लोगोंमें बदनाम न हो जाऊं। और अगर गलीके लड़कोंको यह पता चल गया, तो मेरा घरसे निकलना भी दूभर हो जाएगा। यदि आप इसका उत्तर बता दें, तो मैं आपका एहसान उम्रभर नहीं भूलूंगा। मैं चाहता हूं कि मियां चनेको एक बार लज्जित करदूं, ताकि वह भविष्यमें किसीकी तौहीन न करें।"

मटर खान अपने मित्रकी बेइज्जती कैसे बरदाश्त कर सकते थे। वह लाल-पीले हो गए और मूंछोंपर हाथ फेरकर बोले, "अगर आप कहें, तो अभी जाकर दो घूंसे जमा आऊं।"

मिस्टर गेहूंने कहा, "नहीं, भाई, कोई सीधा-सादा-सा ऐसा उत्तर बता दो, जिससे वह खुद ही लज्जित हो जाए यानी सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटने पावे।"

मटर खान मुस्कराए और कहा, "अच्छा, अब जब वह कंबख्त इधर आए और कहे कि तुम अपना पेट सिलवा लो, तो तुम भी उससे कहना—मियां चने, तुम भी तो इतनी लंबी नाक लिए फिर रहे हो. इसका आपरेशन क्यों नहीं करवा लेते। अपनी नाक जरा ठीक करवा लो। देखो तो, तुम्हारे अच्छे-खासे सुडौल शरीरपर यह लंबी नाक कैसी भद्दी दिखाई देती है।"

अब क्या था, मिस्टर गेहूं फूले न समाए। और उसी दिनसे मियां चनेके इंतजारमें रहने लगे कि कब मियां चने दिखाई दें और वह जवाब दें।

वह दिन जल्द ही आ गया। आखिर मियां चने आ ही धमके। आते ही उन्होंने कहा, "मिस्टर गेहूं साहब, आपने अपना पेट सिलवाया कि नहीं!" मिस्टर गेहूं अब भला कहां चूकने वाले थे। फौरन कह उठे, "मियां चने साहब, यह लंबी नाक जो बगले की चोंचकी तरह है, आप क्यों लिये फिर रहे हैं। इसका आपरेशन करा लीजिए न। आपका शरीर कितना बेढंगा मालूम होता है।" यह सुनते ही मियां चने खिसिया गए।

उस दिनसे अब जब कभी उधरसे मियां चने गुजरते हैं, तो पहले चारों तरफ नजरें घुमाकर देखते हैं कि कहीं मिस्टर गेहूं तो नहीं बैठे हैं। ●

अली लतीफ़

कहानी

लम्बी नाक

www.kissekahani.com

सरकस (पृष्ठ २३ से आगे)

वह आया था। "मेरे सरकसमें आ जाओ," उसने दुबारा निमंत्रण दिया।

"हम नहीं आएंगे," चिम्पनने जानवरोंकी तरफसे कहा, क्योंकि वह उनका नेता था।

"अच्छी तरहसे सोच-विचार लो, जल्दबाजी न करो," केलनने सलाह दी। "कोमन मर गया है और अब मेरे सिवाय तुम्हारी मदद करने वाला कोई नहीं है। मेरा सुझाव मत ठुकराओ। यह नादानी है।"

"तुम चाहो, तो हमें नादान समझ लो, लेकिन हम तुम्हारे सरकसमें नहीं आएंगे," चिम्पनने कहा।

"नहीं आओगे?" केलनने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।

"हां, हम नहीं आएंगे," चिम्पनने कहा।

उसी क्षण केलनका रवैया बदल गया। वह अपने साथीकी तरफ मुड़ा: "वह कागज तो निकालो जरा!"

अजनबीने काला कोट, काला चोगा, गलेके कालरमें लटकती हुई दो सफेद पट्टियां, पतलून और जूते पहने हुए थे। वह वकील था।

"वकील साहब, इन मूर्खोंको वह कागज पढ़कर सुना दो," केलनने कहा।

वकीलने अपनी जेबमें हाथ डाला, एक गोल लपेटा हुआ कागज निकाला, उसे खोला और फिर जानवरोंसे कहा, "तुमने एक वसीयतके बारेमें सुना होगा, है न? यह वही वसीयत है। किसकी वसीयत? कोमनकी वसीयत—और इस वसीयतमें उसने यह मकान केलन साहबको उपहारके रूपमें दिया है। इसका मतलब है कि यह मकान केलन साहबका है। समझ गए? तुम्हारा इसपर कोई अधिकार नहीं है।" और वह जवाब पानेके लिए रुका।

जानवर कानून नहीं जानते थे। वे वकील नहीं थे। न वे कभी कचहरी गए थे। वकीलने एक लंबा कानूनी भाषण झाड़ डाला। बेचारे जानवरोंकी समझमें कुछ नहीं आया। लेकिन वकीलने इस बातकी कोई परवाह नहीं की और वह बोलता चला गया, बोलता चला गया। फिर उसने अंतमें कहा, "इसलिए, मैं कहता हूं कि तुम्हारा इस मकानपर कोई अधिकार नहीं है। समझ गए? यह केलन साहबका है, समझ गए? ये तुम्हें निकाल देंगे—मतलब, तुम्हें दरवाजा दिखा देंगे। समझ गए?"

केलनने एक कदम आगे बढ़ाया। "मैं तुमसे आखिरी बार पूछता हूं—तुम मेरे सरकसमें आओगे या नहीं?" उसने कठोर स्वरमें पूछा।

सिंहनको ताव आ गया। उसकी आंखोंसे चिनगारियां निकलने लगीं। वह जोरसे दहाड़ा और फिर केलनपर झपटने ही वाला था कि कोचिम्पनने जल्दीसे उछलकर उसे दाढ़ीसे पकड़ लिया। "तुम्हें शर्म आनी चाहिए। इतनी जल्दी अपना सबक भूल गए हो। आओ, गिनो, सौ तक गिनो।" उसने आज्ञा दी।

शेरको गुस्सेके दौरे पड़ते थे। गुस्सेपर काबू पानेसे पहले वह खूंखार हो जाता था। कोमनने सिंहनके लिए लिए एक तरीका निकाला था—सौ तक गिनती गिननेका। लेकिन मालिक जानता था कि सिंहन यह भूल भी सकता है, इसलिए उसने कोचिम्पनसे कह रखा था कि जब कभी जरूरत पड़े, वह शेरको याद दिला दे।

एक... दो... तीन... सिंहन गिनने लगा—और जब वह बारह तक पहुंचा, तो उसका गुस्सा ठंडा पड़ चुका था। इस बीच केलन और जंबू लोमड़ने एक-दूसरेको कनखियोंसे देखा। कोचिम्पनने यह देखा, तो वह समझ गया कि उन दोनोंके बीच आंखों ही आंखोंमें कुछ तय हो गया है, लेकिन क्या तय हुआ है, वह यह नहीं समझ पाया।

"केलन साहब, हम आपके सरकसमें काम नहीं करेंगे—यह बात पक्की है," नेता चिम्पनने कहा।

"अच्छा तो मैं तुम्हें एक महीनेकी मोहलत देता हूं। एक महीने बाद क्या होगा, यह तुम्हें मेरा वकील बताएगा," केलनने कहा।

वकील फिर बहुत देर तक कानूनपर बोलता रहा और फिर उसने खुलासा इस तरह बयान किया, "जब मोहलत खत्म हो जाएगी, तो हम तुम्हें कानूनके अनुसार इस घरसे निकाल देंगे। समझ गए?" उसने वसीयतको फिर गोल लपेटा और अपनी जेबमें खोंस लिया।

केलन चला गया और उसके साथ वकील भी चला गया। सब जानवर सोचमें पड़ गए।

"साथियो, चाहे जो हो, मैं यह जगह नहीं छोड़ूंगा, न मेरा भाई छोड़ेगा," चिम्पनने घोषणा की। "तुममेंसे जो कोई अपना भाग्य कहीं और जाकर संवारना चाहे, वह जा सकता है। हम सब अब तक इकट्ठे रहे हैं; बिछुड़नेमें बड़ी तकलीफ होती है, लेकिन हमें यह तकलीफ बहादुरीके साथ सहनी पड़ेगी।"

"मैं चिम्पनके साथ जिऊंगा-मरूंगा," सिंहनने कहा।

"और इसी तरह मैं भी," गजनने कहा।

दंतुला चीते, कालू भालू, ऊंट और घोड़ोंने भी यही निश्चय किया। लेकिन तीन जानवर चले गए। वे थे नजलू चीता, लालू भालू और जंबू लोमड़।

चिम्पन और उसके साथी थके हुए और उदास थे। फिर भी वे बहादुरीके साथ वहीं डटे रहे।

आधी रात हुई। चिम्पनको एक सपना आया, बहुत अजीब सपना। वह उछला। वह बड़ा उत्तेजित था। उसने दूसरोंको जगाया और उन्हें अपने सपनेके बारेमें बताया—"दोस्तो, तुम मानो या न मानो, लेकिन मुझे सपनेमें अपने प्यारे मालिक दिखाई दिए। उन्होंने मुझसे कहा कि मेरी आत्मा तुममें एक महीने तक बसी रहेगी और तुम्हें वे आश्चर्यजनक करतब सिखाएगी, जिनके बारेमें मैंने तुम्हें मरनेसे पहले बताया था।" और फिर चिम्पनने विस्तारसे वे करतब बताए। उसके दोस्त हैरान थे। क्या ऐसा भी हो सकता है?

और सुबह होते ही नए सिरेसे प्रशिक्षण शुरू हो गया। चिम्पनमें एक अद्भुत परिवर्तन आ गया था। उसकी आवाज, उसके हाव-भाव बिल्कुल कोमन जैसे हो गए—और जानवर समझ गए कि उनके मालिककी आत्मा ही चिम्पनके माध्यमसे उन्हें करतब सिखा रही है।

दिन प्रति दिन बराबर कड़ी मेहनत चलती रही। पांचवें दिन एक आश्चर्यजनक घटना हुई। लालू, नजलू और जंबू वापस आ गए।

"मैं चीतोंके बीचमें रहनेके लिए जंगलमें गया। लेकिन उन्होंने मुझे लात मार दी। कुछने तो मेरे मुंहपर थूका," नजलूने कहा।

"क्यों?" गजनने पूछा।

"जंगलके चीतोंने मुझसे कहा कि तुम सरकसके चीते हो। तुमने कुत्तेकी तरह आदमीकी सेवा की है। हम आजाद चीते हैं और तुम्हें नहीं चाहते। फौरन जंगलसे बाहर चले जाओ। तब वहां ठहरनेकी मेरी हिम्मत नहीं हुई। मुझे डर हुआ कि वे मुझे फाड़कर रख देंगे," नजलूने समझाया।

"जंगलके भालुओंने मेरे साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया," लालूने सिर झुकाए सूचना दी।

लेकिन जंबूकी कहानी बिल्कुल निराली थी। "प्यारे दोस्तो," जंबूने कहा, "मेरी आत्माने मुझे चैन नहीं लेने दिया। उसने मेरे कानोंमें धीरेसे कहा—'जंबू, तुम अपने दोस्तोंको मुसीबतके समयमें छोड़ आए हो। तुम्हें उनके दुर्भाग्यमें हिस्सा बंटाना चाहिए था? वापस जाओ, जंबू, और उनसे माफी मांग लो।' मैंने अपनी आत्माका कहा माना। मेरे प्यारे दोस्तो, मुझे माफ कर दो। मुझे माफ कर दो, दोस्तो।" वह यह कहकर आंसू बहाने लगा।

कोचिम्पनको कुछ संदेह था। उसने अपने भाईकी तरफ अर्थपूर्ण दृष्टिसे देखा। चिम्पन समझ गया, लेकिन उसने ऐसा दिखावा किया जैसे कुछ भी न समझा हो। उसने सुबहके भूले-भटके दोस्तोंको गले लगा लिया: "मुझे बहुत खुशी हुई कि तुम लोग वापस आ गए हो। हम सब फिर इकट्ठे काम करेंगे। अब बाकी लोगोंमें शामिल हो जाओ और नए करतब सीखना शुरू करो।"

धीरे धीरे उन्होंने अपने करतब पक्के किए। तीन सप्ताह बाद नए करतब पेश करते हुए उनमें कहीं कोई झिझक नहीं थी, कोई गलती नहीं थी, कोई दोष नहीं था। उनके पुराने करतब बहुत आसान और सीधे-सादे थे। ये नए बहुत कठिन और अद्भुत थे। जानवर खुद हैरान थे। अगर लोग ये करतब देखकर बेहोश हो जाएं, तो उन्हें कोई आश्चर्य नहीं होगा।

आखिर एक महीनेकी मोहलत खत्म हो गई। कानूनके अनुसार जानवरोंसे मकान खाली करानेके लिए केलन और वकील आए। लेकिन वहां उनमेंसे कोई दिखाई नहीं दिया। हां, मेजपर एक पत्र पड़ा हुआ था। केलनने पढ़ा—

'प्रिय केलन साहब,

कानूनके अनुसार मकानपर कब्जा जमा लीजिए। लेकिन हम आपको यह बता दें कि हम यह मकान छोड़कर जा रहे हैं, यह देश नहीं। हमने अपना एक सरकस बना लिया है। उसका उदघाटन आजसे नवें दिन यहीं कण्णूरमें होगा। कृपया अवश्य पधारिए। साथमें वकील साहबको भी लाएं, तो बड़ा अनुग्रह होगा।'

आपका चिम्पन
कुत्ते जानवरोंका सरकस

(क्रमशः)

(अनुवाद : ललित सहगल)

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"सोचता हूं कि अगर हम पैदा न होते, तो देश की खाद्य-समस्या इतनी गंभीर न होती!"

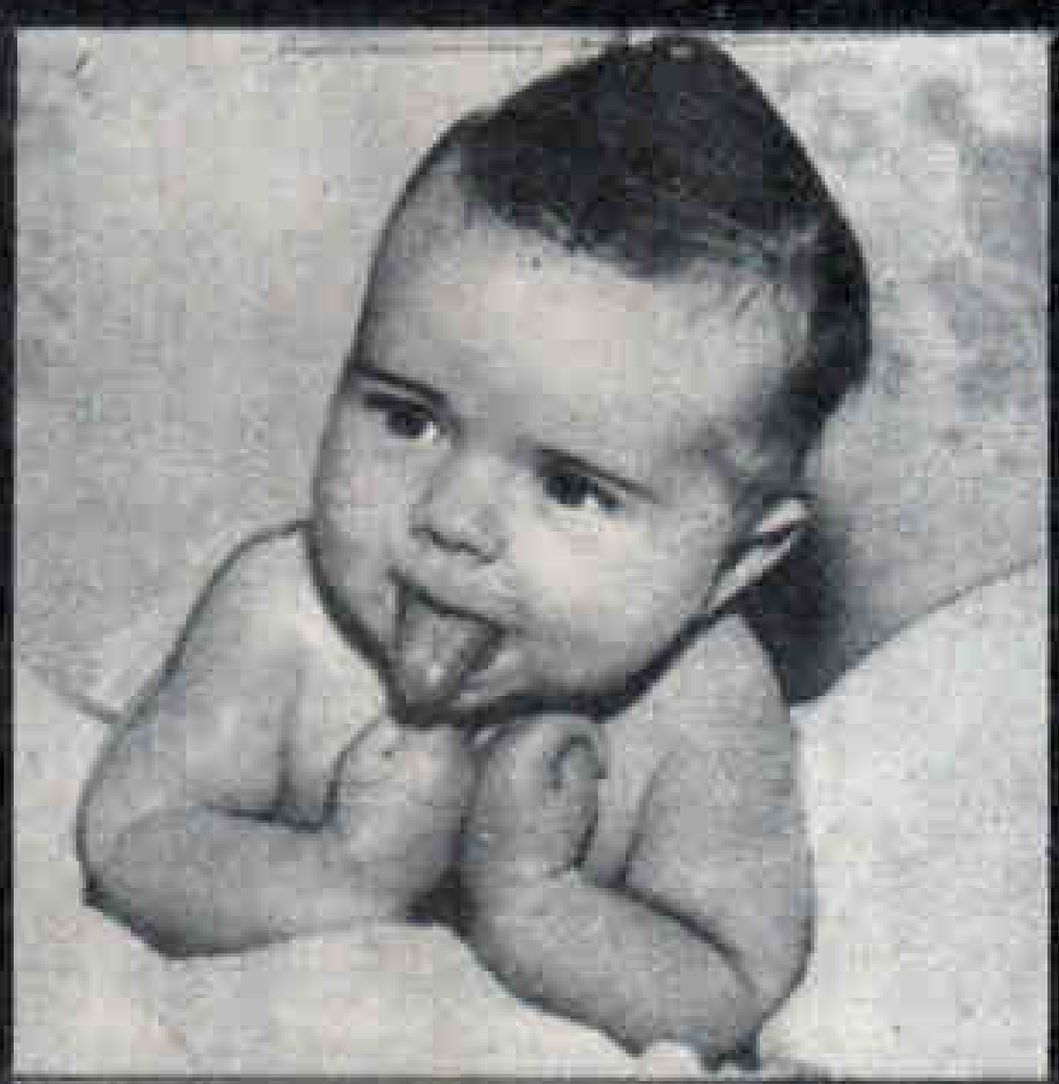

"अरे, तुम भी क्या बेकारकी बात सोचते हो; हम कौन अपने देशका दूध पीते हैं!"

सोरठ का डाक-टिकट

राजवाड़ों के डाक-टिकट

—गजराज जैन

यद्यपि अब राजा-रानी, राजकुमार और राजकुमारियां किस्से-कहानियोंकी ही चीजें रह गए हैं, किंतु बीस वर्ष पहले तक केवल भारतमें ही ६०० के लगभग राजा-महाराजा और नवाब थे जो अपनी अपनी रियासतके एकछत्र शासक होते थे।

स्वतंत्रताके बाद भारत संघमें विलीन हो जानेके कारण इन रियासतों और उनके शासकोंके नाम इतिहासकी सामग्री मात्र बनकर रह गए। हो सकता है कि कालांतरमें इन सबको लोग भूल जाएं, परंतु एक वस्तु ऐसी भी है जो इनकी स्मृतिको कभी कम न होने देगी; वह है इन रियासतों द्वारा अपनी डाक-व्यवस्थाके लिए चलाए गए डाक-टिकट।

स्वतंत्रताके पूर्व कागजके जिन छोटे छोटे टुकड़ोंको कोई पूछता भी न था, वे ही आज संसारभरके डाक-टिकट संग्रह-कर्ताओंके लिए आकर्षणका महत्वपूर्ण केंद्र बन गए हैं। अमरीका और इंगलैंडमें तो बहुतसे लोग इन्हीं टिकटोंके संबंधमें विशेषज्ञता प्राप्त करनेमें लगे हुए हैं। 'पराग' के पाठकोंकी जानकारीके लिए इन टिकटोंसे संबंधित कुछ महत्वपूर्ण बातोंका उल्लेख यहां किया जा रहा है।

डाक-टिकटोंकी दृष्टिसे इन रियासतोंको दो भागोंमें बांटा जा सकता है— परंपरागत रियासतें और सामंती रियासतें। प्रथम श्रेणीमें वे रियासतें आती हैं जो तत्कालीन ब्रिटिश भारतके डाक-टिकटोंपर ही अपना नाम छपवाकर अपने क्षेत्रमें चलाती थीं। डाक संबंधी एक समझौतेके अनुसार उस समयकी सरकार अपने टिकटोंपर इन रियासतोंके नाम छापकर केवल लागत मूल्यपर इनको दे देती थी। ऐसी रियासतें कुल छह थीं—ग्वालियर, चंबा, जींद, नाभा, पटियाला और फरीदकोट। इनमेंसे ग्वालियरको ही यह गौरव प्राप्त हुआ कि उसने अपने टिकटोंपर देवनागरी लिपिका स्थान दिलवाया। शेष रियासतोंके टिकटोंपर उनके नाम केवल रोमन लिपिमें ही छपते रहे। इन टिकटोंपर नाम छापनेका काम पहले कलकत्तेके केंद्रीय छापाखानेमें होता था, इसलिए महारानी विक्टोरियाके ऐसे नामांकित टिकटोंमें अनेक महत्वपूर्ण और रोचक गलतियां पाई जाती हैं। सन् १९२७ से नामोंकी छपाईका काम नासिकके सुरक्षा प्रेसको सौंप दिया गया। तबसे कोई उल्लेखनीय गलती नहीं हुई।

द्वितीय श्रेणीमें वे रियासतें आती हैं, जो अपने डाक-टिकटोंकी छपाईका प्रबंध स्वयं करती थीं। विचित्र डिजाइनों और भद्दी छपाईके कारण इनमेंसे कई रियासतोंके डाक-टिकट तो इतने अनाकर्षक होते थे कि डाक-टिकट संग्रहके शौकीनोंमें वे आज भी 'कुरूप' के नामसे जाने-पहचाने जाते हैं। इनकी छपाई-व्यवस्था भी बड़ी विचित्र थी। अधिकतर रियासतें अपने राज्य-चिह्नको लकड़ी या धातुमें खुदवाकर, सादे कागजपर उससे डाक-टिकट छाप लेती थीं। कुछने इनकी छपाईका प्रबंध स्थानीय लिथो प्रेसोंमें, कुछने जेलोंमें और किसी किसीने तो साबुन फैक्ट्री जैसी अप्रत्याशित जगहोंमें कर रखा था। इसलिए इनमें छपाई संबंधी भयंकर भूलोंका पाया जाना स्वाभाविक है। यहां तक कि अधिकारियोंकी लापरवाहीका लाभ उठाकर बहुतसे नकली और जाली टिकट भी तैयार हो जाते थे और सरकारी खजानों द्वारा ही जनताको बेच दिए जाते थे।

इस जालसाजीको रोकने और अपने डाक-टिकटोंको प्रामाणिकता प्रदान करनेके लिए भी कुछ प्रयत्न किए गए। भोपालने अपने प्रारंभिक डाक-टिकटोंमें डिजाइन उभरी हुई अंकित की। बुशाहिरके डाक-टिकटोंपर राजकुमार रघुनाथसिंहके हस्ताक्षरोंकी मुहर लगाई जाती थी जो कि

कुछ रियासतोंके डाक-टिकट जिनका क्रम इस प्रकार है—१–मैसूर, २–जयपुर, ३–ओरछा, ४–कोचीन, ५–किशनगढ़, ६–बहावलपुर, ७–चरखारी, ८–हैदराबाद, ९–इंदौर, १०–त्रावणकोर, ११–भोपाल, १२–नाभा, १३–चंबा, १४–ग्वालियर, १५–पटियाला, १६–जींद

उस समय अपनी रियासतके डाक-विभागके संचालक भी थे। दतियाके टिकटोंपर महाराज सर भवानीसिंहकी गोल मुहर लगाई जाती थी।

देशी रियासतोंमें १८६४ ई. में सर्वप्रथम सोरठ राज्यने अपने डाक-टिकट जारी किए। कोचीनने अपने छह महाराजाओंके राजत्वकाल-में छिद्रण और पुनर्मूल्यांकन संबंधी सर्वाधिक विभिन्नताएं प्रस्तुत कीं। भोपालके टिकटोंपर हिज्जे संबंधी भूलें सबसे ज्यादा पाई जाती हैं। रियासती टिकटोंमें बहावलपुर (अब पाकिस्तान-में) ने सबसे सुंदर टिकट निकाले, क्योंकि वहांके नवाबको स्वयं डाक-टिकट संग्रहका शौक था और ये टिकट इंग्लैंडमें छपाए जाते थे।

भारत संघमें विलीन होनेके साथ ही इन रियासतोंकी डाक-सेवाएं भी भारत सरकारके डाक-विभागके अंतर्गत आ गईं और धीरे धीरे उनके अपने डाक-टिकटोंका प्रचलन भी बंद हो गया। भारतके स्वतंत्र होने तक रियासतोंके डाक-टिकटोंकी ओर संग्रहकर्ताओंका विशेष ध्यान नहीं गया, परंतु पिछले दस वर्षोंमें उनकी मांग सिर्फ भारतमें ही नहीं, दूर-दूर विदेशोंमें भी बहुत ज्यादा बढ़ी है। फलस्वरूप कौड़ियोंके मोल मिलने वाले इन डाक-टिकटोंकी कीमत हजारोंमें आंकी जाने लगी है और जिनके पास इनका संग्रह है वे इनके व्यापारसे अच्छा-खासा लाभ उठा सकते हैं। ●

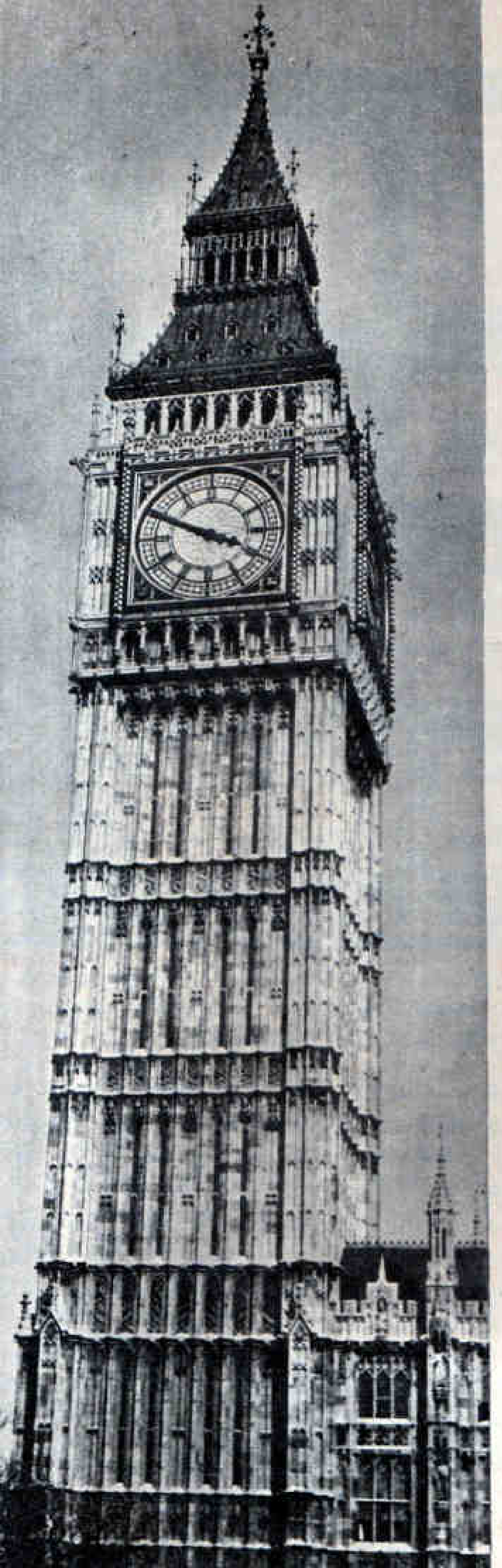

संसार की सबसे बड़ी घड़ी

बिगबेन

—मनोरमा दीवान

ब्रिटेनके रेडियो बी. बी. सी. से तुमने घड़ीके घंटोंकी आवाज प्रायः सुनी होगी। यह आवाज दुनियाकी उस प्रसिद्ध घड़ीकी है, जिसे एक प्रकारसे संसारकी सबसे महत्वपूर्ण घड़ी कहा जा सकता है। इसलिए न केवल बिगबेन अर्थात् लंदनकी इस विश्व-विख्यात घड़ीसे संसार भरमें समय मिलाया जाता है, बल्कि इसीसे विश्वको कई बड़ी बड़ी घटनाओंका ज्ञान होता रहा है और शायद होता रहेगा। उदाहरणके लिए ११ नवंबर १९१८ को जब इसने धीरे धीरे ग्यारह बजाए, तो ब्रिटेनके जनसाधारणने समझ लिया कि युद्ध समाप्त हो गया।

फिर २१ वर्ष पश्चात् ३ सितंबर १९३९ को इसने ग्यारह बजाए, तो संसारको मालूम हो गया कि दूसरा युद्ध फिर शुरू हो गया। इसी प्रकार जर्मनीके हथियार डालने, जापानकी पराजय और युद्धकी नियमपूर्वक समाप्तिकी घोषणा भी 'बिगबेन' के द्वारा ही होती रही है।

यह जानकर शायद तुम्हें अचंभा होगा कि 'बिगबेन' घड़ीका नाम नहीं, बल्कि इसके घंटेका नाम है, जो साढ़े तेरह टन भारी है और जिसके बजानेसे आवाज पैदा होती है।

घड़ीके चार डायल हैं और हर डायलका घेरा २३ फुट है। अंक दो फुट लंबे हैं और मिनिटोंके रिक्त स्थानका क्षेत्रफल एक वर्गफुट है। इसकी सुइयां तांबेकी हैं और १४ फुट लंबी हैं। इनका वजन लगभग ढाई मन है और कम-से-कम चार आदमी ही इन्हें हटा सकते हैं। इस घड़ीका ठीक समय बतानेके लिए ही एक विशेष तरीका प्रयोग किया जाता है और वह यह है कि इसके पेंडुलममें एक तश्तरी-सी लगी होती है और जब घड़ी सुस्त होने लगती है, तो इस तश्तरीपर एक पेनी या आधा पेनीका सिक्का रख दिया जाता है, ताकि उसके भारसे इसकी गति कुछ बढ़ जाए और जब घड़ी ठीक समय देने लगती है, तो सिक्का हटा लिया जाता है।

बिगबेनके हर डायलके नीचे लैटिन अक्षरोंमें एक वाक्य लिखा हुआ है, जिसका अर्थ यह है कि 'ईश्वर महारानी विक्टोरियाकी रक्षा करे'।

ब्रिटेनके राष्ट्रीय जीवनमें इस घड़ीका महत्व यह है कि जब तक पार्लियामेंटकी सभा होती रहती है, इसकी मीनारमें बराबर प्रकाश होता रहता है। जब रोशनी बंद होती है, तो पता चल जाता है कि पार्लियामेंटकी सभा समाप्त हो गई है। इसी प्रकार जब शासक राष्ट्रमें होता है, तो घंटाघरसे लाल रंगका प्रकाश दिखाई देता है और जब नहीं होता, तो वह प्रकाश दिखाई नहीं देता।

इस घड़ीका नक्शा लंदनके एक घड़ीसाजने तैयार किया था, जिसका नाम ई. जे. डेंट था, लेकिन काम समाप्त

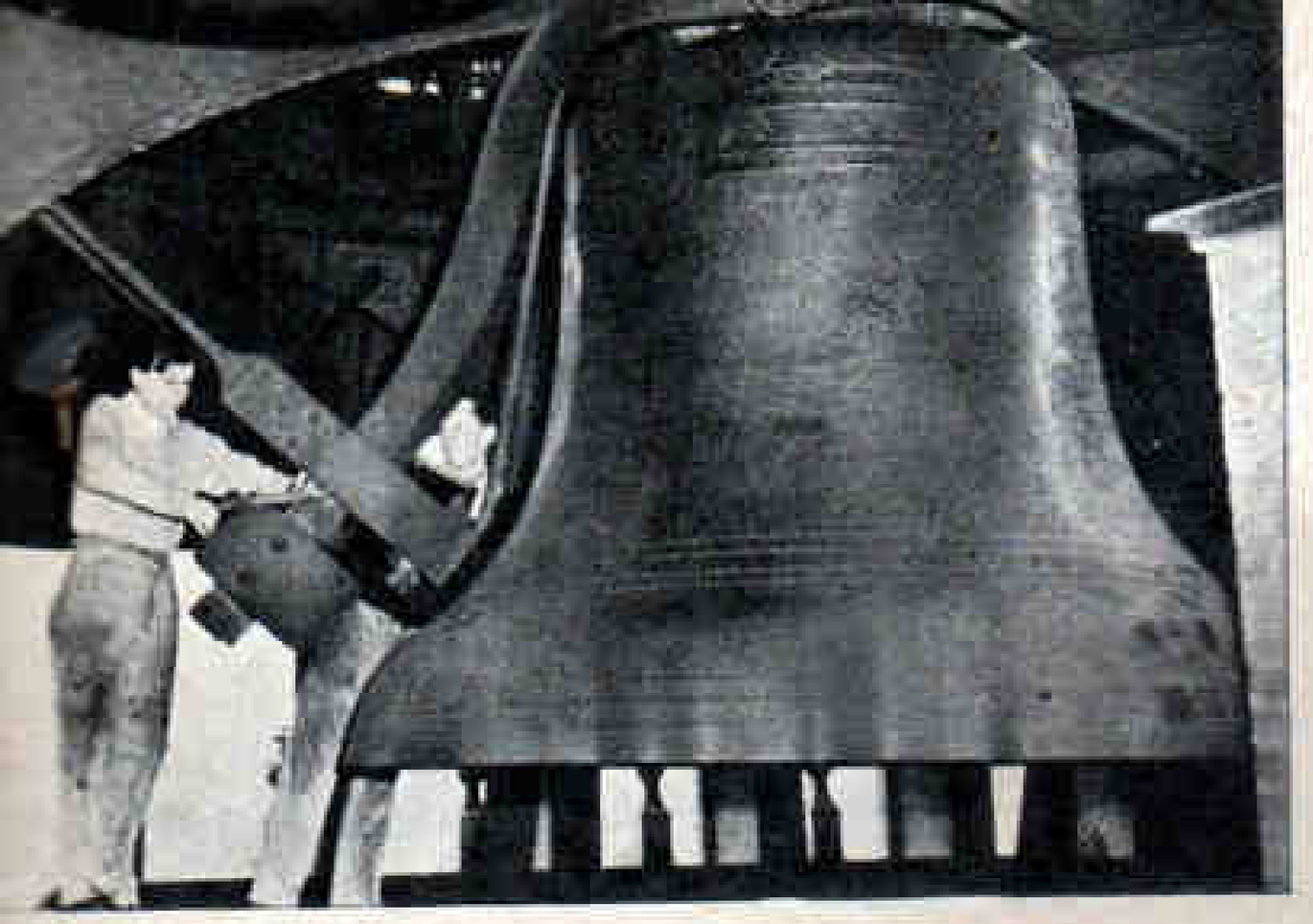

बिगबेन घड़ी का साढ़े तेरह टन वजन का विशालकाय घंटा

करनेसे पूर्व ही सन् १८५३ में उसका देहांत हो गया। घड़ी तो १८५४ में तैयार हो गई थी लेकिन वह मीनार (टावर), जिसमें इसको स्थापित करना था, पांच वर्ष बाद तैयार हो सकी।

जब इस घड़ीको स्थापित करनेका प्रश्न उत्पन्न हुआ, तो बड़ी कठिनाइयां सामने आईं। एक यह कि इसके लिए जो १६ टन वजनका घंटा तैयार हुआ था, उसमें दरार आ गई थी। इसलिए उसको तोड़कर दोबारा ढालना पड़ा। वजन कुछ कम करके साढ़े १३ टन कर दिया गया। दूसरी कठिनाई यह सामने आई कि इतने भारी घंटेको इतनी ऊंचाई तक कैसे पहुंचाया जाए। खैर, ये मंजिलें तो किसी-न-किसी तरह तय हो गईं, किंतु जब घड़ी स्थापित हो गई, तो मालूम हुआ कि उसकी सुइयां बहुत वजनी हैं और वे चलती नहीं। इसलिए उनकी जगह कम वजनकी दूसरी सुइयां तैयार की गईं। 'हल्की' सुइयां भी १२–१३ वर्षके चार बच्चोंके सामूहिक भारसे कम नहीं हैं।

इन समस्त कठिनाइयोंको पार करनेके बाद ३१ मई १८५९ से इसने अपना काम शुरू किया और इस समय तक एक शताब्दीसे अधिक अवधि व्यतीत हो जानेके बाद भी निरंतर सेवा कर रही है। यह घड़ी भार और ऐतिहासिक दृष्टि ही से प्रसिद्ध नहीं, बल्कि कार्यकी दृष्टिसे भी अपना जवाब नहीं रखती। उदाहरणके लिए गत १०७ वर्षोंमें केवल एक बार सन् १९४१ में पेंडुलमकी कमानी टूट जानेके कारण बंद हुई। वह युद्धका समय था। किंतु इंग्लैण्डवासी बजाए जर्मनोंके हवाई आक्रमणोंके, इसके बंद होनेसे ज्यादा परेशान थे। इसी लिए उन कठिन दिनोंमें भी तीन दिनके भीतर इसे ठीक कर दिया गया। प्रारंभमें इसे चाबी देनेकी बड़ी मजेदार व्यवस्था थी। ५४ वर्ष तक दो व्यक्ति लगातार पांच घंटे प्रतिदिन काम करके तीन दिनमें इसमें चाबी भर पाते थे। लेकिन बादमें इसे एक ऐसे भारी इंजिनसे 'चाबी' दी जाने लगी, जैसा कि बड़े बड़े जहाजों और ट्रकोंमें लगा होता है—इसके द्वारा सप्ताहमें तीन बार चाबी दी जाती है, जिसमें हर बार चालीस मिनिट लगते हैं।

मशीनकी खराबीकी वजहसे यह आज तक बंद नहीं हुई। परंतु अन्य कारण अवश्य ऐसे पैदा हुए कि कभी कभी वह बंद हो गई। उदाहरणार्थ एक बार चूहोंने वहां अपना ठिकाना बना लिया और एक बार पेंटर अपनी सीढ़ी भूल आया। एक बार कोई कारीगर अपना हथौड़ा अंदर छोड़ आया था।

१९४१ में हवाई आक्रमणके कारण भी इसको कभी कभी रुक जाना पड़ा, मगर उसके बाद सिर्फ एक बार १९५४ में वह चंद घंटोंके लिए रुकी थी। वह भी इस लिए कि उसके आस-पासकी सफाईके लिए इसे खुद रोका गया था। यह घड़ी खासी महंगी भी है। इसकी कीमतका अनुमान है ढाई करोड़ रुपये। इसकी देखभाल और इसके लिए नियुक्त १४ कर्मचारियोंपर सरकारको प्रतिमास लगभग २० हजार रुपये व्यय करने पड़ते हैं।

(उर्दूसे अनुवाद : राज ठाकुर)

सोवियत रूससे पिताके पत्र

(पृष्ठ २७ से आगे)

इतने कौशलसे किया गया है कि दर्शकोंकी तालियोंसे बार बार नाट्यगृह गूंज उठता है।

उजबेकिस्तानमें ४५ से अधिक ही नाट्यशालाएं होंगी जिनमें केवल उजबेकिस्तानके ही नहीं, रूसी और पश्चिमी यूरोपके भी नाटक दिखाए जाते ह। हमजा थियेटर ताशकंदकी एक दूसरी प्रसिद्ध नाट्यशाला ह। हमजा हकीमजादा नियाजीके नामपर इसका नाम रखा गया है। हमजा उजबेक सोवियत साहित्य और नाटकका पिता माना जाता है। इसके अलावा यहां और भी कई नाटयशालाएं हैं जिनमें गोर्की थियेटर, पपैट शो, मुकीमी थियेटर आदि मुख्य ह।

बैले देखते देखते काफी देर हो गई थी। दिन भरकी थकानके कारण आंखोंमें नींद भर आई थी। हम लोग लौटकर होटलमें वापस आए, तो एक अन्य भारतीय प्रतिनिधि मंडलके सदस्योंसे भी मुलाकात हो गई।

रात बहुत हो गई है। पत्र समाप्त कर रहा हूं। ताशकंद हिन्दुस्तानसे बहुत मिलता जुलता है। यहांके लोग हमारे देशवासियों जैसे ही विनम्र, मिलनसार और अतिथिप्रिय होते हैं। उजबेक भाषाके कितने ही शब्द हमारी भाषासे मिलते हैं।

शेष बातें भारत लौटनेपर तुम्हें बताऊंगा।

तुम्हारा पिता,
जगदीशचंद्र

www.kissekahani.com

कहानी

चार्ली ने छुट्टी मनाई

अमरीकामें उन दिनों 'मूनलाइट' सरकसकी बड़ी धूम थी। उसमें सुंदर और फुर्तीली लड़कियां थीं, तरह तरहकी बोली बोलने वाले पक्षी थे और अचरज भरे करतब दिखानेवाले पशु थे। बच्चे इनके खेल देखकर तालियां बजाते और घर लौटनेपर खुद भी उनकी नकल करनेकी कोशिश करते। जवान और बूढ़ोंके लिए भी 'मूनलाइट' एक अच्छा खासा विनोद था। 'मूनलाइट' के हर 'शो' में पंडाल खचाखच भरा रहता और सरकसके घेरेके बाहर भी निराश लोगोंकी एक लंबी कतार नजर आती।

इसी 'मूनलाइट' में 'बौनीफैटसी' नामक एक शेर था। वह दर्शकों और अपने साथी सरकसवालोंमें समान रूपसे लोकप्रिय था। वह जलते हुए घेरेके भीतरसे कूदकर निकल जाता। छह फुट ऊंची बंधी हुई रस्सीपर एक टांगसे चलकर लोगोंको आश्चर्यमें डाल देता। गंसके गुब्बारे भरता और उन्हें बांधकर हवामें उड़ा देता। अपने पंजोंसे गेंदें उछालता और एक छोटी-सी फुटबालपर चारों पंर जमाकर उसे आगे-पीछेकी ओर लुढ़काता। लेकिन दर्शकोंमें वह इसलिए सबसे अधिक लोकप्रिय था कि उसमें साइकिल चलानेकी अद्भुत योग्यता थी। वह दो पहियोंकी साइकिलको बहुत तेज भी चला लेता था और इतनी धीमी भी कि एक मिनिटमें एक फुटसे अधिक न सरके। जब वह साइकिल चला रहा होता, तब बच्चे और किशोर दम साधकर उसकी ओर देख रहे होते। इतना ही लोकप्रिय वह अपने साथियोंमें भी था। वह भरसक उनकी सहायता करता और समान रूपसे सभीका मनोरंजन करता। इसी लिए अपने लोगोंमें उसे सब 'चार्ली'-के नामसे पुकारते थे।

चार्लीके मालिक उससे बहुत खुश थे। वह यह भली भांति जानते थे कि उनके सरकसका मुख्य आकर्षण चार्ली ही है और दर्शक, खासतौरसे बच्चे, उनके 'शो' एक बारसे अधिक इसी लिए देखते हैं कि उन्हें चार्लीको बार बार देखना होता है। इसलिए मालिक भी चार्लीका विशेष ध्यान रखते और उसकी किसी बातका विरोध नहीं करते। यह बात दूसरी थी कि चार्ली कभी उनसे कोई विशेष मांग भी नहीं करता था।

एक दिन चार्लीको यों ही अपने देशकी याद हो आई उसका जन्म अफ्रीकाके एक जंगलमें हुआ था। वहांके सदाबहार पेड़ों और पेड़ोंसे लिपटी लताओंके बीच वह बचपनमें खूब मनोरंजन करता था। वह तालके किनारे जाता और पानी पीनेके बहाने देरतक अपनी छाया उसमें देखता रहता। उस जंगलमें वह बहुत मगन था। लेकिन तभी वह सरकसवालोंके हाथ लग गया और फिर उसका अपना जंगलका वातावरण उससे छिन गया।

आज चार्लीको बहुत दिनोंके बाद जंगलकी याद आई थी। साथ साथ उसे और भी बहुत कुछ याद आया। उसे याद आया कि जिस घाटपर वह पानी पिया करता था, वहां बहुत-सी छोटी छोटी सुनहरी मछलियां थीं। उसने बहुत चाहा था कि वह उनमेंसे एकको अपने लिए पकड़ ले, लेकिन

उसका यह सपना पूरा नहीं हो सका था। आज उस मछलीको देखने और पानेकी चाह उसके मनमें एक बार फिर पैदा हो गई थी।

कुछ दिन यों ही बीत गए। फिर एक दिन सुबह चार्ली अपने मालिकके निकट जाकर खड़ा हो गया। उसको देखनेसे ही लगता था कि वह कुछ विशेष कामसे आया है। मालिकने उससे पूछा—"क्यों, चार्ली, क्या बात है?"

चार्ली एक क्षणके लिए संकोचमें पड़ गया, लेकिन फिर धीमेसे बोला, "सर, मैं कुछ समयके लिए अपने घर जाना चाहता हूं। मुझे छुट्टी चाहिए।"

"घर कहां? अफ्रीकाके जंगलोंमें?"

"जी," चार्लीको ऐसा लगा कि जैसे अफ्रीका उसे पुकार पुकारकर बुला रहा हो और अपने देश-की यादमें उसका मन उदास हो गया।

"तुम क्या करोगे, वहां जाकर?" मालिक-न पूछा।

"सर, इधर कुछ दिनोंसे मुझे अपने वतनकी बड़ी याद आती है। कुछ बचपनके साथी थे। वे अब बड़े हो गए होंगे। उनसे मिलनेको बड़ा मन करता है।" चार्लीके मुखपर उत्सुकता और उदासी साथ साथ झलक रही थी।

इधर मालिकने सोचा, अब बरसातका मौसम आने वाला है। वैसे भी दो महीनेके लिए 'सरकस' को बंद रखना ही होगा। तो, चार्लीको छुट्टी दे देनेमें कोई अधिक नुकसान नहीं है। और चार्ली-को लंबी छुट्टी मिल गई।

ऊंचे ऊंचे पहाड़ोंपर बनी हुई छोटी छोटी पगडंडियोंसे होता हुआ चार्ली अफ्रीकाके जंगलों-की दिशामें बढ़ रहा था। बरसात शुरू हो गई थी। पहाड़ हरियाली और सुहाने फूलोंसे भर उठे थे। झरनोंका पानी और भी ठंडा हो गया था। जलके कुंड नीले पानीसे भरे थे। चार्ली इन सबके बीच बहुत खुश था। वह दरोंको कूदता हुआ पार करता और मैदानोंमें चलते हुए झूमता हुआ यह गीत गाता—

"ये मस्त नगर,
ये मस्त डगर,
ये हरियाली,
मैं दीवाना-मस्ताना,
मैं सरकसका चार्ली!"

जब वह यह गाता, तो जोरसे झूमता और फिर कूदते हुए भागता।

सारे रास्तेभर उसे समुद्रकी उस सुंद सुनहरी मछलीका स्वप्न आता रहा। वह उस अपने हाथोंमें लेकर सीधे अपने गलेमें उता लेना चाहता था। अफ्रीकाकी सीमा तक पहुंचते पहुं चते उसके मनमें केवल एक ही चाह बाकी रह गई थी कि वह सुनहरी मछलीको किसी तरह पा ले वह पानीमें तैरते हुए उसकी कल्पना करता औ उसके रंग-बिरंगे रंग उसके मनको मोह लेते वह सोचता कि सुनहरी मछलीको गटक लेनेसे उसकी आंखोंमें भी वैसी ही चंचलता आ जाएगी और वह अपने सरकसके दर्शकोंका और भी अधिक मनोरंजन कर सकेगा।

अब अफ्रीकाका समुद्र तट चार्लीको साफ दिखाई पड़ रहा था। उसे ऊपर खुला आकाश और नीचे नीला सागर दिखाई पड़ा। उसे यह सब बड़ा सुंदर लगा।

समुद्रके माथेपर सूरज चमक रहा था। चार्ली-

की अफ्रीकामें यह पहली सुबह थी। उसे समुद्रके पानीमें फैली हुई सुनहरी रोशनी बहुत आकर्षक लगी। उसे लगा कि सारे समुद्रकी छातीपर जैसे एक सुनहरी मछली तैर रही हो। वह उसीको देखने-में खो गया।

तभी उसे किनारेपर कुछ बच्चोंके खेलनेका शोर सुनाई दिया। उसे बच्चे देखे हुए बहुत दिन हो गए थे। उसने बच्चोंको बुलाया। बच्चोंने अपनेसे कुछ ही दूरीपर शेर देखा, तो डरकर भागने लगे। चार्ली हंस पड़ा। फिर

टिनोपाल
से सबसे अधिक सफ़ेदी आती है।

आखिरी बार कपड़े खंगालते समय बस ज़रा-सा टिनोपाल मिलाइए; फिर देखिए, आपके सफ़ेद कपड़ों में कैसी चमकदार सफ़ेदी आ जाती है! शर्ट्स, साड़ियाँ, तौलिये, चद्दरें वाली सभी कपड़े और भी अधिक सफ़ेद हो उठते हैं। और इस अधिक सफ़ेदी के लिए आपका खर्च? प्रति कपड़ा पूरा एक पैसा भी नहीं। एक चौथाई छोटा चम्मचभर टिनोपाल बाल्टी भरे कपड़ों को अधिक सफ़ेद करने के लिए काफ़ी है।

वैज्ञानिक विधि से बनाया गया व्हाइटनर, टिनोपाल हमेशा इस्तेमाल कीजिए। यह वस्त्रों को किसी प्रकार का नुक़सान नहीं पहुँचाता।

टिनोपाल अब मुहरबन्द एल्युमिनियम फॉइल पैकेट में भी मिलता है।

एक पैकेट बाल्टी भरे कपड़ों को अधिक सफ़ेद करता है। इस्तेमाल करने में आसान, इस पैकेट से न कोई फ़ज़ूलख़र्ची होती है, न कोई शेडिंग।

Ciba-Geigy टिनोपाल जे. आर. गायगी, एस. ए. बाल स्विट्ज़रलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है।
मुहिद गायगी लिमिटेड, पो. ऑ. बॉक्स ९६५, बम्बई-१ बी आर

Shilpi SG 223 A Hin.

कूदकर उनके पास जाकर बोला, "बच्चो, तुम डरते क्यों हो? मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगा।"

बच्चोंमेंसे एक बोला, "लेकिन तुम तो शेर हो, तुम हमें खा जाओगे।"

चार्ली हंसा। फिर उसने कहा, "बच्चो, मैं सरकसका शेर हूं। मैं तुम्हें खाऊंगा नहीं। मैं तुम्हें अच्छे अच्छे खेल दिखाऊंगा। देखो . . . मैं कैसे करता हूं!"

इतना कहकर चार्ली एक पैरपर खड़ा होकर ठुमकने लगा। बच्चोंने देखा, तो तालियां बजा बजाकर उछलने लगे। फिर उसने पास पड़े नारियलको उठा लिया और अगले पंजोंसे उसे गेंदकी तरह उछालने लगा।

बच्चे आश्चर्यसे एक दूसरेकी ओर देखने लगे। ऐसा तो वे भी नहीं कर सकते थे।

चार्लीने बच्चोंको और भी बहुतसे खेल दिखाए। बच्चोंका डर अब दूर हो गया और वे हमेशा उसकी चारों ओर घिरे रहने लगे।

•

समुद्रके किनारे मछुआरे बच्चोंका खूब खेल जमता। चार्ली उन सबका प्रिय था। वह उनका खूब मनोरंजन करता। बच्चे उसे देखकर ही 'चाचा चार्ली, चाचा चार्ली' पुकारने लगते और हमेशा उससे कोई नया करतब दिखलानेका आग्रह करते। चार्ली हमेशा उनकी मांग पूरी करता।

खुद चार्ली इन बच्चोंमें बहुत रम गया था। बच्चोंको खुश देखकर उसे बहुत खुशी होती। उसे इस बातसे बड़ा संतोष होता कि वह बच्चोंको अपने साथ बनाए रख सकता है। एक पशु होकर भी उसे इंसानके बच्चोंके बीच इज्जत और प्रेम मिल रहा था। यह उसके लिए बहुत खुशीकी बात थी।

बच्चे दिनभर उसे घेरे रहते कोई उसपर सवारी करता, कोई उसकी पूंछ पकड़ता। कभी वे दौड़ लगाते, कभी 'चोर चोर' का खेल खेलते और इस तरह समद्रके किनारे उन भोले बच्चोंके साथ चार्लीके दिन बड़े मजेमें कट रहे थे।

चार्ली भूल गया था कि उसे अपने साथियोंसे भी मिलना है। उसने इन बच्चोंसे मिलनेके बाद कभी जंगलमें जानेकी बात नहीं सोची। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वह सुनहरी मछलीकी बात भी भूल गया। कमसे कम सुनहरी मछलीको पकड़कर उसे निगल जानेकी कल्पना अब उसे खुशी नहीं देती थी। वह सोचने लगा था कि अपने स्वार्थको पूरा करनेसे यह कहीं बेहतर है कि दूसरे लोगोंको सुख दिया जाए, उनका मनोरंजन किया जाए। बच्चोंको खुश देखकर उसे बड़ी शांति मिलती थी और उसका मन होता था कि वह हमेशा उनको अपने बीचमें बनाए रखे।

•

इसी तरह बहुत दिन बीत गए। चार्लीकी छुट्टियां पूरी होनेको आईं और एक दिन चार्लीने 'सरकस' में लौट चलनेका निश्चय कर लिया।

उस दिन वह बड़े तड़के उठा। समुद्रके एक छोरपर विचरण करनेके बाद वह वापस लौट रहा था कि उसे सुबहके हल्के उजालेमें किनारेकी लहरोंमें एक सुनहरी मछली उछलती दिखाई पड़ी। वह झट वहां पहुंच गया और उसने उसे अपने पंजोंमें ले लिया। उस रात बड़ा ज्वार आया था और किनारेपर बहुतसे सीप, घोंघे, केंकड़े तथा मछलियां आ लगी थीं। समुद्रकी बड़ी लहरके जलमें चार्ली उस सुनहरी मछलीको अपने हाथोंमें लिए रहा। कभी वह उसे उछालता, कभी बड़े प्यारसे उसपर हौले हौले हाथ फेरता, तो कभी गुनगुनाकर उसे अपना गीत सुनाता।

एक क्षणके लिए भी उसके मनमें यह विचार नहीं आया कि वह उस सुनहरी मछलीको निगल ले और उसकी आंखोंकी चंचलता उसकी अपनी आंखोंमें समा जाए।

वापस लौटती हुई लहरमें उसने सुनहरी मछलीको छोड़ दिया। सुनहरी मछली एक बार उछलकर सागरके गहरे जलमें खो गई।

दिन निकल चुका था। चार्लीको उसके साथियोंने भाव भरी विदाई दी। चार्लीने सब बच्चोंको वचन दिया कि वह छुट्टी लेकर फिर उनके पास आएगा और उन्हें नए नए जादू दिखलाएगा।

ऊंची चट्टानोंके रास्तोंपर चार्ली चुपचाप चला जा रहा था और नीचे तटपर खड़े बच्चे, खामोशीसे उसे ओझल होता देख रहे थे।

(एक रूसी फिल्म-कथा)

प्रस्तुतकर्ता: देवेश ठाकुर

डैडी, आप कह रहे थे बैंक में धन बढ़ता है। यह कैसे होता है ?

मेरी ही तरह अनेक व्यक्ति बैंक में अपना रुपया जमा रखते हैं। बैंक में बहुत सा रुपया इकट्ठा हो जाता है। उस रुपये को बैंक दुकानदारों, कारखानों और सरकार को उधार दे देती है। कुछ समय बाद बैंक को अपना रुपया ब्याज सहित वापस मिल जाता है क्योंकि बैंक हमारे रुपये का उपयोग करती है, इसलिए उसमें से कुछ ब्याज हमें भी दे देती हैं। इससे हमारा रुपया बढ़ता है। यदि हम रुपये को बैंक में जमा न करेंगे, तो वह कैसे बढ़ेगा ?

ठीक है! आप अपना रुपया तो पंजाब नेशनल बैंक में ही जमा रखते हैं ना ?

हाँ, बेटा। वही मेरा बैंक है। यह देश के सबसे पुराने और सबसे बड़े बैंकों में से एक है। देश भर में इसकी ४७५ से अधिक शाखाएं हैं।

पंजाब नेशनल बैंक

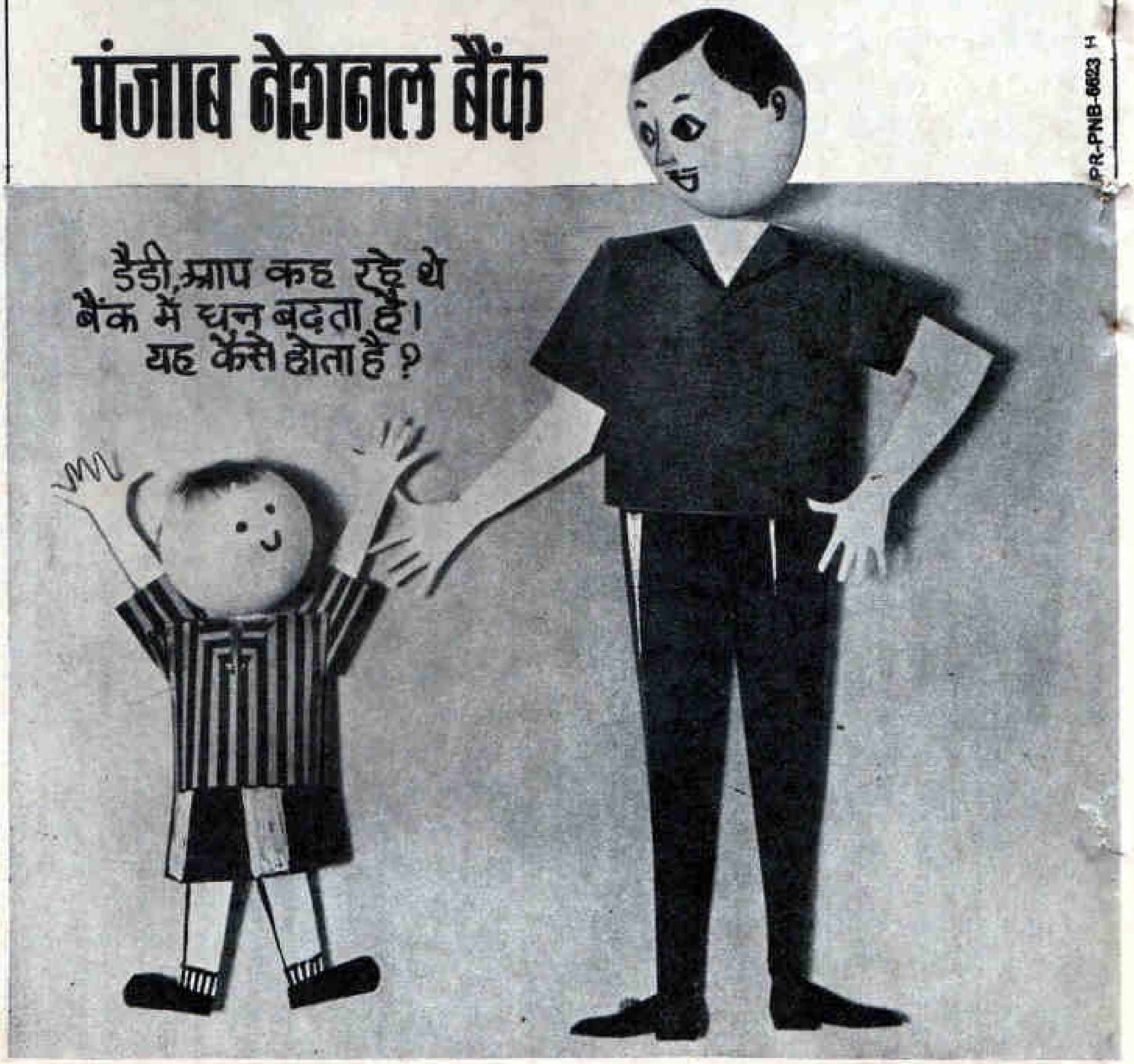

PR-PNB-6623 H

जगमगाने वाली मछलियां

श्रीकृष्ण

समुद्रकी मीलों गहराईमें, जहां सूरजकी किरणें भी नहीं पहुंच पातीं और दिनमें भी रातका-सा अंधेरा रहता है, इन प्रकाशमय मछलियोंके कारण रातमें भी दिन-का-सा प्रकाश चारों ओर बिखरा रहता है।

मछलियोंके शरीरसे निकलने वाला यह प्रकाश विभिन्न रंगोंका होता है। किसी मछलीके शरीरसे सफेद रंगका प्रकाश निकलता है, तो किसीके शरीरसे हरा और किसीके शरीरसे नीला या लाल।

कल्पना करें, वह दृश्य कितना मनमोहक होता होगा जब काले पानीमें रंग-बिरंगे प्रकाशवाली ये जगमगाती मछलियां अठखेलियां करती होंगी। कुछ मछलियां पूरीकी पूरी जगमगाती हैं, तो कुछके शरीरका केवल कोई विशेष अंग जगमग करता है।

इस प्रकाशको ये मछलियां अपनी इच्छानुसार बंद भी कर सकती हैं। ऐसा लगता है कि जैसे अंधेरेमें कोई व्यक्ति टार्च लेकर चल रहा हो और वह कभी टार्च-को जला लेता हो और कभी बुझा देता हो। इस प्रकाश-की सहायतासे ये मछलियां अपना शिकार ढूंढ़ती हैं।

एक मछलीके शरीरसे तीव्र विद्युत-बल्बोंकी भांति प्रकाश निकलता है। ज्यादातर मछलियोंमें प्रकाश पैदा करने वाले अंग बिंदुओंके रूपमें इनके शरीरके अगल-बगल पंक्तियोंमें फैले रहते हैं। किसी किसी मछलीमें तो ये बत्तियां शरीरके पिछले भागमें होती हैं।

एक मछलीके सिरपर रेलगाड़ीकी रोशनी जैसी बत्ती होती है। यह मछली पानीमें जिस ओर भी बढ़ती है, उसी ओर प्रकाश द्वारा अपनी पहुंचकी सूचना दे देती है। एक मछली, जिसे 'काला शिकारी' कहते हैं, के माथेपर एक तंतु-सा निकला होता है, जिसके सिरेपर चमकदार प्रकाश रहता है। इसी कारण आकर्षित होकर छोटी मछलियां उसके मुंहमें पहुंच जाती हैं।

एक मछलीके लंबे-पतले शरीरपर चमकदार धब्बों-की कतारें होती हैं, जो किसी जहाजकी प्रकाशवान खिड़-कियोंकी तरह जगमगाती हैं। एक मछलीकी ठोड़ीके एक लंबे बालपर चमकदार रोशनी होती है। कुछ मछलियों-में रंगीन आवरण होते हैं, जिसके कारण केवल एक ही रंगकी किरणें उनसे होकर निकल पाती हैं और इसी लिए ये एक विशेष रंगका प्रकाश पैदा करती हैं।

एक जातिकी मछलियोंमें प्रकाश पैदा होनेका कारण एक प्रकारके जीवाणु-शाकाणु हैं। इनमें प्रकाश पैदा करने वाला अंग आंखके नीचे एक प्यालेके आकार जैसा होता है। इस अंगमें जो शाकाणु पाए जाते हैं, वे एक विशेष जातिके होते हैं। ये शाकाणु परजीवी और चमकदार होते हैं। ये मछलीको प्रकाश प्रदान करते हैं। इसके बदले-में मछली इनको रहनेके लिए जगह और खाना देती है। इन शाकाणुओंकी विशेषता यह है कि जब तक वे जीवित रहते हैं, बराबर चमकते रहते हैं। अन्य प्रकाशवान मछलियोंकी तरह इस मछलीमें अपनी बत्तियोंको इच्छा-नुसार जलाने-बुझानेकी क्षमता नहीं होती, परंतु इसमें प्रकाशको नियंत्रणमें रखनेका एक निराला ही ढंग होता है। इस मछलीके प्रकाशोत्पादक अंग आंखकी पलककी तरह काम करते हैं और उसी जैसे पतली खालकी परतके होते हैं। इन परतोंको बंद करने और खोलनेकी क्रिया बिलकुल हमारे नेत्रोंकी पलकों जैसी होती है। इस कारण

दो जातियोंकी जगमगाने वाली मछलियां
समुद्रकी गहराई में

इस मछलीका नाम ही 'प्रकाश-पलक' पड़ गया है। इस मछलीको पकड़कर मछुवे इसकी बत्तियां निकाल लेते हैं। इन बत्तियोंको मछुवे इसी प्रकारकी दूसरी मछ-लियोंको फंसानेके काममें लाते हैं।

कुछ मछलियां अपने शरीरसे एक प्रकारका तरल पदार्थ बाहर निकालकर प्रकाश करती हैं। इनके शरीरके निचले हिस्सेमें एक एक ऐसी ग्रंथि होती है, जिससे प्रकाश उत्पन्न करने वाली चिकनाई बाहर निकलती रहती है।

इनसे कुछ भिन्न प्रकारकी 'जेली' नामकी एक मछली-को छूने मात्रसे उसका पूरा शरीर प्रकाशमय हो जाता है।

अचरजकी बात तो यह है कि इन सभी मछलियों से पैदा होने वाला प्रकाश शीतल होता है और उसमें गर्मी नहीं होती, जबकि हमारे वैज्ञानिकोंने प्रकाश उत्पन्न करनेके जितने भी तरीके अब तक ईजाद किए हैं, सबमें प्रकाशके साथ साथ गर्मी भी पैदा हो जाती है। यदि हम बिना गर्मीके प्रकाश उत्पन्न कर सकें, तो हमारी अनगिनत समस्याएं हल हो जाएं। हमारे वैज्ञानिक बराबर इस खोजमें लगे हैं।

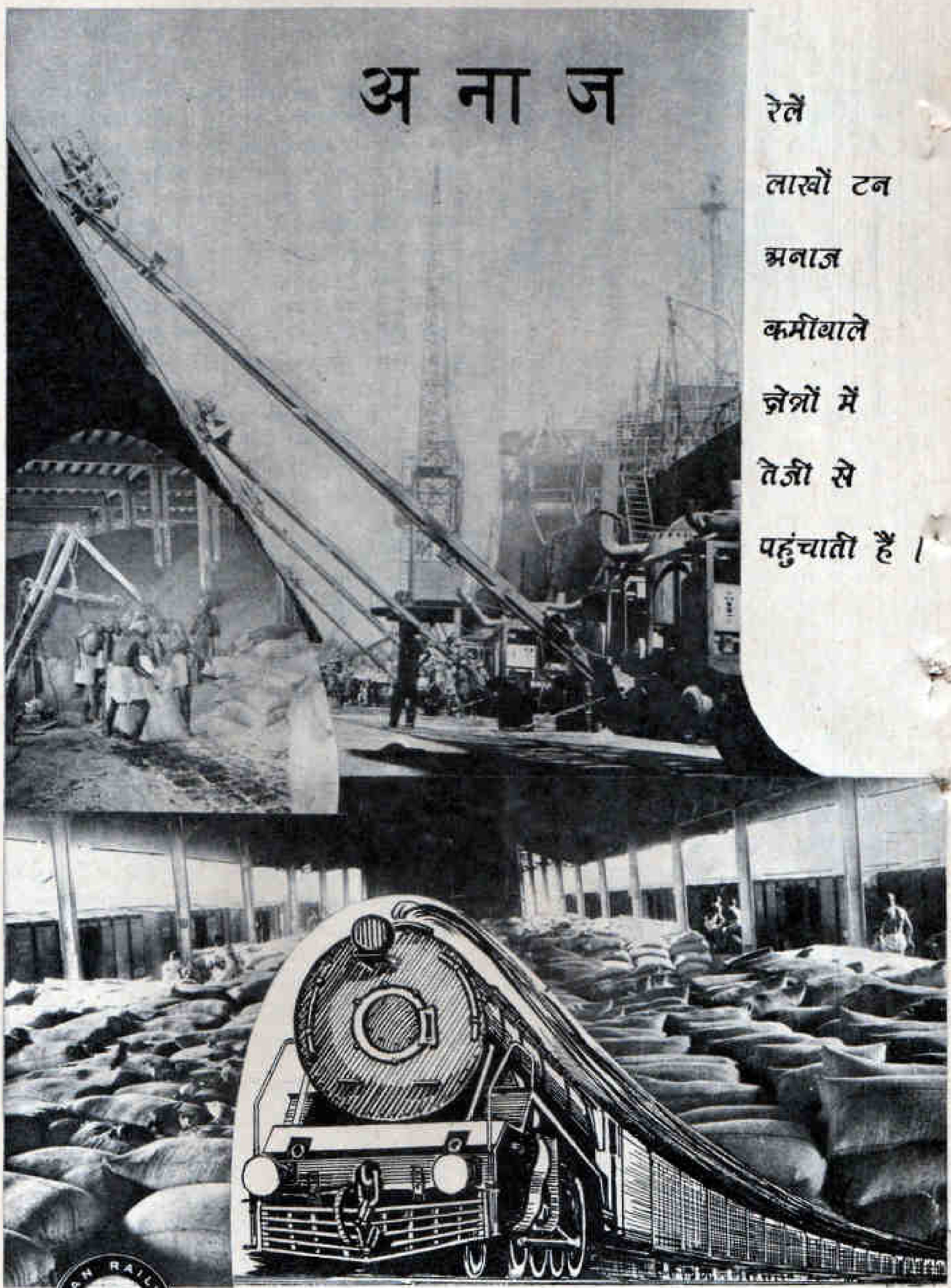

मध्य रेलवे

(इस स्तंभमें बच्चोंके लिए नव प्रकाशित पुस्तकोंका परिचय दिया जाता है, जिससे बच्चे उन्हें पढ़ें और अपनी ज्ञानकी प्यास बुझाएं। परिचयके लिए पुस्तकोंकी दो दो प्रतियां भेजी जानी चाहिएं। —संपादक)

● एक था छोटा सिपाही (पृष्ठ संख्या ७१); लेखिका: बिमला शर्मा ● इस माटीके लाल (पृष्ठ संख्या ८७); लेखक: वेद मित्र ● हमारी धरोहर (पृष्ठ संख्या ८०); लेखक:सुदर्शन चोपड़ा ● अपनी धरती अपने लोग (पृष्ठ संख्या ७९); लेखक : अनन्त ● हम आजाद हुए (पृष्ठ संख्या ८०); लेखक : प्रतापचंद्र आजाद; मूल्य : प्रत्येकका एक रुपया पच्चीस पैसे; प्रकाशक : शकुन प्रकाशन, ३६२५ सुभाष मार्ग, दिल्ली-६।

'एक था छोटा सिपाही' बच्चोंके लिए लिखा गया एक छोटा-सा उपन्यास है। इसमें सुरजा नामक एक किशोर बालककी साहस-कथा दी गई है। समय चीनी आक्रमणका है और पृष्ठभूमि लद्दाखकी। सुरजा मांगचिग गांवके एक साधारण किसानका बेटा है। उसके गांवके निकट ही एक भारतीय सैनिक चौकी है। सुरजा अपने खेतोंपर जानेके लिए रोज वहांसे गुजरता है और वहां उसकी दोस्ती एक सिपाही दयारामसे हो जाती है। दयाराम उसे मामूली फौजी ट्रेनिंग देता है और सिपाहीका कर्तव्य समझाता है। लेकिन एक दिन दयाराम चीनी सैनिकोंसे मुठभेड़में शत्रु-सैनिकों द्वारा बंदी बना लिया जाता है। बस यहींसे सुरजाकी साहस-गाथा शुरू होती है। वह अपने मित्र सिपाही दयारामकी खोजखबर लगानेके लिए अपने प्राणोंपर खेल जाता है और अंतमें बड़ी बड़ी मुसीबतें उठाकर उसको खोज निकालता है।

यद्यपि उपन्यासमें अस्वाभाविकताका काफी बोल-बाला है लेकिन फिर भी यह बच्चोंको देशपर मर-मिटनेकी प्रेरणा देगा। जगह जगहपर चित्र भी दिए गए हैं।

आगेकी चारों पुस्तकें 'भारत-परिचय-माला' के अंतर्गत प्रकाशित रचनाएं हैं।

पहली पुस्तक 'इस माटीके लाल' में लेखकने भारतके आधुनिक युगके महापुरुषोंकी जीवन-गाथाएं दी हैं। महापुरुषोंमें भारतीय उद्योगोंके जन्मदाता जमशेदजी टाटा, आधुनिक राजनीतिके पितामह बाल गंगाधर तिलक, ज्ञान-मंदिरके निर्माता मदनमोहन मालवीय, एकताके सूत्रधार सरदार पटेल, कलमके सिपाही प्रेमचंद, विज्ञानके महारथी चंद्रशेखर वेंकटरमण, दार्शनिक राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, शहीदोंके सिरताज रामप्रसाद बिस्मिल और बुरे समयके साथी लालबहादुर शास्त्रीको शामिल किया गया है। सभी महापुरुषोंके रेखाचित्र भी दिए गए हैं।

दूसरी पुस्तक है 'हमारी धरोहर'। इसमें भारतकी संस्कृतिकी कहानी कही गई है। दस हजार सालके भारतीय इतिहासके सहारे भारतमें विकसित ज्ञान-विज्ञान, कला, भाषा, साहित्य आदिका परिचय संवाद-शैलीमें दिया गया है। पुस्तकमें उपयुक्त स्थलोंपर चित्र भी दिए गए हैं।

तीसरी पुस्तक 'अपनी धरती अपने लोग' में लेखकने भारतके १३ विभिन्न प्रदेशोंकी दिलचस्प सैर करवाई है। बच्चे पुस्तक पढ़कर दिल्ली, उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, असम, उड़ीसा, दक्षिण-भारत, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, पंजाब और कश्मीरकी धरती और वहांके रहने वालोंके संबंधमें दिलचस्प जानकारी प्राप्त करेंगे। जगह जगहपर चित्र भी दिए गए हैं।

चौथी पुस्तक 'हम आजाद हुए' में अपने देशकी आजादीकी लड़ाईकी कथा ऐतिहासिक शैलीमें दी गई है। १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्रामसे लेकर १५ अगस्त '४७ तक की घटनाओं और प्रसिद्ध आंदोलनोंका ब्यौरा रोचक शैलीमें दिया गया है।

सभी पुस्तकोंकी छपाई-सफाई और भाषा-शैली संतोषजनक है और मूल्य भी उचित है।

● हमारा घर (पृष्ठ संख्या ७०); लेखक : कृश्न चन्दर, मूल्य : दो रुपये; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली—६।

'हमारा घर' कृश्न चंदरका बच्चोंके लिए लिखा गया उपन्यास है। इसमें बताया गया है कि किस प्रकार पिकनिकपर जाने वाले कुछ स्कूली बच्चे समुद्रमें तूफानके कारण जहाज डूब जानेसे बेसहारा होकर एक निर्जन टापूमें शरण लेते हैं और वहां आपसी सहयोगसे एक दूसरी जिन्दगी शुरू करते हैं। उनमें आपसमें फूट है, भेदभाव है और वे सारे दुर्गुण हैं जो बच्चे अपने बड़ोंसे ज्योंके त्यों संस्कार रूपमें पाते हैं। लेकिन चूंकि उस निर्जन टापूमें उनकी देखरेख या पालनपोषण करने वाले 'बुजुर्ग' नहीं है इसलिए वे शीघ्र ही उन दुर्गुणोंसे अपना पीछा छुड़ा लेते हैं और उनकी जगहपर आपसी मेलमिलाप, भाईचारे, खुदपर भरोसा, अटूट लगन, कड़ी मेहनत आदि गुणोंको अपने अंदर उतारनेकी कोशिश करते हैं। इस कोशिशका परिणाम है उनका बनाया हुआ उस निर्जन टापूमें उनका 'हमारा घर'। यह घर किसी एक बालकका नहीं था, बल्कि उन सबका था, जिन्होंने उसे बनानेमें अपना हाथ लगाया था।

यद्यपि उपन्यासमें घटना-क्रम कहीं कहीं काफी अस्वाभाविक है और यही बात पात्रोंके चरित्र-चित्रणमें भी पाई जाती है, लेकिन फिर भी इसे पढ़कर बच्चे धार्मिक भेदभाव, जातपातकी ऊंचनीच, गरीबी-अमीरीके झगड़ोंसे ऊंचा उठनेकी प्रेरणा पाएंगे और साथ ही अपने देशको अपना घर कहनेके बजाय 'हमारा घर' कहना सीखेंगे।

कृश्नचंदर, जो मूलतः उर्दूमें लिखते हैं, अपनी सरल, सुबोध और मुहावरेदार भाषा-शैलीके लिए प्रसिद्ध हैं। इस उपन्यासमें भी उनकी भाषा-शैलीमें वही गुण विद्यमान हैं। छपाई-सफाई अच्छी है।

—लक्ष्मीचंद्र गुप्त

खिलौनों का डिब्बा

सरकस का जम्हूरा

—अरुणकुमार

www.kissekahani.com

लो, बच्चो, आज हम तुम्हें एक ऐसे साहसी जम्हूरेसे मिला रहे हैं, जो सरकसमें खेल दिखाते समय अपनी जानकी भी परवाह नहीं करता। यह तनी हुई रस्सीपर बराबर सिरके बल खिसकता चला जाता है और मजाल है कि जरा भी डगमगा जाए!

सामनेके पृष्ठपर जो छोटा चित्र दिया हुआ है, उसे उसकी बाहरी रेखाओंपर सफाईके साथ काट लो। इसी प्रकार बड़े चित्रको भी काट लो। इन दोनोंको पीछेकी तरफ लेई या गोंद लगाकर पोस्टकार्ड जैसे गत्तेपर चिपका लो और किताबोंके नीचे दबाकर सुखा लो। यह तो तुम जानते ही हो कि यदि ये चित्र बारह घंटे किताबोंके नीचे सीधे सीधे दबे रहें, तो सूखनेपर मुड़े हुए नहीं मिलेंगे।

चित्र सूखनेपर चित्रोंकी बाहरी रेखाओंके बाहर निकला हुआ गत्ता काटकर साफ कर दो। छोटे चित्रके नीचेवाली पट्टीपर, जहां एक नए पैसेका घेरा बना हुआ है, एक पैसा चिपकने वाली टेप या गोंद लगी पट्टीसे चिपका दो। फिर चित्रके बीचकी दोनों आड़ी रेखाओंपर चित्रपर, नमूना आकृति–१ (इसी पृष्ठपर) की तरह, प्लीट डालो—यानी एक रेखापर दाईं ओर मोड़ो और दूसरी रेखापर बाईं ओर ऊपर उठाते हुए।

बड़े चित्रके बीचमें जो दानेदार रेखा बनी हुई है, उसे ब्लेड या तेज चाकूकी सहायतासे आरपार काट लो। ध्यान रहे कि चित्रके दोनों सिरे न कट जाएं। दोनों ओर सावधानीके लिए चिपकने वाली टेप लगा सकते हो (पीछेकी तरफ)। अब जम्हूरेका नीचेवाला, यानी पैसा चिपका हुआ भाग बड़े चित्रकी कटी हुई दानेदार रेखामेंसे पीछेकी ओर निकाल दो—देखो इसी पृष्ठपर दी हुई आकृति–२। तुम देखोगे कि जम्हूरे का सिर बड़े चित्रकी बीचवाली तनी हुई रस्सीपर टिक गया है। लो, तुम्हारा जम्हूरा रस्सीपर खिसकनेके लिए तैयार हो गया है। जैसे ही तुम चित्रको जरा टेढ़ा करोगे, जम्हूरा सिरके बल रस्सीपर नीचेकी ओर खिसकने लगेगा। जब वह पूरी रस्सी पार कर ले, तो फिरसे उसे ऊपर खिसका दो।

इस खेलको अपने खिलौनोंके डिब्बेमें रख लो और अपने मित्रोंको यह बताना न भूलो कि हर महीने तुम्हें 'पराग' से ऐसा ही मजेदार एक खेल मिलता है। ●

आकृति-१

आकृति-२

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627395
mshahid.shahid786@gmail.com

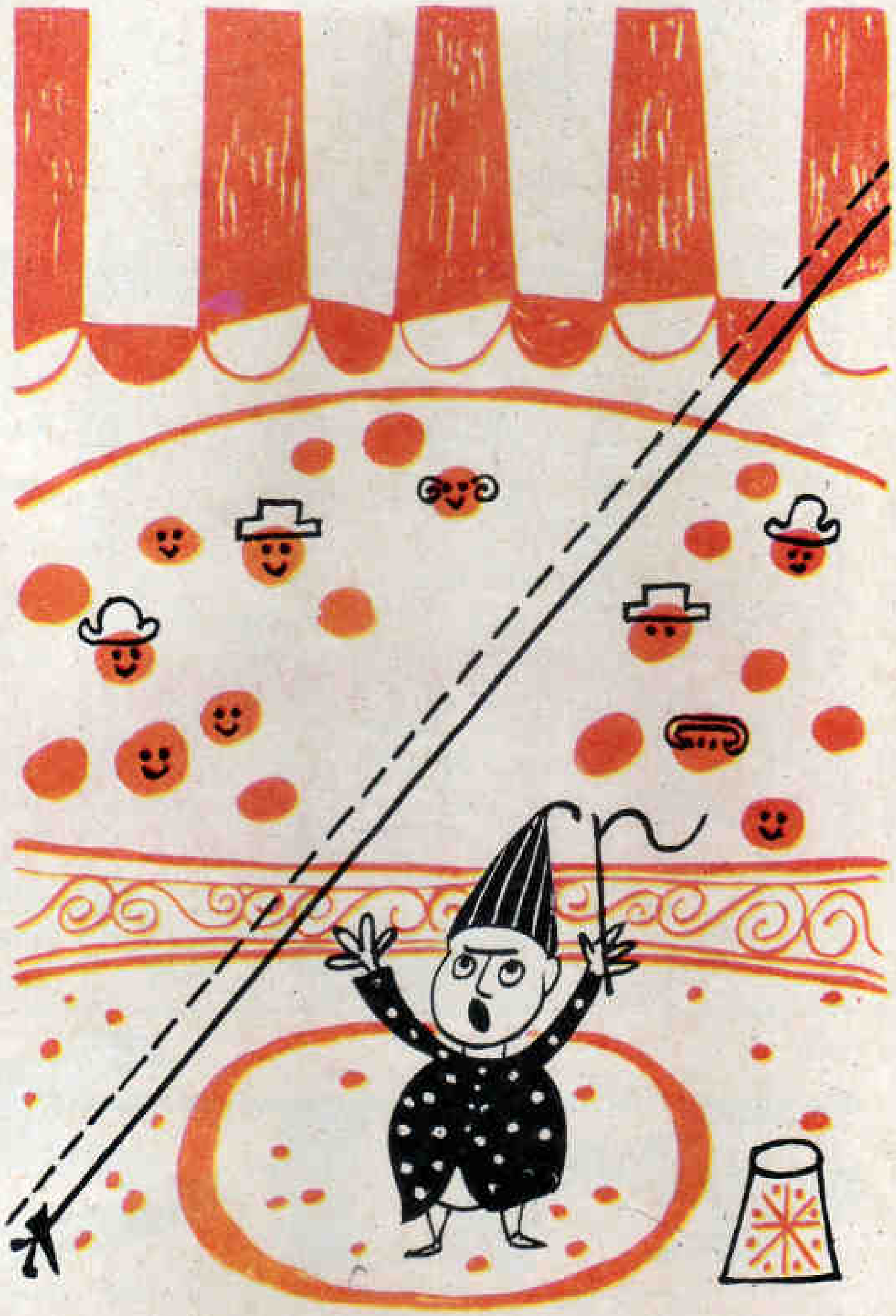

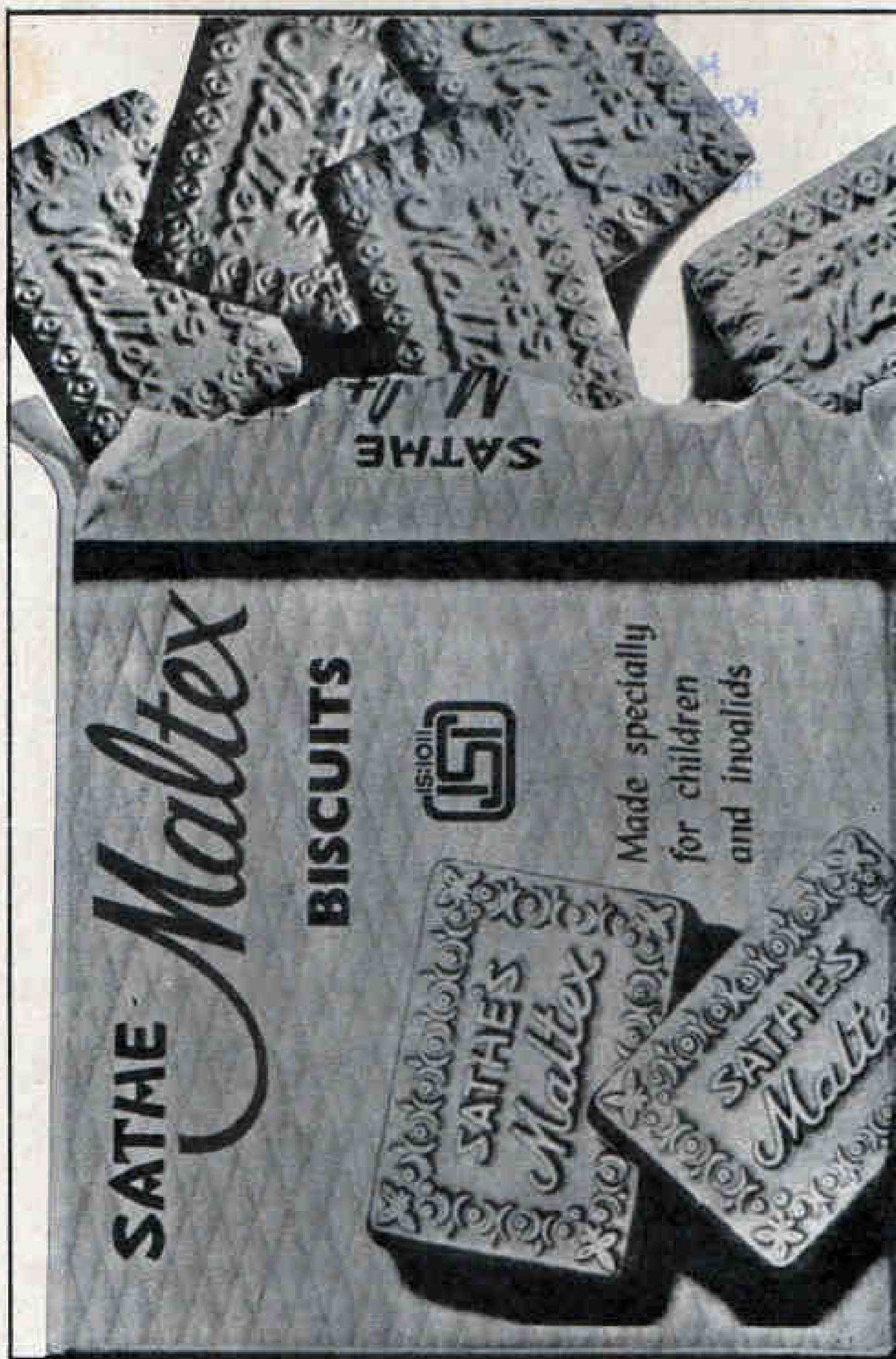

गुणों से भरपूर

साठे माल्टेक्स बिस्कुट बच्चों व रोगियों के लिए खासतौर से बनाये गए हैं। आसानी से पचने वाले ये बिस्कुट स्वादिष्ट और पौष्टिक हैं। प्रत्येक परिवार में इनका होना ज़रूरी है।

साठे बिस्कुट एण्ड चॉकलेट कम्पनी लिमिटेड पूना-२

साठे

बिस्कुट

आनन्द से भरपूर

heros' SBC-266A HIN

भगेलू की वापसी (पृष्ठ १९ से आगे)

महात्माजीने एक मिनिट कुछ सोचा, फिर कहा, "वह तो आ ही रही है, अब और कुछ दिन रह गए हैं तुम लोगोंके। आधा गांव तबाह हो जाएगा, आधा गांव!"

सबके होशो-हवास गायब हो गए, "क्या कहा, महाराज, हमारी मौत आने वाली है!"

"हां, ताऊन फैलेगा। तुमने बहुत पाप किए हैं।"

"हम लोगोंने क्या पाप किया है, महाराज?"

"याद करो, किसानोंको पैसा क्या इसलिए उधार देते हो कि उनकी फसल मामूलीसे दामोंमें खरीद लो, पोंगामल! और तुम, मटकूचंद? पांच देकर पचास वसूल करत हो, भोले भाले गांववालोंको ठगते हो। और तुम, लोटाराम? नकली कागज तैयार करते हो। क्यों?"

पोंगामल हाथ जोड़कर बोले, "लेकिन, महाराज, यह तो व्यापार है, इसमें कैसा पाप?"

"तुम मक्कारी, धोखाधड़ीको व्यापार कहते हो, पापियो। यह संपत्ति यूं ही पड़ी रह जाएगी। तुम सबके खानदानोंमें इस संपत्तिका भोग करने वाला कोई नहीं बचेगा।"

सबके सब सिर थामकर बैठ गए।

महात्माजी बोले, "अब भी अगर अपनी भलाई चाहते हो, तो पापसे कमाई संपत्तिको अच्छे काममें लगाओ।"

पोंगामल बोले, "महाराज, हम ब्राह्मणोंको खाना खिलाएगें, मंदिर बनवाएंगे।"

महात्माजी भड़क उठे, "मूर्खो, भगवानका मंदिर दिल होता है ईंट-पत्थरका मंदिर नहीं। सबसे बड़ा दान विद्या-दान होता है। अगर सत्कर्म करना चाहते हो, तो विद्या-मंदिर बनवाओ, स्कूल खुलवाओ।"

तुरंत पोंगामलने स्कूल खोलना मंजूर किया। इसके लिए उन्होंने दस हजार, मटकूचंद और लोटारामने पांच पांच हजार रुपये देना स्वीकार किया। सरफराज खांन भी मौतके डरसे ५०० रुपये देना मंजूर किए।

मटकूचंद बोले, "लेकिन, महाराज, असल बात तो रह ही गई। भगेलू हम लोगोंको चैनसे नहीं रहने देगा।"

"तुम लोग निश्चित रहो। तुम्हारे सत्कार्योंके पुण्यसे भगेलू तुम्हें परेशान नहीं कर सकेगा," महात्माजी खुली हंसी हंसकर बोले।

चारों संतुष्ट हो गए।

●

भूतहा बाग। घोर अंधेरा। अंधेरेके बीच कुप्पी जल रही है। कुप्पीकी चारों ओर बारह-तेरह लड़के बैठे हैं और जप कर रहे हैं: 'ओम नमः शिवायः, भगेलू जल्दी आए!' बच्चे डरे हुए हैं, फिर भी मंत्र उच्चारे जा रहे हैं।

एक जोरका अट्टहास होता है। सब लड़के डर जाते हैं। घिग्घी बंधी आवाजसे निकलता है—'भू-उ-उ-त!' सभी सहमे सहमे खड़े रह जाते हैं।

पेड़परसे धम्मकी आवाजके साथ कोई कूदता है और उनकी ओर बढ़ता है। कोई भी लड़का डरसे चिल्ला नहीं पाता। सब बुत बने खड़े रह जाते हैं।

छाया गरजती है, "यह क्या हो रहा है?"

एक लड़का हिम्मत करके बोलता है, "हम आपका बुरा करने नहीं आए हैं। हम तो अपने दोस्तके लिए तपस्या कर रहे हैं। हमें एक साधू महात्माने बताया है।"

"तुम्हें अपनी जान प्यारी नहीं है?" छायाने पूछा।

"हमें अपना दोस्त जानसे भी प्यारा है," लड़कोंने कुछ साहससे कहा।

"तो तुम अपने दोस्तकी बात मानोगे?"

"हां, हमें उसकी बात माननेमें बड़ा मजा आता है। हम उसकी हर बात मानेंगे।"

"तो लो, यह रहा तुम्हारा प्यारा दोस्त भगेलू," छायाने अपना काला चोगा उतार दिया। मुंहपरसे नकली चेहरा हटा लिया। सबने देखा, उनके सामने उनका प्यारा दोस्त भगेलू खड़ा है। सबके चेहरे खिल उठे।

एक बोला, "वाह, तुमने तो हमें डरा दिया।"

दूसरा बोला, "लेकिन, भगेलू भैया, तुम तो सचमुच भूत लगते थे, हमने तो सोचा भी नहीं था कि तुम हमसे भी शैतानी कर सकते हो।"

"हां, मैं अपने मामाके यहां नाटकोंमें काम करता था, इसलिए जैसी कहो आवाज बदल सकता हूं। कभी पुलिसका दरोगा बन सकता हूं, तो कभी भीम। छोड़ो, लो मिठाई खाओ। पूरी पांच किलो है, और यह लो ११ रुपये, आगे मिठाई खानेके काममें आएंगे।"

"वाह, भाई, तुमने तो बाजी मार ली। दावत तो हम देने वाले थे। अच्छा, अब कलका क्या प्रोग्राम है? चखाया जाए किसीको मजा?"

भगेलू बोला, "अभी आगे देखेंगे। एक बात अब यह कि हम लोगोंको पढ़ने-लिखनेमें जुट जाना होगा।"

"बस, भइया, यहीं तुमने मुंहका जायका बिगाड़ दिया। एक तो बात यह है कि गांवमें स्कूल नहीं, दूसरे..."

भगेलू बोला, "नहीं, मैं कोई बात नहीं सुनूंगा। तुम लोगोंने कहा है मेरी बात माननेको, सो तुम्हें माननी होगी। रही स्कूलकी बात, वह भी पूरी हो जाएगी।"

लड़कोंने अपने दोस्तकी बात माननेका वचन दिया।

●

पोंगामल, मटकूचंद, लोटाराम और सरफराज खांने देखा, भगेलू उनसे शैतानी नहीं कर रहा है, तो समझ गए यह सब महात्माजीकी कृपा है। स्कूल तैयार होनेमें देर नहीं लगी। पोंगामल वगैरहको आशा है महात्माजी कभी न कभी गांवमें आएंगे। भगेलूको विश्वास है कि अब महात्माजी कभी नहीं आएंगे। ●

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई वर्षोंसे 'पराग' में शिशु-गीत छाप जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है। इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

मिस्टर मच्छर

मिस्टर मच्छर रात-रात भर,
गाना गाते भन-भन-भन;
उन का गाना बड़ा सुहाना,
लेकिन उन से डरते हम।

कभी नाक में, कभी कान में,
वह चुटकी ले लेते हैं;
मच्छरदानी में घुस कर हम,
उन को चकमा देते हैं।

वह बाहर से झूम-झूम कर,
सा-रे-गा-मा गाते हैं;
हम अंदर, लेटे लेटे ही,
मुक्का उन्हें दिखाते हैं!

—चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक'

www.kissekahani.com

खड़े हो गए कान!

जीभ लपालप चला रहे हैं,
देखो इन के ठाठ;
बहुत चटपटी लगती इन को,
फुटपाथों की चाट!

खुश होकर फिर पनवाड़ी से,
खाया मीठा पान;
तभी जब में हाथ गया तो
खड़े हो गए कान!

—प्रेमचंद्र गोस्वामी

ताज़ी खबरें

चींटी से हाथी टकराया,
छत के ऊपर कूदा ऊंट,
मगरमच्छ मच्छरने निगला,
चूहे भगे शहर को लूट!

गुड्डी राजा

चंदनपुर का बूढ़ा राजा,
सदा सुना करता था बाजा;
उसे सुहाती थी सारंगी,
खाया करता था नारंगी!

—सरस्वतीकुमार 'दीपक'

हाय रे दैया!

घोड़ा नाचे, हाथी नाचे,
नाचे सोनचिरैया,
किलक-किलककर बंदर नाचे,
भालू ता-ता-थैया!

ठुमक-ठुमक कर खरहा नाचे,
ऊंट, मेमना, गैया;
आ पहुंचा जब शेर नाचने,
मची 'हाय रे दैया!'

—विष्णुकांत पांडेय

प्रति सप्ताह **दिनमान** आपको दुनिया का दर्शन कराता है। यह घटनाओं के रहस्यों को अनावृत्त करके कल्पना से तथ्यों को पृथक करता है तथा अंतर्निहित सत्यों को इस प्रकार उद्घाटित करता है ताकि आपको अपने देश में तथा बाहरी दुनिया में क्या हो रहा है, इसकी सही जानकारी हो सके।

दिनमान – हिन्दी का एकमात्र समाचार-साप्ताहिक है, जो नपी-तुली शैली में उन सब समाचारों को ब्यौरे सहित प्रस्तुत करता है, जिन्हें जानने-समझने के लिए आप इच्छुक हैं।

दिनमान – दुनिया की राजनीति, व्यवसाय, उद्योग, संस्कृति संबंधी गतिविधियों के साथ आपका सम्पर्क स्थापित करता है।

दिनमान

राष्ट्र की भाषा में राष्ट्र का आह्वान

मूल्य : ५० पैसे

टाइम्स आफ इंडिया प्रकाशन

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-५३

बच्चो, नीचेका चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० सितंबर तक भेज दो। हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्रकी पृष्ठभूमिको तुम अपनी कल्पनासे और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करनेकी तुम्हें स्वतंत्रता है। सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियोंको एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमेंसे दोके चित्रोंको छापा भी जाएगा। लेकिन रंग भरने वालोंकी उम्र १६ सालसे अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोगमें लाने चाहिएं। चित्रके नीचेवाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है। पुर्तियां भेजनेका पता : **संपादक 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५३), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१।**

यहां से काटो

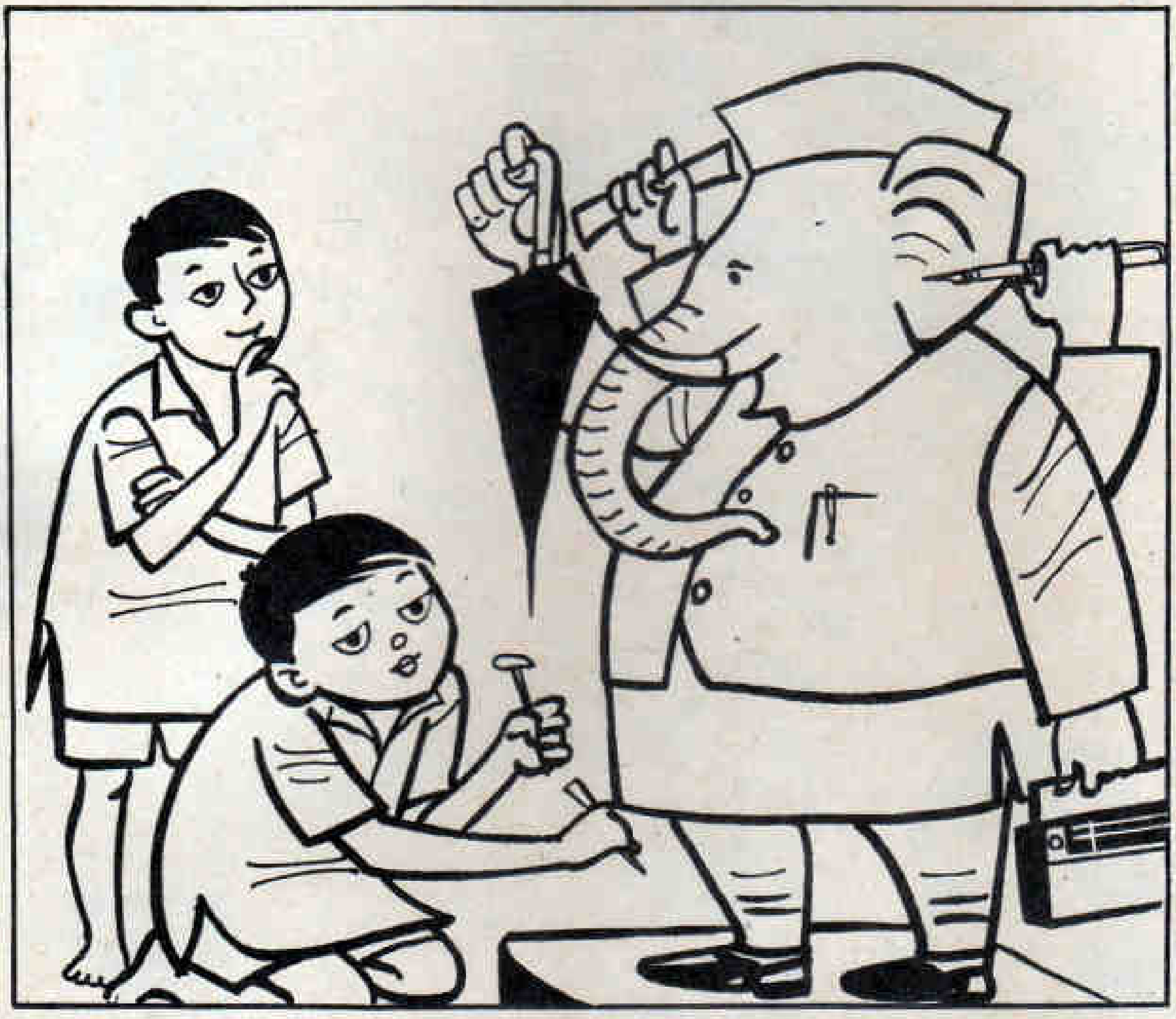

यहां से काटो

कूपन

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-५३

नाम और उम्र ----------

पूरा पता ----------

यहां से काटो

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627395
mshahid.shahid786@gmail.com

graphisads

अच्छी लिखाई के लिए अच्छी निब

वैन्डर®

अपने पैन में आज ही वैन्डर निब लगाइये और अन्तर देखिए। यह चिकनी, खरोंच रहित और सरल प्रवाह युक्त लिखाई के लिये सर्वोत्तम है। क्योंकि यह ओसमियम टिप्ड, मजबूत, टिकाऊ तथा चिरकाल तक उत्तम लेखन के कारण श्रेष्ठ है।

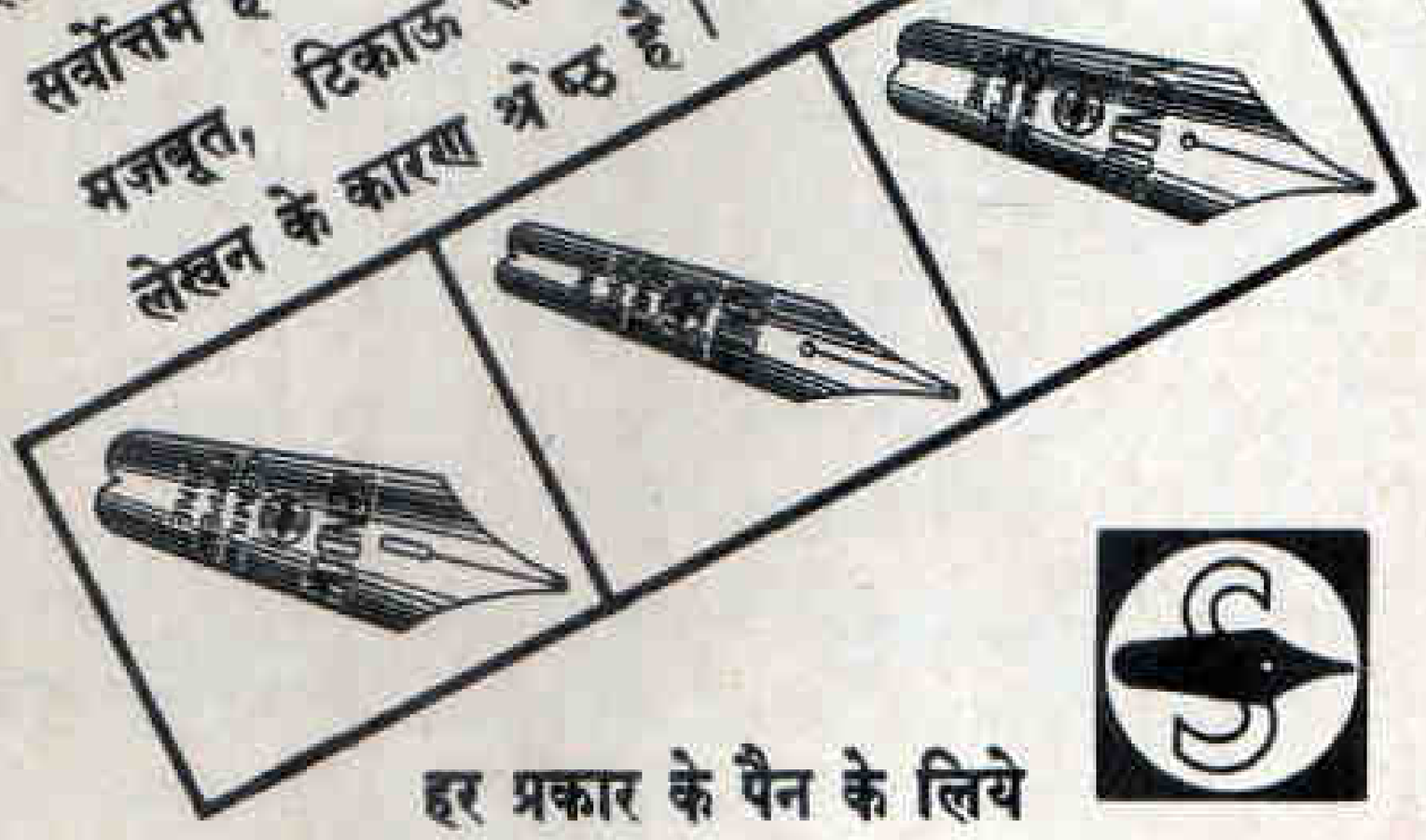

हर प्रकार के पैन के लिये

सब स्टोरों पर उपलब्ध

निर्माता

सुरेन्द्रा प्राडक्ट्स कं०

27/17 ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली

रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५० का परिणाम

'पराग' की रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५० में जिन तीन चित्रोंको पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमेंसे दोको यहां प्रकाशित किया जा रहा है। पुरस्कार विजेताओंके नाम और पते इस प्रकार हैं :

● अलका लक्ष्मण पेडणेकर, ५८ ए, निर्मल निवास, आई माई मेरवानजी स्ट्रीट, परेल, बंबई।

● दिनेशकुमारसिंह, पिस्तोल बिड़ी कारखाना, तलैया मुहल्ला, गुना (म.प्र.)।

● सपना दास, द्वारा पी. सी. दास., एच. ए. जी. सेक्शन, होशंगाबाद सर्किल, पी. डब्ल्यू. डी., होशंगाबाद (म. प्र.)।

इस बार पुरस्कार पाने वालोंमें प्रथम चित्र है अलका लक्ष्मण पेडणेकरका। शेल्फ बनाकर उसमें कपड़े-के थान आदि दिखाकर प्रतियोगीने कल्पनाका अच्छा परिचय दिया है। फर्श आदिके रंग यदि कुछ कम चटकीले होते, तो चित्र और भी सुंदर हो जाता।

दूसरा चित्र है दिनेशकुमारसिंहका। इस चित्रमें रंगोंका मिश्रण सादगी लिये हुए होनेपर भी सुंदर है, किंतु चित्रमें कल्पनासे थोड़ा और काम लिया जाता, तो वातावरणमें ज्यादा निखार आ जाता।

प्रयास करने वाले दूसरे बच्चोंमें इन लोगोंके प्रयास प्रशंसनीय रहे : इन्दु मलिक, नई दिल्ली; पंकज गोस्वामी, बीकानेर; दीपक धवन, देहरादून; जयश्री महान्ति; पुरी; राजेशकुमार, नई दिल्ली; राकेशकुमार मिश्रा, आगरा; प्रवीन शिवड़ो, कानपुर; सुधा दुबे, इलाहाबाद; शशिप्रभा चतुर्वेदी, इलाहाबाद; सुरेशकुमार शर्मा, अहमदाबाद; कंवलजीतसिंह, बरेली; जयपाल अमन, बंबई; ज्योति चौधरी, नई दिल्ली; डी. नारायण, गुलबर्गा; हुकुमचन्द गोयल, उज्जैन; सुमनकुमारी साहू, कानपुर; रंजना जोशी, अल्मोड़ा; चांद भाटिया, नई दिल्ली; हेतरामसिंह, मुरादाबाद और सुशीलकुमार गोस्वामी, बीकानेर। ●

धर्मयुग हिन्दी का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक

www.kissekahani.com

विज्ञापन संबंधी अधि-शुल्क

अवमूल्यनके कारण भारतमें समाचारपत्रोंकी आर्थिक स्थिति भयंकर रूप से प्रभावित हुई है क्योंकि अखबारी कागज का स्वदेशी उत्पादन बहुत कम है एवं अपने अखबारी कागज की आवश्यकता की पूर्ति हेतु विशाल परिमाण में उसका आयात करना पड़ता है। समाचारपत्रों को फ्लांगों, फोटोग्राफी संबंधी सामग्री एवं अन्य विशिष्ट वस्तुओं का भी, जिनका निर्माण भारतमें नहीं किया जाता, आयात करना पड़ता है।

इण्डियन एण्ड ईस्टर्न न्यूज़ पेपर सोसाइटी ने हाल की बैठक में अखबारों की समस्या पर विचार किया एवं यह अनुभव किया कि देश के अखबारों पर पड़ने वाले आर्थिक बोझ का आंशिक रूप से निवारण करने के लिए विज्ञापन पर अधिशुल्क (सरचार्ज) लिया जाय। सभी सदस्यों को सूचित किया गया है कि १ अगस्त १९६६ से हर प्रकारके विज्ञापन पर दस प्रतिशत का अधिशुल्क लगाया जाय।

इसके परिणामस्वरूप १ अगस्त १९६६ से तथा उसके बाद पराग में छपने वाले हर प्रकार के विज्ञापन पर दस प्रतिशत अधिशुल्क (सरचार्ज) लगाया जायगा।

बेनेट कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए प्यारेलाल साह द्वारा टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रेस बम्बई में मुद्रित और प्रकाशित तथा आनंदप्रकाश जैन द्वारा संपादित; पो. आ. बाक्स २०७, दिल्ली ऑफिस ७, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली–१; कलकत्ता ऑफिस : १३ / १ और १३ / २, गवर्नमेण्ट प्लेस ईस्ट

बिनाका टाल्क फिर से मिल रहा है

नई मनमोहक सुगन्ध वाला, त्वचा को कोमल व ताज़ा रखने वाला, रेशम जैसा अत्यंत महीन और मुलायम जिसकी भीनी भीनी सुगन्ध सदा एक मधुर स्मृति की तरह साथ रहती है।

CIBA